हिन्दी भाषा का इतिहास और व्याकरण

B21HD06DC

Discipline Core Course
Undergraduate Programme
Hindi Language and Literature

Self Learning Material

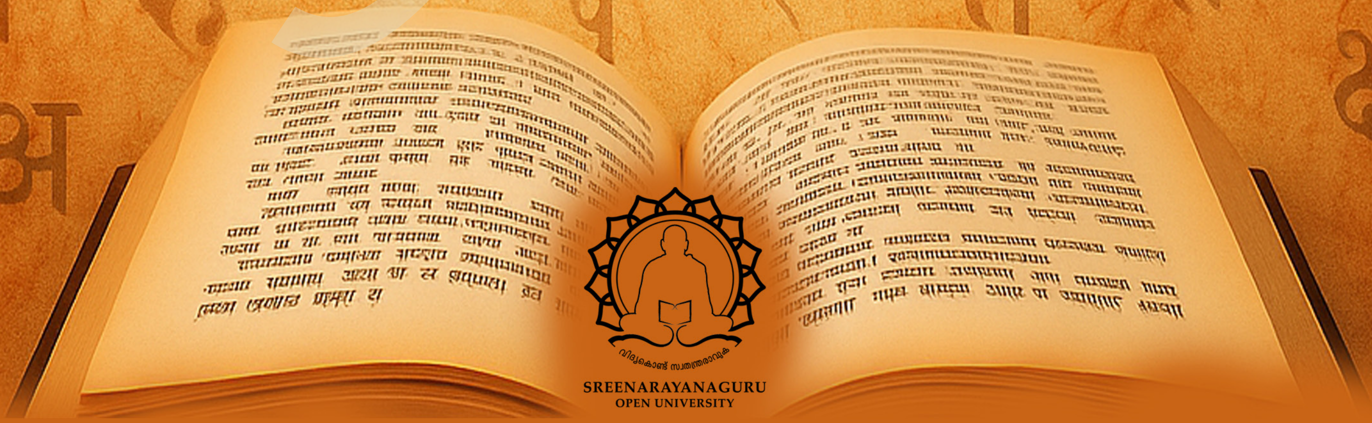

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

The State University for Education, Training and Research in Blended Format, Kerala

Vision

To increase access of potential learners of all categories to higher education, research and training, and ensure equity through delivery of high quality processes and outcomes fostering inclusive educational empowerment for social advancement.

Mission

To be benchmarked as a model for conservation and dissemination of knowledge and skill on blended and virtual mode in education, training and research for normal, continuing, and adult learners.

Pathway

Access and Quality define Equity.

SGOU

हिन्दी भाषा का इतिहास और व्याकरण

Course Code: B21HD06DC

Semester-VI

Discipline Core Course
BA Hindi Language and Literature
Self Learning Material
(With Model Question Paper Sets)

SREENARAYANAGURU
OPEN UNIVERSITY

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

The State University for Education, Training and Research in Blended Format, Kerala

SGOU

हिन्दी भाषा का इतिहास और व्याकरण

Course Code: B21HD06DC
Semester- VI
Discipline Core Course
BA Hindi Language and Literature

SREENARAYANAGURU
OPEN UNIVERSITY

Academic Committee

Dr. Jayachandran R.
Dr. Pramod Kovvaprath
Dr. P.G. Sasikala
Dr. Jayakrishnan J.
Dr. R. Sethunath
Dr. Vijayakumar B.
Dr. B. Ashok

Development of Content

Dr. Divya S., Dr. Sreechithra V.S.,
Dr. Sasikala A.V.

Review and Edit

Dr. Suma S., Dr. N. Shaji

Linguistics

Dr. Suma S.

Scrutiny

Christina Sherin Rose K.J.
Dr. Sudha T.
Krishna Preethy A.R.
Dr. Indu G. Das

Design Control

Azeem Babu T.A.

Cover Design

Lisha S.

Co-ordination

Director, MDDC :
Dr. I.G. Shibi
Asst. Director, MDDC :
Dr. Sajeevkumar G.
Coordinator, Development:
Dr. Anfal M.
Coordinator, Distribution:
Dr. Sanitha K.K.

Scan this QR Code for reading the SLM on a digital device.

Edition:
January 2025

Copyright:
© Sreenarayanaguru Open

ISBN 978-81-986822-1-5

9 788198 682215

All rights reserved. No part of this work may be reproduced in any form, by mimeograph or any other means, without permission in writing from Sreenarayanaguru Open University. Printed and published on behalf of Sreenarayanaguru Open University by Registrar, SGOU, Kollam.

www.sgou.ac.m

Visit and Subscribe our Social Media Platforms

MESSAGE FROM VICE CHANCELLOR

Dear learner,

I extend my heartfelt greetings and profound enthusiasm as I warmly welcome you to Sreenarayanaguru Open University. Established in September 2020 as a state-led endeavour to promote higher education through open and distance learning modes, our institution was shaped by the guiding principle that access and quality are the cornerstones of equity. We have firmly resolved to uphold the highest standards of education, setting the benchmark and charting the course.

The courses offered by the Sreenarayanaguru Open University aim to strike a quality balance, ensuring students are equipped for both personal growth and professional excellence. The University embraces the widely acclaimed "blended format," a practical framework that harmoniously integrates Self-Learning Materials, Classroom Counseling, and Virtual modes, fostering a dynamic and enriching experience for both learners and instructors.

The university aims to offer you an engaging and thought-provoking educational journey. Major universities across the country typically employ a format that serves as the foundation for the UG programme in Hindi Language and Literature. Given Hindi's status as a widely spoken language throughout India, its pedagogy necessitates a particular focus on language skills and comprehension. To address this, the University has implemented an integrated curriculum that bridges linguistic and literary elements. The learner's priorities determine the endorsed proportion of these elements. Both the Self Learning Materials and virtual modules are designed to fulfil these requirements.

Rest assured, the university's student support services will be at your disposal throughout your academic journey, readily available to address any concerns or grievances you may encounter. We encourage you to reach out to us freely regarding any matter about your academic programme. It is our sincere wish that you achieve the utmost success.

Regards,
Dr. Jagathy Raj V. P.

01-06-2025

Contents

BLOCK 01 संसार की भाषा, उसका वर्गीकरण एवं विकास... 1

इकाई 1: हिन्दी भाषा का इतिहास... 2

इकाई 2: संसार के विभिन्न भाषा परिवार.. 10

इकाई 3: आधुनिक हिन्दी का विकास.. 23

BLOCK 02 हिन्दी भाषा का उद्‌भव एवं उसके विभिन्न रूप.. 29

इकाई 1: हिन्दी शब्द की व्युत्पत्ति.. 30

इकाई 2: हिन्दी भाषा के विविध रूप एवं बोलियाँ.. 36

इकाई 3: आधुनिक हिन्दी भाषा के प्रकार एवं प्रयुक्तियाँ.. 44

BLOCK 03 हिन्दी व्याकरण, वर्ण, ध्वनि एवं उसके प्रकार.. 52

इकाई 1: भाषा और व्याकरण.. 53

इकाई 2: वर्ण, ध्वनि और अक्षर.. 60

इकाई 3: स्वर और व्यंजन एवं उसके प्रकार... 64

BLOCK 04 सन्धि और समास एवं उसके प्रकार.. 71

इकाई 1: भाषा और व्याकरण.. 72

इकाई 2: सन्धि एवं उसके प्रकार... 75

इकाई 3: समास एवं उसके प्रकार.. 80

BLOCK 05 विकारी शब्द और प्रयोग... 84

इकाई 1: विकारी शब्द, संज्ञा एवं उसके प्रकार.. 85

इकाई 2: कारक, लिंग और वचन.. 89

इकाई 3: सर्वनाम और विशेषण एवं उसके प्रकार... 95

इकाई 4: क्रिया एवं उसके प्रकार... 100

इकाई 5: काल एवं उसके विभिन्न रूप, वाच्य एवं उसके प्रयोग.................................... 104

BLOCK 06 अविकारी शब्द और प्रयोग... 111

इकाई 1: अविकारी शब्द, क्रियाविशेषण एवं उसके प्रकार.. 112

इकाई 2: संबन्धबोधक, समुच्चयबोधक, विस्मयादि बोधक... 116

Model Question Paper Sets.. 120

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

BLOCK 01

संसार की भाषा, उसका वर्गीकरण एवं विकास

SOU

इकाई 1

हिन्दी भाषा का इतिहास

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- हिन्दी भाषा की उत्पत्ति से परिचय प्राप्त करता है
- हिन्दी भाषा के विकास के बारे में जानता है
- हिन्दी के विभिन्न रूपों से परिचय प्राप्त करता है
- हिन्दी की उपभाषाएँ समझता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

हिन्दी शब्द का प्रयोग प्राचीन काल से भारत में हो रहा है। हिन्दी का संबंध कुछ लोग हिन्दू से जोडना चाहते है। पर यह धारणा, न्याय संगत नहीं है। हिंद शब्द का अर्थ है भारत। हिंद तथा हिन्दी इन दोनों शब्दों का प्रयोग सर्वप्रथम पारसियों की धर्म पुस्तक दसातीर में हुआ। बादशाह अपने काल के शिलालेखों में भारतवर्ष का नाम हिंद ही रखा है। हिंद शब्द का संबंध संस्कृत भाषा के सिन्धू शब्द से जोडा जाता है। विद्वानों का मानना है कि सिन्धू शब्द इरान में जाकर हिन्दू हो गया। भाषा वैज्ञानिक इस तथ्य को, स्वीकार करते हैं, कि ईरानी भाषा फारसी में 'स' के स्थान पर 'ह' हो जाता है। अतः सिन्धु का हिन्दु हो जाना स्वाभाविक है। सिन्धु सिन्ध नदी को कहते थे और उसी के आधार पर उसके आस-पास की भूमि को सिन्धु कहा जाने लगा। जब यह शब्द इरान पहुँचा तो वहाँ हिन्दु बन गया और उसका अर्थ हो गया हिन्द प्रदेश अर्थात् सिन्धू के आसपास का प्रदेश। अतः हिन्दु से हिन्द शब्द निर्मित हो गया। 'ईक' ईरानी का विशेषणार्थक प्रत्यय है। जब इस प्रत्यय को हिन्दू से जोड दिया गया तब एक नया शब्द हिन्दीक बना। आगे चलकर अंत्य अक्षर 'क' लुप्त हो गया। इसलिए 'क' का लोप होकर हिन्दी शब्द की निष्पत्ति हुई।

Keywords / मुख्य बिन्दु

मूल शब्दः हिन्दी, वैदिक संस्कृत, लौकिक संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश

Discussion / चर्चा

1.1.1 हिन्दी भाषा का विकास

हिन्दी भाषा के क्रमिक विकास को तीन भागों में बाँट सकते हैं। आदिकाल, मध्यकाल और आधुनिक काल। प्रवृत्ति के आधार पर आदिकाल को संक्राति काल या संधिकाल कहा जा सकता है। इस काल में भाषा प्राचीन रूप से नवीन रूप में संक्रमण कर रही थी। यह काल हिन्दी का शैशव काल है। राहुल सांकृत्यायन की राय में नाथपंथी और वज्रायनी सिद्धों

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

की भाषा ने हिन्दी के विकास में अपूर्व योग दिया है। डॉ. धीरेन्द्र वर्मा ने इस काल की सामग्री को चार भागों में विभाजित किया है जैसे-

(क) शिलालेख, ताम्रपत्र तथा प्राचीन पत्र आदि

(ख) अपभ्रंश काव्य

(ग) चारण काव्य, जिसका आरंभ गंगा की घाटी में हुआ था। राजनीतिक उथल-पुथल के कारण बाद में जो प्रायः राजस्थान में लिखे गये ।

(घ) हिन्दवी अथवा खडीबोली में लिखा साहित्य

विदेशी शासन होने के कारण इस काल में हिन्दी जैसी भाषा में शिलालेख, और ताम्रपत्र नहीं के बराबर लिखे गये। ऐसे कार्यों के लिए संस्कृत, प्राकृत या अपभ्रंश भाषाओं को ही उपयुक्त समझा जाता था। अपभ्रंश काव्यों में प्राचीन हिन्दी के नमूने मिलते हैं। इनमें तत्कालीन, जनभाषा का रूप अधिक स्पष्टता से सामने आता है। गोरखनाथ की रचनाओं की भाषा तो हिन्दी के अत्यधिक निकट है। उनकी रचनाओं के विभिन्न प्रकार के शब्दों और व्याकरणिक प्रयोगों से पता चलता है कि उनकी भाषा शौरसेनी से निकली पश्चिमी हिन्दी (व्रज और खडीबोली) का प्राचीन रूप है। हिन्दवी अथवा पुरानी खडीबोली आदिकाल की प्रमुख भाषा है। अमीर खुसरो इस काल के प्रमुख लेखक हैं। उनकी रचनाओं में उस काल की भाषा का कुछ रूप देखने को अवश्य मिल सकता है। उन्होंने गज़लें, पहेलियाँ और मुकरियाँ आदि लिखी हैं। इनमें खडीबोली का प्राचीन रूप मिलता है। इस समय दो भाषा रूप और थे जो पिंगल और डिंगल नाम से प्रसिद्ध, हुए। आचार्य रामचन्द्रशुक्ल की राय में प्रादेशिक बोलियों के साथ-साथ व्रज या मध्यदेश की भाषा का आश्रय लेकर एक सामान्य साहित्यिक भाषा भी स्वीकृत हो चुकी थी जो चारणों में पिंगल भाषा के नाम से पुकारी जाती थी। अपभ्रंश के योग से शुद्ध राजस्थानी भाषा का जो साहित्यिक रूप था वह डिंगल कहलाता था। विद्यापति ने अपनी पदावली मैथिली में लिखी वह हिन्दी की ही एक उपभाषा है।

हिन्दी का आदिकाल संघर्षों का काल था। भाषा के विकास के लिए कोई समुचित माध्यम न मिला था। किन्तु मध्यकाल तक आते-आते हिन्दी का रूप निखर आया। उसकी प्रमुख बोलियों में व्रज और अवधी अपने पैरों पर खड़ी हो गई। साहित्य की दृष्टि से इसकाल को हिन्दी का स्वर्ण युग माना गया है। इस काल में अवधी में महाकवि जायसी ने पद्मावत, तुलसीदास जी ने रामचरितमानस, कुतुबन ने मृगावती, नूर मुहम्मद ने इन्द्रावती और मंझन ने मधुमालती जैसे महाकाव्यों और काव्यों की रचना की। अवधी का यह उत्कर्ष का काल था। खडीवोली में भी साहित्य रचना हो रही थी। पर उसकी गति अवधी जैसी भी न थी। 16 वीं शताब्दी तक आते-आते ब्राजभाषा साहित्यिक भाषा रही। ब्रजभाषा में जहाँ एक ओर धार्मिक और भक्ति काव्य की रचना हुई वहीं दूसरी ओर श्रृंगार रस की धारा भी बहाई गई। महाकावि सूरदास ने अपने रस निर्भर पदों से कुछ ऐसा जादू किया कि भक्त गणों ने ब्रजभाषा को ही अपना लिया। जिस प्रकार तुलसी ने अवधी का परिष्कार एवं परिमार्जन कर उसे एक उच्च साहित्य भाषा की प्रतिष्ठा दिलाई उसी प्रकार सूर ने ब्रजभाषा का संस्कार कर उसे उच्च साहित्य की भाषा बना दिया। इस काल में हिन्दी का शब्द-भंडार बहुत बढ़ा। धार्मिक साहित्य की रचना के कारण संस्कृत के तत्सम शब्दों को बहुत बड़ी संख्या में अपनाया गया दरबारी प्रभाव और फारसी के पठन-पाठन के कारण अरबी-फारसी के शब्द भी हिन्दी में आ गये।

भाषाविदों के अनुसार हिन्दी का आधुनिक काल अंग्रेजी शासन की स्थापना से प्रारंभ होता है। अंग्रेजी शासन के कारण मुसलमान भी अब साधारण समाज के अंग बन गये थे। अरबी-फारसी उनके धार्मिक क्षेत्र की भाषाएँ रह गयी थीं। व्यवहार व खडीबोली का ही प्रयोग करते थे। बीसवीं सदी के प्रारंभ से तो खड़ीबोली में उच्च-स्तर का साहित्य बनने लगा, फोर्ट विलियम कॉलेज के भाषा पंडित लल्लूलाल और सदल मिश्र ने प्रेमसागर और नासिकेतोपाख्यान लिखकर खडीवोली का आदर्श प्रतिष्ठित किया। इस प्रकार

इस काल में हिन्दी भाषा पूर्ण, विकसित हो गई। हिन्दी अपनी-अपनी बोलियों, प्रान्तीय भाषाओं, तथा संस्कृत, अरबी, फारसी, डच, फ्रेंच आदि भाषाओं से नये-नये शब्द ग्रहण कर संपन्न बनती चली जा रही है।

1.1.2 हिन्दी के विभिन्न रूप / नाम

हिन्दी भाषा को अपनी यात्रा में अनेक रूप या नाम धारण करने पडे हैं। उसका कारण यह है कि प्रत्येक युग अपनी विशेषताओं के कारण उसे नया रूप देता रहा है और उस रूप के कारण उसे नए नाम मिलते रहे।

1.1.2.1 हिन्दी, उर्दू, हिन्दुस्तानी

हिन्दी शब्द का भाषा के अर्थ में प्रयोग सबसे पहले फारस में ही हुआ था। छठी शताब्दी ई. पू. के पहले, ही इरान में भारत की भाषाओं को 'जबान-ए-हिन्दी' कहा जाता था। हिन्दी भाषा के लिए हिन्दी शब्द का प्रयोग पहले पहल अमीर खुसरो ने ही किया था। लेकिन यह सत्य नहीं है। अमीर खुसरो ने 'भारत के रहनेवाले' अथवा 'भारतीय मुसलमान' के अर्थ में ही हिन्दी शब्द का प्रयोग किया था। उनके अनुसार मध्यदेश की शौरसेनी से संबन्ध कोई भाषा ही हिन्दवी है। भाषा के व्याकरणिक रूप को उसी रूप में अपनाकर उसमें संस्कृत के तत्सम-तद्‌भव शब्दों के स्थान पर फारसी और तुर्की शब्द भर लिए। यही भाषा सबसे पहले 'हिन्दी' नाम से अभिहित हुई।

मुगल शासन काल में दिल्ली के आसपास शाही फौजी पड़ावों में रहनेवाले फौजियों और आसपास की जनता के बीच विचार विनिमय के लिए माध्यम के रूप में एक भाषा का विकास हुआ था, जिसे 'उर्दू-ए-मोअल्ला' कहते थे। यहाँ उर्दू शब्द भाषा अर्थ देता है। इस भाषा में स्वाभाविक रूप से अरबी-फारसी-तुर्की के शब्द भरे रहते थे। इस आधार पर अरबी फारसी - तुकी शब्दों से भरी भाषा उर्दू कहलाने लगी।

हिन्दी और उर्दू का मूल ढाँचा एक ही रहा, तथापि अरबी-फारसी-तुर्की शब्दों की बहुतायताके कारण उर्दू की संरचना, हिन्दी की संरचना से थोडी-बहुत भिन्न होने लगी। बंगाल के फोर्ट विलियम कॉलेज के हिन्दी अध्यापक जाना गिलक्राइस्ट हिन्दी, उर्दू, हिन्दुस्तानी को एक ही भाषा के विविध नाम समझते थे। लेकिन कॉलेज के अन्य अध्यापक इस विचार से सहमत नहीं थे। गाँधीजी ने हिन्दू मुस्लिम एकता का संदेश देते हुए, भारतवर्ष के लिए हिन्दुस्तानी का समर्थन किया। उनके अनुसार हिन्दी संस्कृत-निष्ठ होती है और उर्दू, अरबी-फारसी, मिश्रिता संस्कृत और अरबी-फार्सी के सरल शब्दों को समान रूप से स्वीकृत करनेवाली एक भाषा ही भारतवर्ष के लिए उपयुक्त है, यही उनका मत था। हिन्दुओं और मुसलमानों की संस्कृति का समान रूप से प्रतिनिधित्व करनेवाली भाषा के रूप में हिन्दुस्तानी को प्रस्तुत किया।

1.1.2.2 रेखता या रेख्ती

रेख्ता हिन्दी की एक शैली है और, इसमें फारसी शब्दों का मिश्रण अधिक होता है। उर्दू के जन्म के पहले फारसी छन्दों में जो कविता लिखी जाती थी उस बोलचाल की भाषा को रेख्ता कहा जाता था। रेखता का अर्थ है 'मिश्रित'। अर्थात् देश की भाषा, हिन्दी में जब फारसी शब्दों का सम्मिश्रण हो गया उसे रेख्ता कहा गया। रेख्ता और रेख्ती में यह अंतर है कि रेख्ता पुरुषों की भाषा है और रेख्ती स्त्रियों की।

1.1.2.3 देहलवी

दिल्ली की भाषा को कुछ विद्वान देहलवी के नाम से संबोधित करते हैं। यहाँ का पढ़ा-लिखा मुसलमान उर्दू बोलता है तथा हिन्दी। वास्तव में यहाँ फर कश्मीरी, हरियाणवी तथा मारवाड़ी आदि भाषाएँ बोली जाती हैं।इन भाषाओं में मुहावरों एवं शब्द समूह के साथ व्याकरण में भी थोडा बहुत अन्तर मिलती है।

1.1.2.4 दक्खिनी हिन्दी

दक्खिनी शब्द का निर्माण दक्खिन अ ई प्रत्यय लगाकर हुआ है। 1336 ई. में मुहम्मद तुगलक ने दक्खिन में जाकर दौलताबाद नामक नगर बसाया। तब दिल्ली से बहुत से सैनिक और नौकर-चाकर भी दक्षिण गये। वे वहाँ अपने साधू दिल्ली की भाषा हिन्दी या हिन्दवी भी लेकर गये। इसी भाषा में वे

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

वहाँ पर अपने विचारों का आदान-प्रदान करते थे। जो हिन्दी वहाँ गयी उसमें अरबी और फारसी के शब्द भरे थे।मुसलमानों के दिल्ली लौटने पर यही दक्खिनी हिन्दी हिन्दी बनकर दिल्ली में वापस आ गई।

1.1.3. हिन्दी और उसकी बोलियाँ

आधुनिक आर्यभाषाओं के वर्गीकरण में हिन्दी की पाँच उपभाषाओं और अठारह बोलियों का उल्लेख मिलता है। ये उपभाषाएँ हैं - पश्चिमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी, बिहारी, राजस्थानी और पहाड़ी। बोलियों की दृष्टि से हिन्दी भाषा का विशेष महत्व है। इसकी बोलियों की संख्या भारत ही नहीं विश्व की सभी भाषाओं से अधिक है क्योंकि यह एक बृहत्तर क्षेत्र की भाषा है।

1.1.3.1 पश्चिमीः हिन्दी

पश्चिमी हिन्दी का विकास शौरसेनी अपभ्रंश माना जाता है। इसके अंतर्गत पाँच बोलियाँ आती हैं - खड़ीबोली (कौरवी), ब्रजभाषा, कन्नौजी, बुन्देली, बाँगरू (हरियाणी)

1. खडीबोली

दिल्ली-मेरठ के आसपास के जिलों में बोली जानेवाली खडीबोली, शताब्दियों पहले से ही भारत की व्यावहारिक भाषा रही है। इसे 'कौरवी' भी कहा जाता है। प्राचीन युग में इसका साहित्यिक महत्व बहुत कम रहा था। 1857 की स्वतंत्रता की पहली लड़ाई के साथ खडाबोली हिन्दी की प्रमुखता स्वीकार की गयी। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र आम व्यवहार की भाषा खडीबोली को गद्य में स्थान दिया खडीबोली से ही हिन्दी के मानक रूप का विकास हुआ है। इसमें स्तर लोप की प्रवृत्ति अधिक पायी जाती है जैसे पंडित > पंडत, अँगूठ > गूँठा।

2. ब्रजभाषा

नाम की दृष्टि से देखें तो ब्रजभाषा व्रज प्रदेश (मथुरा, वृन्दावन क्षेत्र) की भाषा है। पर व्यवहार की दृष्टि से यह उत्तर प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान व मध्यप्रदेश के क्षेत्रों में फैली हुई है। शौरसेनी प्राकृत की वास्तविक साहित्यिक प्रतिनिधि ब्रजभाषा है। पश्चिमी हिन्दी की बोलियों के अध्ययन के लिए ब्रजभाषा कुंजी का काम करती है। खडीबोली में जहाँ ए, ओ चाया जाता है वहाँ ब्रजभाषा में ऐ और औ पाया जाता है।

3. कन्नौजी

उत्तर प्रदेश के कन्नौज (कान्यकुब्ज) प्रदेश की भाषा है कन्नौजी। शौरसेनी के एक भेद पांचाली प्राकृत से कन्नौजी का विकास माना जाता है। फरुखाबाद, इटावा, कानपुर आदि, इस भाषा के क्षेत्र हैं। इस भाषा का ब्रजभाषा से काफी साम्य पाया जाता है। कन्नोजी में अल्प प्राणीकरण की प्रवृति बहुलता से मिलती है। जैसे

हाथ > हात, भूख > भूक। 'ण' व्यंजन का प्रयोग नहीं होता है।।

4. बुन्देली

बुन्देली को बुन्देलखण्डी भी कहा जाता है। यह बुन्देले राजपूतों का प्रदेश होने के कारण इस क्षेत्र को बुन्देलखण्ड और यहाँ की बोली को बुन्देलखण्डी कहते हैं। उत्तर प्रदेश के हमीरपुर, झांसी, मध्यप्रदेश के भोपाल, होशंगाबाद आदि बहुत विस्तृत प्रदेशों में यह भाषा बोली जाती है। अल्पप्राणत्व बुन्देली की उल्लेखनीय विशेषता है।

5. बाँगरु (हरियाणवी)

उतार-चढ़ाव वाले प्रदेश को बांगर कहते हैं। दिल्ली के उत्तर पश्चिम की ऊँची भूमि जो सतलज सिन्धु तथा गंगा जमुना के बीच में पड़ी है, बाँगरू भाषा का क्षेत्र है। हरियाणा, रोहतक करनाल, पटियाला में बोली जानेवाली यह भाषा 'हरियाणवी' भी कहलाती है। बाँगरु का विशेष साहित्य नहीं है।

1.1.3.2 पूर्वी हिन्दी

पूर्वी हिन्दी का विकास अर्धमागधी अपभ्रंश से हुआ है। पूर्वी उत्तर प्रदेश बघेलखण्ड और छतीसगढ़ के क्षेत्रों की भाषा पूर्वी हिन्दी है। इसके अंतर्गत अवधी,

बघेली और छत्तीसगढ़ी बोलियाँ आती हैं।

1. अवधी

अवध या अयोध्या प्रदेश की बोली अवधी है। आजकल अवधी भाषा का मुख्य केन्द्र लखनऊ है। फतेहपुर, इलाहाबाद, मिर्जापुर जिलों की यह भाषा साहित्यिकदृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। इसे पूर्वी, कोसली, बैसवाडी आदि नागों से भी जाना जाता है।

2. बघेली

बघेले राजपूत जाति के नाम पर इस भाषा का नाम बघेली पड़ा। इसका क्षेत्र आधुनिक मध्यप्रदेश के अंतर्गत आता है। मध्यप्रदेश के जबलपुर, रीवाँ, सतना में यह बोली जाती है। इसके अतिरिक्त इलाहाबाद के दक्षिणीप्रदेश, मिर्जापुर और मध्यप्रदेश में छोटा नागपुर और बिलासपुर की पश्चिमी सीमा तक बोली जाती है। इसका विशेष साहित्यिक महत्व नहीं है।

3. छत्तीसगढ़ी

जबलपुर से छोटा नागपुर तथा रीवाँ से बस्तर तक बोली जानेवाली यह भाषा बिलकुल बोलचाल की भाषा है। इसका क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत है तथा इसकी सीमाओं पर भोजपुरी, मगही, बहोली, मराठी, उडिया और तेलुगु बोली जाती है।

1.1.3.3 बिहारी

इसका विकास मागधी अपभ्रंश से हुआ है। इसकी तीन बोलियों हैं- मैथिली, मगही, भोजपुरी

1. मैथिली

गंगा नदी के उत्तरी भाग में दरभंगा राज्य मैथिली का केन्द्र रहा है। बिहार की तीन बोलियों में साहित्यिक महत्व रखनेवाली मैथिली है। बडे प्राचीन काल में विद्यापति ने मैथिली में पदावली की रचना की। अतः इस भाषा की थोडी साहित्यिक परंपरा है।

2. मगही

प्राचीन मगध की भाषा को मगही कहा जाता है। इसका विकास मागधी से हुआ है। प्राचीन मगध के अंतर्गत आधुनिक पटना, गया, मुंगेर और भागलपुर के कुछ भाग सम्मिलित हैं। इस पूरे क्षेत्र में मगही बोलो जाती है। मगही की उपबोलियाँ नहीं है। इस बोली का साहित्य भी नहीं मिलता है। केवल लोक साहित्य ही उपलब्ध होते है।

3. भोजपुरी

बिहार के शाहाबाद जिले का एक छोटा-सा कस्बा है। भोजपुरा पर यह बोली अपने मुख्य क्षेत्र से काफी दूर-दूर तक बोली जाती है। बनारस, मिजापुर, गाजीपुर, बलिया, गोरखपुर, बस्ती, आजमगढ़, चम्पारन तथा छोटा नागपुर में यह भाषा चलती है। प्रमुख साहित्यिक केन्द्र काशी में बोली जाने पर भी इसका कोई साहित्यिक महत्व नहीं है। भोजपुरी की चार-चार प्रमुख बोलियाँ हैं- उत्तरी भोजपुरी, दक्षिणी भोजपुरी, दक्षिणी भोजपुरी, पश्चिमी भोजपुरी तथा नागपुरिया। दक्षिण भोजपुरी ही मूल भोजपुर की बोली है।

1.1.3.4 राजस्थानी

राजस्थानी का विकास शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ है। यह हिन्दी की सबसे बडी उपभाषा है। इसकी, बोलियाँ संपूर्ण राजस्थान और मध्यप्रदेश में बोली जाती है। राजस्थानी की चार मुख्य बोलियाँ है- मारवाडी, मालवी, मेवाती, जयपुरी।

1. मारवाडी

राजस्थानी की चार बोलियों में साहित्यिक महत्व रखनेवाली एकमात्र, मारवाड़ी ही है। इसे पश्चिमी राजस्थानी कह सकते हैं। जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर तथा उदयपुर में बोली जाती है। साहित्यिक दृष्टि से मारवाडी का प्रचलन आधुनिक काल में बहुत अधिक नहीं मिलता। हिन्दी के आदिकाल में राजस्थानी का प्राचीन रूप प्रयुक्त होता रहा है। उस समय प्राचीन, राजस्थानी को डिंगल कहा जाता था। वीर भूमि होने के कारण मारवाड़ी में वीररसात्मक (पृथ्वीराज रासो) रचनाएँ मिलती हैं । मारवाडी का अपना समृद्ध लोक साहित्य है।

2. मालवी

मालवी मालव अथवा मालवा की बोली है। वर्तमान उज्जैन के आसपास का क्षेत्र प्राचीन काल में मालवा कहा जाता था। सोलह महाजनपदों में मालव जनपद का उल्लेख मिलता है। मालवी का मानक साहित्य अधिक नहीं है। इसमें लोक साहित्य मिलता है।

3. मेवाती

मेवात का नाम मेवो जाति के कारण हुआ और मेवाती की बोली के कारण इसे, मेवाती कहा जाता है। इस बोली का क्षेत्र व्यापक है। अलवार, भरतपुर, गुड़गाव के दक्षिण पूर्व तक यह बोली प्रयुक्त होती है। मेवाती का मानक साहित्य नहीं मिलता। इसका कुछ लोक साहित्य ही मिलता है। इस पर हरियाणवी का प्रभाव है।

1.1.3.5 पहाड़ी हिन्दी

यह शैरसेनी अपभ्रंश की खस से विकसित हुई है। ग्रियर्सन ने पहाडी प्रदेश की भाषाओं को तीन वर्गों में विभाजित किया है- पश्चिमी पहाडी, मध्य पहाडी और पूर्वी पहाड़ी। पश्चिमी पहाडी शिमला के आसपास बोली जाती है और पूर्व पहाड़ी नेपाल में। मध्य पहाड़ी का ही पहाड़ी हिन्दी कहा जाता है। इसकी दो बोलियाँ हैं - कुमायूँनी और गढ़वाली।

1. कुमायूनी

कुमायू मध्य पहाडी क्षेत्र का प्रसिद्ध अंचल है। कुमायूँ की भाषा को कुमायूँनी कहा जाता है। प्राचीन ग्रन्थों में इस क्षेत्र के लिए कूर्मांचल नाम मिलता है। कूर्माचल का ही परवर्ती रूप कुमायूँ है। इसके अंतर्गत अलमोडा, नैनीताल जनपद आते हैं। कुमायूँनी इन्हीं जनपदों की भाषा है परन्तु इनकी उपबोलियों में पर्याप्त अन्तर है। विभिन्न भाषाओं के प्रभाव के कारण यहाँ की भाषा मिश्रित है और इस पर दरदी, राजस्थानी और खडीबोली के अतिरिक्त तिब्बती का भी प्रभाव है।

2. गढ़वाली

गढ़वाली उत्तराखण्ड की प्रमुख बोली है। भारतीय धार्मिक रचनाओं में इस क्षेत्र को देवभूमि कहा गया है। यह क्षेत्र राजनीतिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण रहा है। यहाँ पर सदैव बाह्य आक्रमण होते रहे हैं। गढ़वाल आधुनिक युग में एक जिला है परन्तु गढ़वाली उत्तराखण्ड की बोली है। यहाँ गढ़वाल, चमोली और उत्तरकाशी के जनपद सम्मिलित हैं।साहित्यिक दृष्टि से गढ़वाली का विशेष महत्व नहीं है।

1.1.4 हिन्दी के शब्द सामूह

भाषा मनुष्य-मनुष्य के बीच विचार - विनिमय का साधन है। किसी भी भाषा में प्रयुक्त शब्दों को उनके स्रोत की दृष्टि से भिन्न-भिन्न वर्गों में विभाजित किया जाता है। जहाँ तक हिन्दी का संबन्ध है, भारत की प्राचीन सांस्कृतिक भाषा संस्कृत, संस्कृत से विकसित अन्य आर्य भाषाएँ, दक्षिण भारत की आर्येतर भाषाएँ तथा विदेशी भावाएँ इन सबसे शब्दों का आदान-प्रदान हुआ है। संस्कृत के शब्दों को भारत की समस्त भाषाओं ने उसी रूप में अथवा थोडा सा अनुकूलन करके अपना लिया है। हिन्दी के शब्द समूह का पाँच प्रकार के वर्गीकरण है तत्सम शब्द, तद्भव शब्द, देशज शब्द, आर्येतर भाषाओं के शब्द, विदेशज शब्द।

1.1.4.1 तत्सम शब्द

हिन्दी शब्द समूह का मुख्य स्रोत संस्कृत है। संस्कृत के जो शब्द बिना किसी रूप परिवर्तन के अपना लिए गए हैं उन्हें तत्सम शब्द कहते हैं। जैसे माता, पिता, सूर्य, चन्द्र, पुस्तक, मति, गति

1.1.4.2 तद्भव शब्द

हिन्दी शब्द समूह में सबसे अधिक संख्या तद्भव शब्दों की है। संस्कृत के जो शब्द हिन्दी की प्रकृति के अनुसार अनुकूलन करके स्वीकृत हुए हैं उन्हें तद्भव शब्द कहते हैं।

जैसे- कृष्ण - कान्हा

क्षेत्र - खेत

अग्नि - आग

अक्षि - आँख

1.1.4.3 देशज शब्द

हिन्दी भाषी प्रदेश के अपने शब्द जिनका स्रोत और कहीं खोजा नहीं जा सकता उसे देशाज शब्द कहलाती हैं।जैसे नाव, लोटा, पेड़, गाड़ी।

1.1.4.4 आर्येतर भाषाओं के शब्द

भारत में जो आर्येतर भाषाएँ बोली जाती हैं उनसे भी कुछ शब्द हिन्दी में आ गए है। तमिल, तेलुगु, मलयालम, कन्नड आदि द्रविड भाषाओं तथा मुण्डा, कोल आदि आग्नेय परिवार की भाषाओं के शब्द हिन्दी में पाए जाते हैं। द्रविड शब्द - नीर, मीन, पिल्ला, चिल्लर । मुण्डा शब्द - कोड़ी।

1.1.4.5 विदेशज शब्द

विदेशी भाषाओं के संपर्क से हिन्दी में कई आगत शब्द प्रचलित हैं। जैसे

अंग्रेज़ी - डॉक्टर, टिकट, रसीद, चेक

फ्रेंच - अंग्रेज, कारतूस

पुर्तगाली - कप्तान, अलगारी, काजू

फारसी - आनाज, पेशा, मुर्दा

तुर्की - तोप, सौगात

अरबी - किस्सा, कीमत, मुसाफिर, मशहूर

हिन्दी का शब्द भंडार काफी विशाल और विस्तृत है। पारिभाषिक शब्दावली के संदर्भ में अंग्रेज़ी तथा अन्य विदेशी भाषाओं के शब्द सहज रूप से स्वीकृत हुए हैं।

Recap / पुनरावृत्ति

- हिन्दी भाषा के क्रमिक विकास को तीन भागों में बाँट सकते हैं आदिकाल, मध्यकाल और आधुनिककाल
- हिन्दी का आदिकाल संघर्षों का काल था।
- सोलहवीं शताब्दी तक आते-आते ब्रजभाषा साहित्यिक भाषा बन गयी।
- बीसवीं सदी के प्रारंभ से तो खडीबोली में उच्च-स्तर का साहित्य बनने लगा।
- हिन्दी भाषा का विविध रूप/नाम हैं। जैसे हिन्दी, उर्दू, हिन्दुस्तानी रेख्ता/रेख्ती, देहलवी, दक्खिनी हिन्दी।
- हिन्दी की उपभाषाएँ पश्चिमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी, बिहारी, राजस्थानी और पहाड़ी हैं।
- हिन्दी के शब्द समूह का पाँच प्रकार के वर्गीकरण - तत्सम शब्द, तद्‌भव शब्द, देशज शब्द, आर्येतर भाषाओं के शब्द, विदेशज शब्द

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. हिन्दी भाषा के क्रमिक विकास को कितने भागों में बाँट सकते हैं?
2. नाथपंथी और वज्रायनी सिद्धों की भाषा ने हिन्दी के विकास में अपूर्व योग दिया है,यह किसका कथन है?
3. खडीबोली में उच्च-स्तर का साहित्य कब बनने लगा?
4. सोलहवीं शताब्दी तक आते-आते कौन-सी भाषा साहित्यिक भाषा बन गयी?
5. हिन्दी के शब्द समूह के कितने प्रकार के वर्गीकरण है?
6. हिन्दी शब्द समूह का मुख्य स्रोत कौन-सा है?
7. संस्कृत के जो शब्द हिन्दी की प्रकृति के अनुसार अनुकूलन करके स्वीकृत हुए हैं उन्हें क्या कहते हैं?
8. उत्तराखण्ड की प्रमुख बोली कौन-सी है?

Answers / उत्तर

1. तीन
2. राहुल सांकृत्यायन की
3. बीसवीं सदी के प्रारंभ से
4. ब्रजभाषा
5. पाँच
6. संस्कृत
7. तद्भव शब्द
8. गढ़वाली

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. हिन्दी और उसकी बोलियों का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
2. हिन्दी के विभिन्न रूपों का परिचय दीजिए।
3. हिन्दी भाषा की उत्पत्ति के बारे में परिचय दीजिए ।

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. भाषा और लिपि - डॉ. एच परमेश्वरन
2. भाषा विज्ञान - डॉ. भोलानाथ तिवारी
3. भाषा विज्ञान, हिन्दी भाषा तथा देवनागरी लिपि - डॉ. शुभा बाजपेयी
4. साहित्यिक निबंध - डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त
5. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास - डॉ. बच्चन सिंह

इकाई 2 संसार के विभिन्न भाषा परिवार

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- संसार की भाषाओं के वर्गीकरण से परिचय प्राप्त करता है
- संसार की विभिन्न भाषा परिवार से परिचय प्राप्त करता है
- भारतीय आर्य भाषाओं के बारे में जानता है
- प्राचीन भारतीय आर्यभाषा काल से परिचय प्राप्त करता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

संसार, में अनेकानेक भाषाएँ तथा बोलियाँ हैं। संसार की भाषाओं का वर्गीकरण कई आधारों पर किया जा सकता है। जैसे महाद्वीप के आधार पर (एशियाई भाषाएँ, यूरोपीय भाषाएँ,अफ्रीकी भाषाएँ), देश के आधार पर (चीनी भाषाएँ, भारतीय भाषाएँ), धर्म के आधार पर (हिन्दू भाषाएँ, ईसाई भाषाएँ, मुसलमानी भाषाएँ), काल के आधार पर (प्रागैतिहासिक भाषाएँ, प्राचीन भाषाएँ, मध्ययुगीन भाषाएँ, आधुनिक भाषाएँ), भाषाओं की आकृति के आधार पर (अयोगात्मक भाषाएँ योगात्मक भाषाएँ), परिवार के आधार पर (भारोपीय परिवार की भाषाएँ, एकाक्षर परिवार की भाषाएँ, द्रविड़ परिवार की भाषाएँ), प्रभाव के आधार पर (संस्कृत प्रभावित भाषाएँ, अरबी-फारसी प्रभावित भाषाएँ)। इसमें आकृतिमूलक (भाषाओं की प्रकृति के आधार पर) एवं पारिवारिक (परिवार के आधार पर) वर्गीकरण ही सर्वप्रमुख हैं। आकृतिमूलक वर्गीकरण को रूपात्मक, व्याकरणिक, रचनात्मक वर्गीकरण भी कहा जाता है। उसी प्रकार पारिवारिक वर्गीकरण को देशात्मक, वंशानुक्रमिक, कुलात्मक या ऐतिहासिक वर्गीकरण भी कहते हैं।

Keywords / मुख्य बिन्दु

आकृतिमूलक वर्गीकरण, पारिवारिक वर्गीकरण

Discussion / चर्चा

1.2.1 आकृतिमूलक वर्गीकरण [Morphological Classification]

आकृतिमूलक वर्गीकरण का आधार संबन्ध तत्व है। संबंध तत्व के सहारे भाषा के शब्दों का जो मेल होता है उससे भाषा की जो आकृति बनती है वही इस वर्गीकरण का आधार है। आकृति या रूप की दृष्टि से संसार की भाषाओं को दो वर्गों में रखा जा सकता है। अयोगात्मक भाषाएँ और योगात्मक भाषाएँ।

1.2.1.1 अयोगात्मक भाषाएँ

संसार में कुछ भाषाएँ ऐसी होती हैं जिनमें संबन्ध

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

तत्व नामक कोई वस्तु नहीं होती। अर्थात् 'अयोग' शब्द से स्पष्ट है कि इस वर्ग की भाषाओं में योग नहीं रहता। शब्दों में उपसर्ग या प्रत्यय जोडकर अन्य शब्द या वाक्य में प्रयुक्त होने योग्य रूप नहीं बनाये जाते।

उदाहरणार्थ संस्कृत में 'राम' में, एण प्रत्यय जोड़कर 'रामेण' बनाया जाता है। हिन्दी 'मुझे दो' वाक्य में प्रयोग करने के लिए मैं के साथ प्रत्यय जोडकर मुझे बनाना पड़ता है। पर अयोगात्मक भाषाओं में इस प्रकार के योग की आवश्यकता नहीं पड़ती। उनमें किसी भी शब्द में कोई परिवर्तन नहीं होता। वाक्य में स्थान के अनुसार शब्दों का अर्थ लगा लिया जाता है। इसलिए इन भाषाओं को स्थान-प्रधान भाषाएँ भी कहते हैं। इसका सबसे उत्तम उदाहरण 'चीनी' भाषा है। हर शब्द वाक्य में प्रयुक्त स्थान के अनुसार कर्ता, कर्म, विशेषण क्रियाविशेषण या क्रिया बन जाता है। अतः शब्दों में किसी प्रकार का विकार होने की गुंजाइश नहीं होती।

तलेन - बडा आदमी (विशेषण)

लेन त - आदमी बडा है। (क्रिया)

नीत न्गो - तू मुझे मारता है। (क्रिया)

न्गो त नी - मैं तुझे मारता है। (क्रिया)

क्रिया में लिंग, वचन, पुरुष के आधार पर अन्तर नहीं होता। 'नी' और 'न्गों' अपने स्थान के के अनुसार वाक्य का कर्ता या कर्म बन जाते हैं, यह भी ध्यान देने की बात है। चीनी के अतिरिक्त अफ्रिका की सुडानी भाषाएँ, एशिया की मलय, बर्मी, स्थामी, तिब्बती आदि भाषाएँ भी अयोगात्मक भावाओं की श्रेणी में आती है।

1.2.1.2 योगात्मक भाषाएँ

अयोगात्मक भाषाओं में अर्थ तत्व तथा संबन्ध तत्व में योग नहीं होता। संबन्ध तत्व की आवश्यकता नहीं होती, केवल स्थान - क्रम से संबन्ध का पता चल जाता है। इसके विपरीत योगात्मक भाषाओं में संबन्ध तत्व और अर्थ तत्व दोनों में योग हो जाता है अर्थात् वे मिले-जुले रहते हैं। अर्थ तत्व प्रकृति और संबन्ध तत्व प्रत्यय प्रकृति और प्रत्यय के मेल अथवा योग से पदों की रचना हो तो ऐसी भाषाओं को योगात्मक भाषाएँ कह सकते हैं। संसार की अधिकांश भाषाएँ योगात्मक होती है। कुछ भाषाओं में योग होने पर भी अर्थ तत्व और संबन्ध तत्व को अलग-अलग पहचाना जा सकता है। लेकिन कुछ भाषाओं में उन्हें अलग पहचानना कठिन अथवा असंभव होता है। अर्थात् सभी भाषाओं में से दोनों तत्व एक ही प्रकार से मिलते नहीं है। इस योग या मिलन की प्रकृति के आधार पर योगात्मक भाषाओं के तीन वर्ग माने गये है - प्रश्लिष्ट योगात्मक भाषाएँ (समास प्रधान)श्लिष्ट योगात्मक भाषाएँ (विभक्ति प्रधान), अश्लिष्ट योगात्मक भाषाएँ (प्रत्यय प्रधान)

1.2.1.2.1 प्रश्लिष्ट योगात्मक भाषाएँ

इस वर्ग की भाषाओं में अर्थ तत्व एवं संबन्ध तत्व ऐसे घुल-मिल जाते हैं कि उन्हें अलग पहचानना मुश्किल हो जाता है। संस्कृत में ऋषि से आर्ष तथा ऋजु से आर्जव आदि शब्दों का विकास इस ढ़ग का है। प्रश्लिष्ट योगात्मक भाषाओं के भी दो भेद किये गये हैं। एक में योग पूर्ण रहता है और दूसरे में आंशिक या अपूर्ण।

1. **पूर्ण प्रश्लिष्ट-योगात्मक भाषाएँ**

इन भाषाओं में संबन्ध तत्व और अर्थ तत्व का योग इतना पूर्ण रहता है कि वाक्य लगभग एक ही, शब्द बन जाता है। इस प्रकार की भाषा की सबसे बड़ी विशेषता यह होती है कि वाक्य में पूरे शब्द नहीं आते, बल्कि उनका कुछ अंश छूट जाता है और इस प्रकार आधे-आधे शब्दों के संयोग से बना हुआ लंबा-सा शब्द ही वाक्य हो जाता है। ग्रीनलैंड तथा अमेरिका के मूल निवासियों की भाषाएँ इसी प्रकार की हैं। दक्षिणी अमेरिका की चेरोकी भाषा में अर्थ तत्व एवं संबन्ध तत्व का ऐसा योग होता है कि पूरा वाक्य ही एक लंबे शब्द के समान बन जाता है। उदा–

नातेन - लाओ

अमोखोल - नाव

निन - हम

'हमारे, पास नाव लाओं' कहने के लिए इन तीनों को मिलाकर 'नाधोलिनिन' कहा जाता है।

2. **आंशिक प्रश्लिष्ट-योगात्मक भाषाएँ**

इन भाषाओं में सर्वनाम तथा क्रियाओं का ऐसा सम्मिश्रण हो जाता है कि क्रिया अस्तित्वहीन होकर सर्वनाम की पूरक हो जाती है। पेरीनीज़ पर्वत के पश्चिमी भाग में बोली जानेवाली बास्क भाषा इसका उदाहरण है। जैसे-

नकारसु - तू मुझे ले जाता है।

हकारत - मैं तुझे ले जाता हूँ।

दकारकि ओत - मैं इसे उसके पास ले जाता हूँ।

1.2.1.2.2 अश्लिष्ट योगात्मक भाषाएँ

इस वर्ग की भाषाओं में प्रकृति और प्रत्यय ऐसे मिले रहते हैं कि रेखा खींचकर उनको अलग किया जा सकता है। प्रकृति और प्रत्यय की अलग पहचान बहुत ही आसान होती है। द्रविड भाषाएँ इस वर्ग के अंतर्गत हैं। उदा -

वेलक्कार - अन्

वेलक्कार अन् - र्मा

वेलक्कार - अन् र्मा- ओडु

प्रत्ययों के स्थान के आधार पर इस वर्ग की भाषाओं के कुछ उपवर्ग होते हैं। वे हैं-

1. **पूर्व योगात्मक या पुर प्रत्यय प्रधान भाषाएँ**

जिन भाषाओं में प्रत्यय शब्द से पूर्व लगते हैं ऐसी भाषाएँ पूर्व योगात्मक या पुर प्रत्यय प्रधान भाषाएँ हैं। अफ्रीका की बंटू भाषा इस वर्ग की है।

न्तु – आदमी, उमु-एक, अब - अनेक

न्ग – से, उमुन्तु - एक आदमी

अबन्तु - अनेक आदमी

न्ग उमुन्तु - आदमी से

न्ग अबन्तु - आदमियों से

2. **मध्य योगात्मक या मध्यप्रत्यय प्रधान भाषाएँ**

जिन भाषाओं में प्रत्यय शब्द के मध्य में लगता है उन्हें मध्य योगात्मक अथवा मध्यप्रत्यय प्रधान भाषाएँ कहते हैं। हिन्द महासागर के द्वीपों से लेकर अफ्रीका के समीप के मैडगास्कर द्वीपों तक फैली भाषाओं में यह विशेषता पायी जाती है। इन भाषाओं में प्रायः शब्द दो अक्षरों के बनते हैं और प्रत्यय इन दोनों अक्षरों के बीच में स्थान पाते हैं। मुंडा कुल की संथाली भाषा इसका उदाहरण है।

1. **मंझी - मुखिया**

'प' - बहुवचन का चिह्न

मपंझी - मुखिया लोग

2. **दल - मारना**

दपल -परस्पर मारना

(ग) अन्त योगात्मक या परप्रत्यय प्रधान भाषाएँ

जिन भाषाओं में प्रत्यय प्रकृति के अंत में लगते हैं उन्हें अंत योगात्मक अथवा परप्रत्यय प्रधान भाषाएँ कहते हैं। यूराल अल्टाइक तथा द्रविड परिवार की भाषाएँ इस वर्ग में आती हैं। कन्नड में -

सेवकनु - सेवक

सेवकरु - सेवक (बहुवचन)

सेवकरन्नु - सेवकों को

सेवकारिद - सेवकों से

सेवकरिगे - सेवकों के लिए

1.2.1.2.3 शिलष्ट योगात्मक भाषाएँ

प्रकृति और प्रत्यय के योग के कारण प्रकृति में थोडा विकार या परिवर्तन हो जाता है। पर इस विकार के बावजूद उन्हें अलग-अलग पहचानने में कोई कठिनाई नहीं होती। इस वर्ग की भाषाओं का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है संस्कृत भाषा। संज्ञाओं' के साथ, विशेषण रूप बनानेवाला 'इक' प्रत्यय लगने पर संज्ञा रूपों में होनेवाला विकार इसके उदाहरण हैं।

वेद - वैदिक

समाज - सामाजिक

भूगोल - भौगोलिक

शिलष्ट योगात्मक भाषाओं के दो उपवर्ग हैं- अन्तर्मुखी शिलष्ट, बाहमुखी शिलष्ट

(क) अन्तर्मुखी शिलष्ट

सेमेटिक और हेमेटिक परिवार की भाषाएँ प्रायः अन्तर्मुखी शिलष्ट वर्ग की होती है। अन्तर्मुखी शिलष्ट भाषाओं में सामान्य रूप से अर्थतत्व तीन व्यंजनों का होता है और संबन्ध तत्व स्वरों से बनता है। संबन्ध तत्व के स्वर अर्थ तत्व के व्यंजनों से घुल - मिल जाते हैं। अर्थात् संबन्ध तत्व के स्वर अर्थ तत्व के व्यंजनों के बीच में स्थान पकड लेते हैं।

अतः ऐसी भाषाओं में अर्थ तत्व और संबन्ध तत्व को रेखा खींचकर अलग नहीं किया जा सकता। अरबी भाषा इस वर्ग की भाषाओं का अच्छा उदाहरण है।

क् त् ब् - लिखना
किताब - जो लिखा गया हो (पुस्तक)

कुतुब - पुस्तकें

कातिब - लिखनेवाला, पढ़ा-लिखा

मकतब - पढ़ने-लिखने का स्थान, पाठशाला

(ख) बर्हिमुखी शिलष्ट

भारतीय आर्य भाषाओं में संबन्ध तत्व, अर्थ तत्व के बाद में जुड़ते हैं; प्रकृति पहले, प्रत्यय पीछे। ऐसा होने पर प्रकृति में थोडा रूपान्तर अवश्य होता है, पर उनको अलग पहचानने में, रेखांकित करके अलग दिखाने में कोई कठिनाई नहीं होती। ऐसी भाषाएँ बहिर्मुखी शिलष्ट भाषाएँ हैं।

उदा : भौतिक, ऐतिहासिक

बहिर्मुखी शिलष्ट भाषाओं में प्रकृति और प्रत्यय के योग के विषय में एक बात ध्यान देने की है। संस्कृत जैसी पुरानी भाषाओं में प्रकृति और प्रत्यय लगे-लगे रहते थे; उन दोनों की एक ही इकाई होती थी। जैसे – रामस्य, रमायाः, हरेः, भानोः (राम का, रमा का, हरीका, भानु का)। जिन भाषाओं में प्रकृति और प्रत्यय लगे - लगे रहते हैं उन्हें संयोगात्मक भाषाएँ कहते हैं।

भाषा का विकास कठिनता से सरलता की ओर है। भाषाओं के विकास क्रम में भाषा के अन्दर की संयुक्त इकाइयाँ वियुक्त होती गयी। परिणामस्वरूप संस्कृत से विकसित आधुनिक भाषाएँ वियोगात्मक हो गयीं। ये वियोगात्मक भाषाएँ कहलाती हैं। इस दृष्टि से हिन्दी शिलष्ट योगात्मक भाषाओं के अन्दर बहिर्मुखी वर्ग के वियोगात्मक उपवर्ग की भाषा है।

1.2.2 पारिवारिक वर्गीकरण

भाषाओं के पारिवारिक वर्गीकरण का अर्थ है विश्व की भाषाओं को परिवारों में बाँटना। अर्थ तत्व अथवा शब्द-समूह के आधार पर भाषाओं के बीच पारिवारिक संबन्ध स्थापित किया जाता है। शब्द समूह के रूप की समानता, अर्थ की समानता, व्याकरणिक गठन की समानता और ध्वनि की समानता के आधार पर ही यह पारिवारिक संबन्ध स्थिर किया जाता है। मानव समाज में पीढ़ी-दर-पीढ़ी पारिवारिक विकास जो होता जाता है उसी प्रकार एक मूल - भावा से भाषा - परिवार का भी विकास होता जाता है। निकटस्थ प्रदेशों में व्यवह्मत भाषाओं में शब्द - समूह की समानता पायी जाए तो उनके पारिवारिक संबन्ध की कल्पना की जाती है। ऐसी दो भाषाओं में व्याकरणिक, संरचना की समानता या ध्वनियों की समानता हो तो उनके बीच पारिवारिक संबन्ध स्थिर कर लिया जाता है। डॉ. भोलानाथ तिवारी ने अध्ययन की सुविधा को दृष्टि में रखकर संसार की भाषाओं को भौगोलिक आधार पर चार खंडों में और उन खंडों के अंतर्गत विभिन्न भाषा परिवारों में विभक्त किया है।

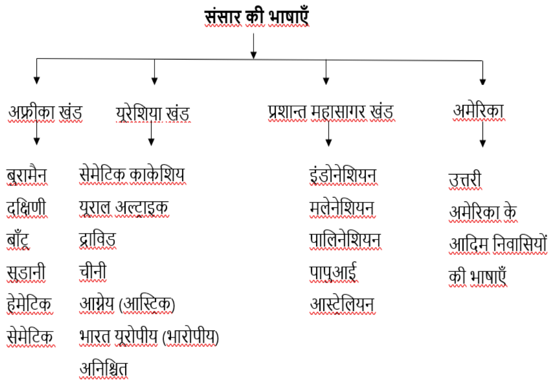

1.2.2.1 अफ्रीका खंड

अफ्रीका खंड के अंतर्गत मुख्य रूप से पाँच भाषा परिवार आते हैं- बुशमैन, बाँटू, सुडानी, हेमेटिक, सेमेटिक

1.2.2.1.1 बुशमैन परिवार

दक्षिण अफ्रीका के आरेंज नदी से नगामी झील तक के प्रदेशों में बुशमैन जाति के लोग बसे हुए हैं। इस प्रदेश की भाषाएँ अफ्रिका प्राचीन भाषाएँ हैं। इस परिवार की भाषा की मुख्य विशेषताएँ हैं-

(क) इस परिवार की भाषाओं में 'क्लिक' या अंत स्फोटात्मक ध्वनियाँ पायी जाती हैं। इन ध्वनियों का उच्चारण करते हुए वायु मुख विवर से बाहरनहीं निकलती, बाहर से अन्दर की ओर जाती है।

(ख) लिंग का निर्णय पुरुष- स्त्री के क्रम से नहीं, सजीव - निर्जीव के आधार पर होता है।

(ग) संज्ञाओं के बहुवचन बनाने के नियम बिलकुल अव्यवस्थित हैं।

1.2.2.1.2 बाँटू परिवार

इस परिवार की भाषाओं का क्षेत्र अफ्रीका, दक्षिणी अफ्रीका, तथा जंज़ीबार द्वीप है। 'बाँटू' शब्द का अर्थ आदमी है और इस परिवार की सभी भाषाओं में यह शब्द थोड़े-थोड़ेध्वनि परिवर्तन के साथ प्रयुक्त होता है। 'स्वाहिली' को छोड़कर अन्य किसी भाषा में विशेष साहित्य नहीं। इस परिवार की भाषा की मुख्य विशेषताएँ हैं-

(क) ये पुरप्रत्यय प्रधान भाषाएँ हैं, शब्दों के साथ उपसर्ग जोडकर नए शब्दों का निर्माण होता है।,

(ख) इन भाषाओं में स्वर-परिवर्तन से अर्थ परिवर्तन हो जाता है।

(ग) इन भाषाओं में लिंग-विचार नहीं होता।

1.2.2.1.3 सुडानी परिवार

अफ्रीका में भूमध्य-रेखा के उत्तरी भाग में इस परिवार की भाषाएँ बोली जाती हैं। कुछ भाषाएँ बाँटू परिवार से मिलती-जुलती है। इसकी विशेषताएँ हैं-

(क) ये चीनी के समान अयोगात्मक भाषाएँ हैं। इनका व्यवस्थित व्याकरण नहीं होता।

(ख) इन भाषाओं में सुर के परिवर्तन से अर्थ परिवर्तन हो जाता है।

1.2.2.1.4 हेमेटिक परिवार

उत्तरी अफ्रीका की भाषाएँ इस परिवार के अंतर्गत हैं। पौराणिक विश्वासों के अनुसार हज़रत नौह के दूसरे पुत्र हेम को आदि पुरुष माननेवाले लोगों की भाषा होने के कारण, इसका नाम 'हेमेटिक' पड़ा। इसकी विशेषता हैं -

(क) ये श्लिष्ट योगात्मक या विभक्ति प्रधान भाषाएँ हैं।

(ख) उपसर्गों और प्रत्ययों से पद रचना होती है।

(ग) स्वर परिवर्तन से अर्थ परिवर्तन हो जाता है।

(घ) वचन परिवर्तन में 'ध्रुवाभिमुख नियम'चलता है। अर्थात् किसी शब्द का वचन परिवर्तन करने पर इसका लिंग परिवर्तन भी हो जाता है।

1.2.2.1.5 सेमेटिक परिवार

अफ्रीका में मोराक्कों से लेकर स्वेज नगर तक के

प्रदेशों में ये भाषाएँ बोली जाती है। यथापि ये भाषाएँ अफ्रीका की हैं, फिर भी इनका बहुत अधिक प्रयोग एशिया में होता है। अतः इसकी चर्चा यूरेशिया खंड में होना उचित है।

1.2.2.2 यूरेशिया खंड

साहित्यिक दृष्टि से यूरेशिया खंड की भाषाओं का विशेष महत्व होता है। इन्हीं भाषाओं में बड़ी मात्रा में भाषा - वैज्ञानिक अध्ययन भी हुए हैं।

1.2.2.2.1 सेमेटिक परिवार

हज़रत नौह के बड़े पुत्र सेम दक्षिण पश्चिमी एशिया के निवासियों के आदि पुरुष माने जाते हैं। उन्हीं के नाम पर इस परिवार को समेटिक कहते हैं। इस परिवार की सबसे प्रमुख भाषा अरबी है, और उत्तरी अफ्रीका में अरबी का बड़ा अधिकार है। समेटिक और, हेमेटिक परिवार की भाषाओं में काफी समानतायें पायी जाती हैं।

(क) मूल शब्द (धातु) तीन व्यंजनों का होता है। बीच में स्वर लगाकर नए शब्द बना लिये जाते हैं। अन्तर्मुखी श्लिष्ट भाषाएँ हैं।

(ख) उपसर्गों का प्रयोग होता है, पर भारतीय भाषाओं से भिन्न तरीके से।

(ग) समासों में पदक्रम उल्टा होता है।

(घ) अरबी धर्म, दर्शन, ज्योतिष, साहित्य, रसायन आदि के क्षेत्रों में काफी आगे है। भारत और यूरोप की कई भाषाओं पर अरबी का बड़ा प्रभाव है।

1.2.2.2.2 काकेशियन परिवार

कृष्ण सागर और कास्पियन सागर के बीच काकेशस के पहाड़ी प्रदेशों में ये भाषाएँ, व्यवहृत होती हैं। ये आश्लिष्ट योगात्मक भाषाएँ हैं। इनमें उपसर्गों और प्रत्ययों का प्रचुर प्रयोग होता है। पहाड़ी प्रदेश की ये भाषाएँ काफी क्लिष्ट है। दक्षिणी वर्ग की जार्जियन की अपनी लिपि है।

1.2.2.2.3 यूरल अल्टाइक परिवार

यूरल और अल्टाई पर्वतों के बीच टर्की, हंगारी और फिनलैंड में इस परिवार की भाषाएँ व्यवह्रत होती हैं। क्षेत्र विस्तार की दृष्टि से भारत यूरोपीय (भारोपीय) परिवार के बाद इसका दूसरा स्थान है। फिनलैंड की फिनीश, हंगरी की मगियार तथा टर्की की तुर्की भाषा में प्रचुर प्राचीन साहित्य प्राप्त होता है। इसके अलावा इस परिवार की अन्य भाषाओं का कोई साहित्यिक महत्व नहीं है। तुर्की भाषा पर अरबी - फारसी का काफी प्रभाव पड़ा है। तुर्की की लिपि पहले अरबी थी, पर अब रोमन लिपि स्वीकार कर ली गयी है। इस परिवार की भाषाएँ अश्लिष्ट अन्त योगात्मक (पर प्रत्यय प्रधान) हैं।

1.2.2.2.4 द्रविड़ परिवार

इस परिवार की भाषाएँ दक्षिण भारत भर में फैली हुई हैं। लक्षद्वीप, उत्तरी लंका, बिलोचिस्थान और मध्य भारत के कुछ भाग में बोली जाती हैं। मोहनजो - दडो की खुदाइनों के बाद उस संस्कृति से द्रविड भाषाओं का संबन्ध स्थापित हुआ है। द्रविड परिवार की भाषाएँ चार वर्णों में विभाजित हैं।

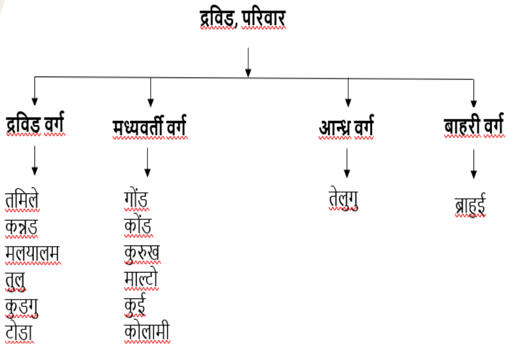

द्रविड परिवार की भाषाओं की विशेषताएँ हैं-

(क) द्रविड भाषाएँ अश्लिष्ट अन्त योगात्मक (परप्रत्यय प्रधान) है। मूल शब्द में कोई विकार लाए बिना एक के बाद एक प्रत्यय जुड़ते जाते

हैं।

(ख) सामान्य रूप से शब्द स्वरान्त होते हैं। व्यंजनांत शब्दों के उच्चारण में भी एक प्रकार का स्वर सुनाई देता है।

(ग) मूर्धन्य ध्वनियाँ (ट वर्ग) द्रविड़ परिवार की अपनी है। द्रविड़ प्रभाव से ही ये ध्वनियों आर्य भाषाओं में आयी हैं।

(घ) द्रविड़ भाषाओं में तीन लिंगों और दो वचनों की व्यवस्था है।

1.2.2.2.5 चीनी परिवार (एकाक्षर परिवार)

चीन, स्याम, तिब्बत और बर्मी में इस परिवार की भाषाएँ व्यवह्रत होती हैं। बोलनेवाले लोगों की संख्या की दृष्टि से भारत यूरोपीय परिवार के बाद इसका दूसरा स्थान है। चीनी परिवार में बहुत पुराना साहित्य उपलब्ध है। प्राचीन चीनी और आधुनिक चीनी में बहुत बडा अन्तर पाया नहीं जाता। चीनी की लिपि भाव ध्वनिमूलक अवस्था की है। चीनी परिवार की प्रमुख विशेषताएँ हैं -

(क) इसमें एक शब्द या एक भाव के लिए एक चिह्न होता है। अलग-अलग ध्वनि के लिए अलग-अलग चिह्न नहीं होता। एक भाव या अर्थ के लिए एक ही चिह्न या एक ही अक्षर होता है। इसलिए चीनी के शब्द उस भाषा के अपने होते हैं और यह परिवार एकाक्षर परिवार कहलाता है।

(ख) चीनी अयोगात्मक अथवा स्थान प्रधान भाषा है। इस स्थान प्रधानता के कारण चीनी का एक-एक शब्द कई भावों या विचारों का प्रतिनिधित्व करता है। शब्दों के अर्थ का निर्धारण करने में तान (tone) का काफी स्थान होता है।

(ग) चीनी भाषा का कोई व्याकरण नहीं होता। चीनी में अनुनासिक ध्वनियों की प्रधानता रहती है। ड और ञ का इतना अधिक प्रयोग विश्व की किसी भाषा में नहीं होता।

1.2.2.2.6 आग्नेय परिवार (आस्ट्रिक परिवार)

आग्नेय परिवार की भाषाएँ दो वर्गों में आती है-आग्नेय द्वीपी और आग्नेय देशी। इनमें आग्नेय द्वीपी भाषाएँ प्रशान्त महासागर खंड के अंतर्गत हैं। आग्नेय देशी भाषाएँ पूर्वी भारत, हिन्द-चीन (Indo Chine) स्याम और बर्मा के कुछ जंगली प्रदेशों में व्यवहृत हैं।

भारत में पश्चिमी बंगाल, बिहार उडीसा, मध्यप्रदेश और तमिलनाडु के जंगलों में आग्नेय देशी मुंडा भाषा विविध रूप प्रचलित हैं। कहा जाता है कि आर्यों और द्राविडों के पहले ही मुंडा वर्ग के लोग भारत में पहुँच गये थे। इस परिवार की प्रमुख विशेषतायें हैं-

(क) ये अश्लिष्ट योगात्मक भाषाएँ हैं। इनमें पूर्व, मध्य और अन्य तीनों प्रकार के प्रत्यय मिलते हैं।

(ख) कभी-कभी चीनी के समान एक ही शब्द स्थान के अनुसार संज्ञा, विशेषण या क्रिया बन जाता है।

(ग) संस्कृत के समान तीन वचनों की व्यवस्था है।

(घ) द्राविड परिवार के समान उत्तम पुरुष बहुवचन के दो रूप होते हैं - श्रोता सहित और श्रोता रहित।

1.2.2.2.7 भारत यूरोपीय परिवार (भारोपीय परिवार)

बोलनेवाले लोगों की संख्या तथा क्षेत्र विस्तार दोनों दृष्टियों से भारोपीय परिवार संसार का सबसे बड़ा भाषा परिवार है। इस परिवार की भाषाएँ सभ्यता और साहित्य के विकास की दृष्टि से बहुत आगे हैं। पहले यह परिवार इंडो जर्मानिक, इंडो केल्टिक, आर्य आदि कई नामों से जाना जाता था। फिर भारत से लेकर यूरोप तक फैले रहने के कारण भारत यूरोपीय परिवार कहने लगे। सुविधा के लिए इस परिवार को भारोपीय परिवार भी कहा जाता है। संस्कृत, ग्रीक, लैटीन, अवेस्ता, जर्मन, रूसी, अंग्रेज़ी, फ्रेंच, फारसी, हिन्दी, मराठी, बंगाली आदि इस परिवार की प्रमुख भाषाएँ हैं। भारोपीय परिवार की भाषाओं को ध्वनि के आधार पर दो वर्गों में विभाजित किया है। केंटुम

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

वर्ग और सतम्।

भारोपीय परिवार

केंटुम	सतम
केल्टिक	अलबेनियन
इटालिक	अर्मेनियन
जर्मानिक	बाल्टिक
ग्रीक	स्लैवोनियन
हिट्टाइट	आर्य

I. केंटुम वर्ग

भारत यूरोपीय मूल भाषा की कंठ्य ध्वनि पश्चिमी प्रदेशों में कंठ्य ही बनी रही और पूरबी प्रदेशों में स, श.. आदि, ऊष्म ध्वनियों के रूप में पायी गयी। इस तरह भाषाओं के दो वर्ग हुए 'क' वर्ग और 'स' वर्ग। ऐसा कहने के बदले 'एक सौ' को सूचित करनेवाले शब्दों के आधार पर इन दोनों वर्गों का नामकरण हुआ। पश्चिम की भाषाओं में एक सौ को केंटुम (लैटिन) कहते हैं और पूरब की भाषाओं में सतम् (फारसी) कहते हैं।

केंटुम वर्ग के अन्दर छह परिवारों की भाषाएँ आती हैं - केल्टिक, इयलिक, जर्मानिक, ग्रीक, हिट्टाइट, तोखारी।

(क) केल्टिक

मध्य यूरोप, उत्तरी इटली, फ्रान्स, एशिया माइनर, ब्रिटन आदि स्थानों में इस परिवार की भाषाएँ बोली जाती हैं। इस परिवार की सबसे प्रधान भाषा अयरलैंड की आयरिश भाषा है।

(ख) इटालिक

इस परिवार की सबसे पुरानी भाषा रोमन कैथलिक संप्रदाय की धार्मिक भाषा लेटीन है। रोमन, फ्रेंच, पुर्तगाली, स्पानिश आदि इस वर्ग की प्रमुख भाषाएँ हैं।

(ग) जर्मानिक

इस परिवार को ट्यूटानिक परिवार भी कहते हैं। इस वर्ग की सबसे मुख्य भाषा जर्मन है। अंग्रेज़ी का विकास इसी भाषा से हुआ था। ग्यारहवीं सदी के आसपास अंग्रेजी का विकास हुआ माना जाता है। भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से जर्मन का विशेष महत्व है क्योंकि इस भाषा में दो बार ध्वनि परिवर्तन हुए थे।

(घ) ग्रीक

इस, परिवार का पुराना नाम हेल्लेनिक है। होमर के इलियड और ओडीसी में इस परिवार की भाषा का प्राचीनतम रूप मिलता है। ग्रीक भाषा बहुत बातों में वैदिक संस्कृत से मिलती है।

(ङ) हिट्टाइट

उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में एशिया माइनर की खुदाइयों में कुछ कीलाक्षर लेख मिले। उसी से हिट्टाइट भाषा का पता चला है। यह भाषा ईसा पूर्व 2500 की मानी जाती है और यह भाषा संस्कृत एवं लैटिन से मिलती है।

(च) तोखारी

इस प्राचीन भाषा के अवशेष बीसवीं शताब्दी में तुर्किस्तान में प्राप्त हुए थे। इसकी लिपि ब्राह्मी और खरोष्ठी से मिलती जुलती थी। इसके बोलनेवाले तोखार (तुषार) जाति के लोग थे। इस परिवार पर युराल अल्टाइक का काफी प्रभाव पाया जाता है।

II. सतम् वर्ग

इस वर्ग के अन्दर पाँच परिवारों की भाषाएँ आती हैं – अलबेनियन, अर्मेनियन, बाल्टिक, स्लैवानियन और आर्य।

(क) अलबेनियन

एशियाटिक सागर के किनारे से इटली के दक्षिण पूर्वी भाग तक इस परिवार की भाषाएँ बोली जाती है। सबसे मुख्य भाषा अल्बेनियन है। इस परिवार में पुराना साहित्य उपलब्ध नहीं है। इस भाषा पर तुर्की,

स्लावानिक और लैटिन का प्रभाव है।

(ख) अर्मेनियन

अर्मेनियन में प्राचीन धार्मिक साहित्य उपलब्ध था। अर्मेनियन शब्द भंडार पर ईरानी का इतना प्रभाव है कि दोनों भाषाओं को अलग पहचानना ही कठिन है। तुर्की और संस्कृत का भी प्रभाव यहाँ की भाषाओं में लक्षित होता है।

(ग) बाल्टिक इसके अन्दर तीन भाषाएँ आती हैं- पेर्शियन, लिश्वानियन और लैटीश। इनमें लिश्वानियन में मूल भारत यूरोपीय भाषा के कई रूप सुरक्षित हैं: इसलिए भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से इस भाषा का विशेष महत्व है। इस भाषा में द्विवचन का प्रयोग होता है और यह संगीतात्मक भाषा है।

(घ) स्लैवानियन

रूस, पोलेंड़, आष्ट्रिया, बलगेरियाआदि इस भाषा परिवार के क्षेत्र है। इस परिवार की तीन उपशाखाएँ हैं- पूर्वी, पश्चिमी, दक्षिणी। इनमें पूर्वी शाखा का प्रधान भाषा रूसी है, पश्चिमी शाखा की प्रधान भाषा है। जो बोहीमिया में बोली जाती है। दक्षिणी शाखा की प्रधान भाषा बल्गेरियल है।

(ङ.) आर्य

भारत यूरोपीय परिवार की सबसे मुख्य शाखा आर्य है। इसका दूसरा नाम है, भारत-ईरानी परिवार। भारत यूरोपीय परिवार का प्राचीनतम साहित्य शुद्ध रूप में इसी शाखा में प्राप्त होता है। ऋग्वेद की ऋचाएँ इसके प्रमाण है। पारसियों का धर्मग्रन्थ जेन्द अवेस्ता भी उतना पुराना है।

1.2.2.2.8 अनिश्चित भाषा परिवार

संसार में कुछ भाषाएँ ऐसी हैं जो किसी भी अन्य भाषा की प्रकृति से मिलती नहीं है। ऐसी भाषाओं को अनिश्चित भाषा परिवार में रखा गया है। इटली की एयूस्कन, बाबिलोन की सुमेरी आदि प्राचीन भाषाएँ तथा कोरियाई,एनु, बास्क,जापानी, अंडमानी, बुख्शास्की आदि अनिश्चित भाषा परिवार के अंतर्गत हैं।

1.2.2.3 प्रशान्त महासागर खंड

हिन्द महासागर तथा प्रशान्त महासागर के द्वीपों में व्यवह्यत भाषाएँ इस खंड में आती है। इनके पाँच वर्ग हैं - इंडोनेशियन, मलेनेशियन, पालिनेशियन, पापुआई, आस्ट्रेलियन।

1.2.2.3.1 इंडोनेशियन

इस परिवार का दूसरा नाम मलायन परिवार है। मलाया और सुमात्रा की मलायन, जावा की जावानीण, बोर्नीया की दुयक, फिलिपाईन की तगाल तथा मडगास्कर की योवा भाषाएँ इस परिवार के अंतर्गत है। इस अन्त योगात्मक भाषा परिवार में पूर्व, मध्य और पर प्रत्यय का प्रयोग होता है। इसी तरह कुछ शब्द स्थान के अनुसार संज्ञा, विशेषण या क्रिया बन सकते हैं। शब्दों की पुनरुक्ति से उनका बहुवचन रूप बनता है।

1.2.2.3.2 मलेनेशियन

फिज़ी जैसे छोटे-छोटे द्वीपों की अलग-अलग भाषाओं का समूह मलेनेशियन परिवार में आते हैं। इन भाषाओं में चार वचनों की व्यवस्था है- एकवचन, द्विवचन, त्रिवचन, बहुवचन । एक ही शब्द स्थान के अनुसार संज्ञा, विशेषण या क्रिया बन सकता है।

1.2.2.3.3 पालिनेशियन

न्यूज़ीलेंड, हवाई आदि द्वीपों की सभ्य भाषाएँ इस परिवार की हैं। इन भाषाओं में संयुक्त स्वर और संयुक्त व्यंजन नहीं होते। तीन वचनों की व्यवस्था है।

1.2.2.3.4 पापुआई

न्यूगिनी के पास वाले छोटे-छोटे द्वीपों की भाषाएँ जिनका विशेष अध्ययन नहीं हुआ है। न्यूगिनी की मकोर भाषा का थोडा अध्ययन हुआ है। इस भाषा में शब्द के पूर्व और बाद में प्रत्यय लगते हैं; अर्थात् यह पूर्वान्त प्रत्यय प्रधान भाषा है।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

म्नफ़- सुनना

ज- म्नफ़ - मैं सुनता हूँ

ज– म्नफ़ – उ - मैं तेरी बात सुनता हूँ।

1.2.2.3.5 आस्ट्रेलियन

इस परिवार में आस्ट्रेलिया और टास्मानिया की भाषाएँ आती हैं। ये अश्लिष्ट योगात्मक भाषाएँ हैं। जिनका धीरे - धीरे लोप होता जा रहा है।

1.2.2.4 अमेरिका खंड

उत्तरी और दक्षिणी अमेरिका में वहाँ के आदिम निवासियों की करीब चार सौ भाषाएँ बोली जाती हैं। ये भाषाएँ अधिकांश रूप से प्रश्लिष्ट योगात्मक अथवा समास प्रधान भाषाएँ हैं। पुराने ज़माने में इन लोगों की अपने छोटे-छोटे राज्य थे और अपनी भाषाएँ भी विद्यमान थी। पर यूरोप के लोगों ने आकर राज्य छीन लिए, भाषा और साहित्य को नष्ट कर दिया। ईसाई पादरियों ने धर्मप्रचार के लिए इनकी कुछ पुरानी भाषाओं का सहारा लिया था।

1.2.3 आर्य परिवार : सामान्य परिचय

आर्य परिवार भारोपीय परिवार के अन्दर सतम् वर्ग की एक शाखा है। इसकी तीन उपशाखाएँ हैं- ईरानी, दरद और भारतीय आर्य भाषाएँ।

1.2.3.1 ईरानी

ईरानी में साहित्य-रचना बहुत पहले आरंभ हो गई थी किन्तु आज उन प्राचीन निधियों का कुछ भी पता नहीं है। अतः वहाँ की भाषा का श्रृंखलावद्ध इतिहास नहीं बतलाया जा सकता। ईरानी का प्राचीन धर्मग्रन्थ अवेस्ता है। अवेस्ता शब्द का अर्थ है शास्त्र। 'जेन्द' शब्द का अर्थ है टीका। ईरान के पश्चिमी भाग को फारस कहते हैं और वहाँ की भाषा फारसी है। फारसी का विकसित रूप मध्यकालीन फारसी अथवा पहलवी है। आधुनिक फारसी का काल दसवीं शताब्दी से प्रारंभ होता है और, उसके सबसे पुराना ग्रन्थ फिरदौसी का 'शाहनामा' है। शाहनामा फारस का राष्ट्रीय महाकाव्य है।

1.2.3.2 दरद

ईरान और भारत के बीच पामीर तथा पश्चिमोत्तर पंजाब के पहाड़ी प्रदेशों में दरद भाषाएँ बोली जाती है। भाषा के स्वरूप की दृष्टि से ये ईरानी और भारतीय आर्य भाषाओं के बीच की हैं। इन्हें भारतीय विद्वान पैशाची प्राकृत कहते हैं। इसकी तीन मुख्य बोलियाँ हैं- शीना, कोहिस्थानी और कश्मीरी इनमें केवल कश्मीरी में श्रेष्ठ साहित्य उपलब्ध होता है।

1.2.3.3 भारतीय आर्य भाषाएँ

भारत में पहुंचने के बाद आर्यो ने अपनी भाषा और साहित्य को सुदृढ़ बनाया। भारत में आर्यों की भाषा का सबसे पुराना नमूना ऋग्वेद में मिलता है। ऋग्वेद के काल के विषय में विद्वान लोग एकमत नहीं है। लेकिन, अधिकांश विद्वानों की राय में ऋग्वेद 1500 ई. पूर्व से पहले बन चुका था। इस स्थिति में भारतीय आर्यभाषाओं के इतिहास को 1500 पूर्व ई. से प्रारंभ करना उचित है। भारतीय आर्य भाषाओं के क्रमिक विकास को तीन भागों में बाँट सकते हैं - प्राचीन भारतीय आर्यभाषा काल, मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा काल, आधुनिक भारतीय आर्यभाषा काल

1.2.3.3.1 प्राचीन भारतीय आर्यभाषा काल (1500 ईसा पूर्व से 500 ई. तक)

आर्य लोग भारतवर्ष में समय समय पर दल के दल आये थे, अतः उनकी भाषा एकरूप नहीं रहीं। भाषा का साहित्यिक रूप धीरे-धीरे विकास को पाता गया। भारतीय आर्यभाषा का प्राचीनतम रूप वैदिक संहिताओं में मिलता है। वैदिक संहिताओं की भाषा तत्कालीन बोलचाल की भाषा से भिन्न है क्योंकि यह काव्य-भाषा है। ऋग्वेद संहिता की समस्त ऋचाएँ एक ही काल में बनी नहीं थी। ऋग्वेद के दशम मंडल की भाषा अन्य मंडलों से सर्वथा भिन्न रही। यही नहीं, हर वेद का क्षेत्र भी भिन्न रहा, उदाहरणार्थ ऋग्वेद का क्षेत्र पंजाब रहा, यजुर्वेद और प्राचीन ब्राह्मण ग्रन्थों का क्षेत्र मध्यदेश यानि गंगा-जमुना का प्रदेश रहा। उपनिषदों तक पहुंचते-पहुंचते भाषा संस्कृत के निकट गयी थी। प्राचीन भारतीय आर्यभाषा के वैदिक और लौकिक

संस्कृत दो रूप मिलते हैं। वैदिक संहिताओं, ब्राहमणों, आरण्यकों तथा प्राचीन उपनिषदों में संस्कृत को वैदिक रूप मिलता है। लौकिक संस्कृत को 'क्लैसिकल संस्कृत' भी कहते हैं। भाषा के अर्थ में इसका प्रथम प्रयोग वाल्मीकि रामायण में मिलता है।

1.2.3.3.2 मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा काल (500 ईसा पूर्व से 1000 ई. तक)

भारत वर्ष के इतिहास में बौद्ध धर्म और जैन धर्म के विकास का काल होने के कारण छठी शताब्दी ईसा पूर्व का विशेष महत्व है। बौद्ध धर्म के विकास विस्तार के साथ भारतीय समाज-व्यवस्था पर काफी अन्तर आया। शुद्ध साहित्यिक संस्कृत के स्थान पर जन-साधारण के बीच प्रचलित विभिन्न प्राकृत भाषाओं को महत्व दिया जाने लगा। इस दृष्टि से मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा काल के तीन युगों में विभक्त किया है।

पाली और अशोकी प्राकृतों का युग - 500 ई. पूर्वी से 1 ई. तक

साहित्यिक, प्राकृतों का युग - 1 ई. से 500 ई. तक

अपभ्रंशों का युग - 500 ई. से 1000 ई. तक

वैदिक धर्म की प्रतिक्रिया के रूप में बौद्ध और जैन धर्मों का विकास विस्तार हुआ। पंडितों की भाषा शुद्ध संस्कृत का स्थान जन-साधारण की पाली भाषा ने ले लिया। बौद्ध धर्म के मूल ग्रन्थ त्रिपिटक, टीकाएँ, काव्य, कोष आदि पाली भाषा में ही बने। पाली भाषा के नामकरण के विषय में विद्वानों में मतभेद है। कुछ लोग इसका संबन्ध संस्कृत के पंक्ति से जोडते हैं। कुछ 'पाली' नाम पाटलीपुत्र से विकसित मानते हैं। सर्व विदित है कि सारा का सारा बौद्ध साहित्य 'पाली' में ही बना था।

'प्राकृत' शब्द संस्कृत प्रकृति शब्द से संबद्ध है। जन-साधारण की व्यावहारिक भाषा को ही प्राकृत कहा जाता है। देश - भेद के अनुसार प्राकृतों के पाँच भेद माने जाते हैं-शौरसेनी, मागधी, अर्धमागधी, महाराष्ट्री और पैशाची साहित्यिक प्राकृतों में शौरसेनी, मागधी और अर्ध् मागधी का प्रमुख स्थान है। शौरसेनी में ही नाटकों का सर्वप्रथम विकास हुआ था। इन नाटकों के नीच पात्र प्राकृत भाषा में ही व्यवहार करते थे। मागधी में, नाटक और व्याकरण ग्रन्थ बने थे। शौरसेनी और मगधी के बीच के प्रदेशों में अर्धमागधी का क्षेत्र पड़ता है। जैन साहित्य मुख्य रूप से अर्धमागधी में ही प्राप्त होते हैं। महाराष्ट्री प्राकृत में गीत काव्य बहुत बने थे। पैशानी प्राकृत कश्मीर की भाषा रही।

शौरसेनी, मागधी, अर्धमागधी आदि से कालांतर में अपभ्रंश का विकास हुआ। अपभ्रंश मध्यकालीन तथा आधुनिक आर्य भाषाओं के बीच की कड़ी है। कालिदास के विक्रमोर्वशीय में अपभ्रंश के कुछ दोहे प्राप्त होते हैं। भाषा व्यवहार के अनुसार देश भर में प्रत्येक प्राकृत से अलग - अलग अपभ्रंशों का विकास हुआ। शौरसेनी से नागर अपभ्रंश का विकास हुआ। नागर अपभ्रंश गुजरात में व्यवहृत होता था। सिंध प्रदेश में ब्राचड अपभ्रंश चलता था तथा राजस्थान तथा दक्षिणी पंजाब में उपनागर अपभ्रंश का व्यवहार होता था। भाषा रूप की दृष्टि से अपभ्रंश सरलता के पक्ष में रही। नपुंसक लिंग का लोप, तीन कारकों की व्यवस्था, विभक्तियों का घिस जाना, उनके स्थान पर परसर्गों का प्रयोग, अधिक से अधिक देशज शब्दों का प्रयोग आदि अपभ्रंश की विशेषताएँ रही।

1.2.3.3.3 आधुनिक भारतीय आर्यभाषा काल

दसवीं ग्यारहवीं सदी तक अपभ्रंश भाषाएँ पूर्ण विकास को प्राप्त कर चुकी थी और इनसे आधुनिक आर्य भाषाओं का विकास, होने लगा था। इस संधिकाल की भाषा 'अवहट्ट' कहलाई। आधुनिक आर्य भाषाएँ बहुत जल्द ही विकास को प्राप्त हो और अपने-अपने प्रदेश की साहित्यिक भाषाएँ बन गयी। शौरसेनी से विकसित पश्चिमी हिन्दी की खडीबोली संपूर्ण विकास को प्राप्त करके भारत की राष्ट्रभाषा और राजभाषा के उच्छ आसान पर विराजित है।

Recap / पुनरावृत्ति

- संसार की भाषाओं के वर्गीकरण में आकृतिमूलक एवं पारिवारिक वर्गीकरण सर्वप्रमुख है।
- आकृमूलक वर्गीकरण को रूपात्मक, व्याकरणिक, रचनात्मक वर्गीकरण कहा जाता है।
- पारिवारिक वर्गीकरण को वंशात्मक, वंशानुक्रमिक, कलात्मक या ऐतिहासिक वर्गीकरण कहते हैं।
- आकृति या रूप की दृष्टि से संसार की भाषाओं के दो वर्ग हैं - अयोगात्मक भाषाएँ और योगात्मक भाषाएँ
- योगात्मक भाषाओं के तीन वर्ग है - प्रश्लिष्ट योगात्मक भाषाएँ, श्लिष्ट योगात्मक भाषाएँ, अश्लिष्ट योगात्मक भाषाएँ
- संसार की भाषाओं को भौगोलिक आधार पर, चार खंडों में विभक्त है - अफ्रिका खंड, यूरेशिया खंड, प्रशान्त महासागर खंड, अमेरिका खंड। हर एक खंड के अंतर्गत विभिन्न भाषा परिवार है।
- बोलनेवाले लोगों की संख्या की दृष्टि से भारोपीय परिवार संसार का सबसे बड़ा परिवार है।
- भरोपीय परिवार को दो वर्गो में विभाजित है - केंटुम और सतम्
- आर्य परिवार भारोपीय परिवार के अन्दर सतम् वर्ग की एक शाखा है। इसकी तीन उपशाखाएँ है - ईरानी, दरद और भारतीय आर्य भाषाएँ।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. आकृति या रूप की दृष्टि से संसार की भाषाओं को कितने वर्गों में रखा जा सकता है।
2. कौन सी भाषा में संबन्ध तत्व और अर्थ तत्व दोनों में योग हो जाता है?
3. संसार की भाषाओं को भौगोलिक आधार पर कितने खंडों में विभक्त है?
4. भरोपीय परिवार को कितने वर्गो में विभाजित है?
5. कौन सी भाषा परिवार भारोपीय परिवार के अन्दर सतम् वर्ग की एक शाखा है?

Answers / उत्तर

1. दो
2. योगात्मक भाषाओं में
3. चार
4. दो
5. आर्य परिवार

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. आकृतिमूलक वर्गीकरण का सविस्तार परिचय, दीजिय?
2. पारिवारिक वर्गीकरण से क्या तात्पर्य है? संसार के भाषा परिवारों का परिचय दीजिए।
3. अफ्रीका खंड के अन्दर कितने भाषा परिवार हैं? परिचय दीजिए।
4. चीनी परिवार का परिचय दीजिए।

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. भाषा और लिपि - डॉ. एच परमेश्वरन
2. भाषा विज्ञान - डॉ. भोलानाथ तिवारी
3. भाषा विज्ञान, हिन्दी भाषा तथा देवनागरी लिपि - डॉ. शुभा बाजपेयी
4. साहित्यिक निबंध - डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त
5. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास - डॉ. बच्चन सिंह

इकाई 3 आधुनिक हिन्दी का विकास

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- आधुनिक हिन्दी से परिचय प्राप्त करता है
- खडीबोली के उद्‌भव एवं विकास से परिचित होता है
- आधुनिक काल में खडी बोली के गद्य के विकास से परिचय प्राप्त करता है
- महावीरप्रसाद द्विवेदी और सरस्वती पत्रिका के बारे में जानता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

भाषाविदों के अनुसार आधुनिक हिन्दी का विकास अंग्रेज़ी शासन की स्थापना से प्रारंभ होता है। अंग्रेज़ी शासन के कारण मुसलमान भी साधारण समाज के अंग बन गये। अरबी-फारसी उनके धार्मिक क्षेत्र की भाषाएँ रह गयी थीं। व्यवहार में वे खडीबोली का ही प्रयोग करते थे। इतना अवश्य था कि उनकी बोली अरबी-फारसी प्रधान होती थी। हिन्दुओं की भाषा खडोबोली हो गयी थी। अंग्रेजी शासकों ने सरकारी कर्मचारियों के दैनिक व्यवहार के लिए खडीबोली को स्वीकार किया। फल यह हुआ कि खडीबोली का चतुर्मुखी विकास होने लगा। खडीबोली हिन्दी में पुस्तकें छपवाई गई, समाचार पत्र निकाले गये। बीसवीं सदी तो खडीबोली के चरम उत्कर्ष का काल था। भारतीय स्वतंत्रता के साथ देश के संविधान ने हिन्दी के खडीबोली रूप को ही मान्यता प्रदान की। आज ज्ञान-विज्ञान की दृष्टि से हिन्दी ही भारतीय भाषाओं में सबसे समृद्ध है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

खडीबोली हिन्दी, फोर्ट विलियमा कॉलेज का योगदान, महावीरप्रसाद द्विवेदी और सरस्वती पत्रिका ।

Discussion / चर्चा

1.3.1 खडीबोली का विकास

खडीबोली का समुचित विकास तो शुरु होता है आधुनिक काल के आरंभ से ही, परन्तु खडीबोली में बोलचाल तथा साहित्य लिखने की परंपरा काफी पुरानी है। आदिकाल में हिन्दी साहित्य में गद्य का विकास मन्द गति में था। इसका प्रमुख कारण है कि हिन्दी साहित्य के जन्म के उपरांत ही देश पर विदेशियों का अधिकार हो गया। वे अपनी भाषा लेकर आए। दैनिक व्यवहारों में स्थानीय गद्य का प्रयोग होता रहा। साहित्य स्रष्टा अपने रागात्मक भावों को पद्य में व्यक्त करते रहे। दैनिक व्यवहार की अन्य आवश्यक समस्याओं की ओर उनका ध्यान नहीं गया। वे कविता

के माध्यम से अपने स्वामी और भगवान का यशगान करते रहे। दूसरा कारण यह है कि उस समय साहित्य में भिन्न भिन्न प्रान्तीय भाषाओं का प्रयोग हो रहा था। राजस्थानी, व्रज, अवधी साहित्यिक भाषाएँ बनी रही। इन्हीं भाषाओं में अधिकांश रचनाएँ पद्य रूप में थी। इसी कारण हिन्दी का प्रारंभिक रूप साहित्य के क्षेत्र में गद्य से शून्य रहा।

1.3.1.1 खडीबोली गद्य का प्रारंभिक रूप

खडीबोली के साहित्य का उद्भव एवं विकास प्रारंभ में दक्षिण के अनेक मुस्लिम राज्यों के आश्रय में हुआ। खडीबोली गद्य का प्रारंभिक रूप दक्षिणी - साहित्य में मिलता है। दक्षिण के साहित्यकारों ने अपनी भाषा को हिन्दी, हिन्दवी, दक्खिनी, देहलवी आदि कई नामों से पुकारा, किन्तु वस्तुतः वह खडीबोली का ही प्रारंभिक रूप है। दक्षिण के गद्य लेखकों में ख्वाजा बैद नवाज़ गेसूदराज, शाह मीराँजी उश्शक, अमीनुद्दीन आला, मुल्ला वजही आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। उत्तरी भारत में खड़ीबोली गद्य परंपरा का सूत्रपात सत्रहवी अठारहवीं शती से होता है। उत्तर भारत की खडीबोली की प्राचीनतम गद्य रचना के रूप में प्रसिद्ध कवि गंग की 'चंद छंद बरनन की महिमा 'का उल्लेख किया जाता है। लेकिन इस ग्रन्थ की प्रामाणिकता के संबन्ध में विद्वानों में मतभेद है। अठारहवीं शताब्दी की दो महत्वपूर्ण गद्य रचनाएँ 'भाषायोगवसिष्ठ (रामप्रसाद निरंजनी), पद्मपुराण (दौलतराम) आदि हैं।

उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभ में हिन्दी गद्य के क्षेत्र में चार उच्चकोटि के गद्य लेखक अवतरित हुए। मुंशी सदासुखलाल, इंशा अल्ला खां, लल्लूलाल और सदलमिश्र । मुंशी सदासुखलाल ने खडीबोली में विष्णु पुराण के आधार पर सुखसागर नामक ग्रन्थ का निर्माण किया, जो शैली की दृष्टि से प्रौढ़ है। आचार्य रामचन्द्रशुक्ल ने इनकी भाषा शैली की मीमांसा करते हुए लिखा है 'सदासुखलाल ने हिन्दुओं की बोलचाल की शिष्ट भाषा चारों ओर प्रचलित कर उसी में रचना की। स्थान - स्थान पर शुद्ध तत्सम संस्कृत शब्दों का प्रयोग करके उन्होंने उसके भावि साहित्यिक रूप का पूर्ण आभास दिया।' इंशा अल्ला खां उर्दू के प्रसिद्ध शायर थे, किन्तु उन्होंने अपनी उदयभानुचरित या रानी केतकी की कहानी की रचना में विशुद्ध हिन्दवी के प्रयोग का प्रयास किया है।

लल्लूलाल आगरा के रहनेवाले गुजराती ब्राह्मण तथा इन्हें संस्कृत के विशेष ज्ञान के साथ उर्दू का भी थोडा बहुत ज्ञान था। उन्होंने बहुत ग्रन्थों की रचना की। इनमें 'प्रेमसागर' शुद्ध खडीबोली की रचना है। सदल मिश्र ने खडीबोली की महत्ता सिद्ध करते हुए 'नासिकेतोपाख्यान' की रचना की। खडीबोली के विकास की चर्चा में फोर्ट विलियम कॉलेज का नाम स्मरणीय है। ईस्ट इंडिया कंपनी ने प्रशासनिक सुविधा के लिए सन् 1800 ई. में फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना की। इसमें हिन्दी, मराठी, गुजराती, तमिल आदि देशीय भाषाओं में सामान्यतः पुस्तकें अनूदित होती थीं। भाषा मुंशियों के रूप में लल्लूलाल और सदल मिश्र की नियुक्ति हुई।

ईसाई प्रचारकों ने भी हिन्दी गद्य के विकास में पर्याप्त योग दिया है। उन्होंने अपने मत का प्रचार करने के लिए अपने धार्मिक ग्रन्थों के अनुवाद, व्याख्यान लेख तथा पाठ्य-पुस्तकें हिन्दी में प्रस्तुत कीं, जिनसे अप्रत्यक्ष में हिन्दी गद्य की सेवा हुई। सन् 1798 ई. में कलकत्ता के समीप श्रीरामपुर में ईसाई प्रचारकों का एक सुदृढ़ केन्द्र स्थापित हुआ। आगे चलकर इस संस्था ने अपना मुद्रण यंत्र भी स्थापित कर लिया जिससे अनेक पुस्तकें तथा पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित हुई। इसके द्वारा कलकत्ता और आगरा में स्कूल-बुक-सोसाइटी की भी स्थापना हुई जिसके द्वारा विभिन्न विषयों पर पाठ्य-पुस्तकें तैयार की गई। विदेशी पादरियों ने इस कार्य में अनेक भारतीय लेखकों का भी सहयोग प्राप्त किया तथा उन्हें गद्य लेखन में प्रवृत्त किया। हिन्दी गद्य को विषय - विस्तार प्रदान करने एवं गद्य - लेखन के प्रयासों को प्रोत्साहित करने की दृष्टि से ईसाई - प्रचारकों ने महत्वपूर्ण कार्य किया।

खडीबोली गद्य के विकास में बंगाल के राजा राम मोहनराय एवं उनके द्वारा स्थापित ब्रह्म-समाज का भी

योगदान है। उन्होंने वेदान्त-सूत्रों का 'हिन्दी अनुवाद किया और सन् 1829 में एक पत्रिका, बंगदूत भी हिन्दी में निकाली। यद्यापि राजा साहब की भाषा बेंगला होते हुए भी उन्होंने हिन्दी को अपनाकर अपनी व्यापक राष्ट्रीयता का भी परिचय दिया है। सारे राष्ट्र की भाषा हिन्दी हो सकती है, इस तथ्य को राजा साहब ने आज से डेढ़ सौ वर्ष पूर्व ही ग्रहण कर लिया था, जो उनकी व्यापक दृष्टि एवं दूरदर्शिता का प्रमाण है। इसके अलावा अनेक पत्र-पत्रिकाओं ने खडीबोली का प्रयोग करके विभिन्न प्रकार के व्यावहारिक विषयों पर गद्य लेखन की परंपरा को पर्याप्त प्रोत्साहन दिया। उन पत्रिकाओं में बनारस अखबार, सुधाकर, बुद्धि प्रकाश, विद्यादर्शन,धर्मप्रकाश, ज्ञान दीपिका, वृत्तान्तदर्पण, भारतखंड अमृत, ज्ञान प्रदायिनी पत्रिका आदि का नाम उल्लेखनीय हैं। यहाँ एक बात स्पष्ट है कि आधुनिक काल के आरंभ से पूर्व ही गद्य के क्षेत्र में खडीबोली की प्रतिष्ठा सम्यक रूप में हो गई थी।

1.3.1.2 आधुनिक काल में खडीबोली का विकास

आधुनिक काल के आरंभिक गद्य लेखकों में दो व्यक्तियों का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं-राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द और राजा लक्ष्मण सिंह। राजा शिवप्रसाद बनारस से 'बनारस अखबार' निकाला। आगे चलकर उनकी नियुक्ति सरकारी शिक्षा विभाग में इन्सपेक्टर पद पर हो गई। इस पद पर रहते हुए उन्होंने पाठ्य - पुस्तकों के अभाव की पूर्ति के लक्ष्य से विभिन्न विषयों की पुस्तकें हिन्दी में लिखीं। प्रारंभ में उन्होंने परिष्कृत हिन्दी का प्रयोग किया, किन्तु सरकारी अधिकारियों के प्रभाव से उनका झुकाव उर्दू या उर्दू मिश्रित हिन्दी की ओर हो गया। उनके प्रारंभिक ग्रन्थों मानव धर्मसार, योगवसिष्ट के चुने हुए श्लोक, उपनिषद्सार, भूगोल हस्तमलक, विद्यांकुर, 'राजा भोज का सपना' आदि की भाषा संस्कृत मिश्रित हिन्दी है वहाँ परवर्ती ग्रन्थों इतिहास तिमिर नाशक, बैताल-पचीसी की भाषा उर्दू है। राजा लक्ष्मण सिंह विशुद्ध हिन्दी के समर्थक थे, अतः अहोंने राजा शिवप्रसाद की उपर्युक्त भाषा-नीति का विरोध करते हुए हिन्दी का समर्थन किया। अपने इसी दृष्टिकोण के अनुरूप उन्होंने कालिदास कृत मेघदूत, शकुन्तला, रघुवंश आदि का हिन्दी में अनुवाद किया। इनमें उन्होंने गद्य को खडीबोली में तथा पद्य को, ब्रजभाषा में प्रस्तुत किया।

सन् 1875 में स्वामी दयानन्द सरस्वती की प्रेरणा से महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था 'आर्य समाज' की स्थापना हुई जिसके द्वारा धर्म, समाज, शिक्षा एवं साहित्य के क्षेत्र में क्रान्ति हुई। आर्य समाज के नेताओं ने धर्म और समाज के क्षेत्र में प्रचलित रूढ़ियों, अंधविश्वासों, पाखंडों आदि का खंडन करके धर्म और सदाचार के शुद्ध रूप को प्रकाशित किया। इससे भारतीय समाज में जागृति की एक नई लहर और बौद्धिक चेतना की एक नई उद्दीप्ति आयी जिसका प्रभाव साहित्य और भाषा पर भी पड़ गया। आर्य समाज भक्ति-आन्दोलन की भाँति भावात्मकता पर आश्रित आन्दोलन नहीं था, अपितु वह बौद्धिकता पर आधारित था। अतः उनके नेताओं के द्वारा अत्यन्त सशक्त गद्य का प्रयोग हुआ है। स्वामी दयानन्द, स्वयं गुजराती थे तथा संस्कृत के विद्वान थे, फिर भी उन्होंने हिन्दी के राष्ट्रीय महत्व को स्वीकार करते हुए अपने अनेक ग्रंन्थों की रचना हिन्दी में की। इनमें 'सत्यार्थ प्रकाश' विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

जिस समय स्वामी दयानन्द सरस्वती एवं उनके अनुयायी धर्म एवं समाज के क्षेत्र में सुधार कार्य कर रहे थे, उसी समय हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में भारतेंदु हरिश्चन्द्र नयी क्रान्ति का सूत्रपात कर रहे थे। उन्होंने हिन्दी गद्य के क्षेत्र में अद्‌भुत कार्य किया। एक ओर उन्होंने गद्य-शैली को परिमार्जिन एवं परिष्कृत करते हुए उसका मार्ग निश्चित किया तो दूसरी ओर उन्होंने निबंध, नाटक, इतिहास, आलोचना, संस्मरण, यात्रा-विवरण आदि गद्य रूपों की परंपरा का प्रवर्तन किया। भारतेन्दु की गद्य शैली अत्यन्त व्यावहारिक एवं हिन्दी की मूल प्रकृति के अनुकूल है। उन्होंने न तो संस्कृत के तत्सम शब्दों का अनावश्यक रूप में प्रयोग किया और न ही उनका बहिष्कार किया। तत्सम एवं तद्‌भव

शब्दों का प्रयोग उन्होंने यथोचित रूप में किया है। इसी प्रकार उर्दू-फारसी शब्दों के प्रयोग में भी उन्होंने संतुलित दृष्टि का परिचय दिया है। विभिन्न प्रान्तीय भाषाओं के शब्दों तथा ब्रजभाषा के उपयुक्त प्रयोगों से भी उनकी भाषा मुक्त है। दूसरे उन्होंने विषय वस्तु, भाव विशेष एवं रूप विशेष के अनुसार विभिन्न प्रकार की शैलियों का प्रयोग किया है।

भारतेन्दु युग के अन्य लेखकों में प्रतापनारायण मित्र, बालकृष्ण भट्ट, श्रीनिवासदास, राधाकृष्ण दास, सुधाकर द्विवेदी, कार्तिकाप्रसाद खत्री, राधाचरण गोस्वामी, बद्रीनारायण चौधरी, बालमुकुन्द गुप्त, श्रद्धाराम फिल्लौरी, किशोरीलाल गोस्वामी आदि ने भी गद्य के विकास में अपना - अपना योगदान दिए । हिन्दी भाषी न होते हुए भी हिन्दी गद्य -लेखन को प्रोत्साहित करनेवाले इस युग के महान व्यक्तियों में बंगाल के बांबू नवीनचन्द्र राय और इंग्लैंड के फ्रेडरिक पिन्काट का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

नवीनचन्द्र राय ब्रह्म समाज के अनुयायी थे। उन्होंने हिन्दी में अनेक पाठ्य-पुस्तकों का निर्माण किया तथा ज्ञान प्रदायिनी नामक पत्रिका भी निकाली। फ्रेडरिक पिन्काट हिन्दी के सच्चे हितैषी थे तथा उन्होंने हिन्दी में लेख लिखने एवं पत्रिकाएँ संपादित करने के अतिरिक्त अपने युग के भारतीय हिन्दी लेखकों को भी बहुत प्रोत्साहित किया। उन्होंने लंदन में बैठे-बैठे ही हिन्दी पर अच्छा अधिकार प्राप्त कर लिया था।

1.3.2 महावीरप्रसाद द्विवेदी और सरस्वती पत्रिका

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के शब्दों में - 'निजभाषा उन्नति अहै सब उन्नति का मूल।' सब उन्नति से भारतेन्दु का तात्पर्य था - सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक। यह कार्य बंगाल में ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, मराठी में चिपलूणकर और हिन्दी में भारतेन्दु ने किया। इनसे जिस नयी संस्कृति का जन्म हुआ, वह राष्ट्रीय आन्दोलन में संक्रान्त हो गयी। सांस्कृतिक आन्दोलन का राष्ट्रीय आन्दोलन में बदलना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। उन सांस्कृतिक आन्दोलनों के मूल में औपनिवेशिक शोषण का विरोध था। सांस्कृतिक-सामाजिक आन्दोलन द्वारा एक भारतीय अस्मिता बनी और इसी के माध्यम से यह बोध हुआ कि अपनी अस्मिता की पहचान और आर्थिक शोषण से मुक्ति स्वतंत्रता-प्राप्ति के बिना संभव नहीं है। राजभक्ति का समर्थन करते हुए भी भारतेन्दु और उसके मंडल के लोगों ने शासक और शासित के बीच एक विरोध की स्थिति पैदा की। इन भावनाओं और अंतर्विरोधों का प्रतिफलन बीसवीं शती के साहित्य में दिखाई पड़ा।

भाषा और साहित्य की उन्नति के लिए बीसवीं शती में एक संस्था स्थापित हुई -नागरी प्रचारिणी सभा और उसके बाद सरस्वती पत्रिका(1900)श्यामसुन्दरदास, रामनारायण मिश्र और शिवकुमार सिंह के उद्योग से सभा की स्थापना हुई। सभा द्वारा मूल्यवान हिन्दी ग्रन्थों का प्रकाशन होने लगा। हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज में सभा ने जो काम किया वह अविस्मरणीय है। इसके द्वारा 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका' का प्रकाशन हुआ जिसमें शोधपरक लेख छपा करते थे। सभा में हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए, सन् 1910 में हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग की स्थापना की। इस तरह साहित्य की समृद्धि का काम सभा ने अपने हाथ में लिया और प्रचार का कार्य सम्मेलन को सौंप दिया।

आधुनिक हिन्दी के क्षेत्र में नयी गति महावीरप्रसाद द्विवेदी के प्रयासों से आई। उन्होंने सरस्वती पत्रिका के द्वारा हिन्दी भाषा और साहित्य को व्यवस्थित और प्रतिष्ठित करने में अभूतपूर्व योग दिया। सरस्वती जैसी मासिक पत्रिका के प्रकाशन का निश्चय एक बंगाली सज्जन चिन्तामणि घोष ने किया जो इंडियन प्रेस, इलाहाबाद के स्वत्वाधिकारी थे। घोषजी के अनुरोध पर इसके संपादन का भार सभा ने स्वीकार किया। एक वर्ष तक श्यामसुन्दर दास, राधाकृष्ण दास, जगन्नाथ दास, कार्तिक प्रसाद, और किशोरीलाल गोस्वामी इसके संपादक मंडल में थे। सन् 1901 में इसके संपादन का दायित्व अकेले श्यामसुन्दर दास ने संभाला। सन् 1903 में महावीरप्रसाद द्विवेदी ने उसके

संपादन का कार्य-भार संभाला।

सरस्वती पत्रिका के माध्यम से द्विवेदीजी ने हिन्दी साहित्य के गद्य और पद्य की विभाजक रेखा को मिटा दिया। यद्यपि सरस्वती में ब्रजभाषा की रचनाएँ भी छपती रहीं, फिर खडीबोली पद्य को प्रोत्साहन मिला। गद्य-पद्य की भाषा खडीबोली हो गयी। इसका श्रेय महावीरप्रसाद द्विवेदी को है।

Recap / पुनरावृत्ति

- खडीबोली के चरम उत्कर्ष का काल बीसवीं शताब्दी है।
- आधुनिक काल में खड़ीबोली की प्रतिष्ठा में फोर्टविलियम कॉलेज, ईसाई धर्म प्रचारक, ब्रह्मसमाज, आर्य समाज, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और युगीन रचनाकार एवं महावीरप्रसाद द्विवेदी तथा सरस्वती पत्रिका, नागरी प्रचारिणी सभा का योगदान उल्लेखनीय है।
- सरस्वती पत्रिका का प्रकाशन सन् 1900 में हुआ।
- सरस्वती का प्रथम प्रकाशक चिन्तामणि घोष था।
- सन् 1903 से पत्रिका का कार्य-भार महावीर प्रसादद्विवेदी ने संभाला।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. भाषाविदों के अनुसार आधुनिक हिन्दी का विकास कब से प्रारंभ होता है?
2. खडीबोली गद्य का प्रारंभिक रूप कहाँ मिलता है?
3. उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभ में हिन्दी गद्य के क्षेत्र में कितने उच्चकोटि के गद्य लेखक अवतरित हुए?
4. 'प्रेमसागर' किसकी रचना है?
5. वेदान्त-सूत्रों का 'हिन्दी अनुवाद किसने किया?
6. सरस्वती मासिक पत्रिका के प्रकाशन का निश्चय किसने किया?
7. 1901 में सरस्वती मासिक पत्रिका के संपादन का दायित्व किसने संभाला?

Answers / उत्तर

1. अंग्रेज़ी शासन की स्थापना
2. दक्षिणी - साहित्य में
3. चार
4. लल्लू लाल
5. राजा राम मोहन राय
6. चिन्तामणि घोष
7. श्यामसुन्दर दास ने

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. आधुनिक हिन्दी के विकास का परिचय दीजिए।
2. आधुनिक हिन्दी से परिचय दीजिए।
3. खडीबोली के उद्‌भव एवं विकास पर टिप्पणी लिखिए ।
4. आधुनिक काल में खडी बोली के गद्य के विकास के बारे में लेख लिखिए।
5. महावीरप्रसाद द्विवेदी और सरस्वती पत्रिका के बारे में परिचय दीजिए।

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. भाषा और लिपि - डॉ. एच परमेश्वरन
2. भाषा विज्ञान - डॉ. भोलानाथ तिवारी
3. भाषा विज्ञान, हिन्दी भाषा तथा देवनागरी लिपि - डॉ. शुभा बाजपेयी
4. साहित्यिक निबंध - डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त

BLOCK 02

हिन्दी भाषा का उद्‌भव एवं उसके विभिन्न रूप

SGOU

इकाई 1 हिन्दी शब्द की व्युत्पत्ति

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- भाषा की विभिन्न परिभाषाओं से परिचित होता है
- भाषा विकास की प्रक्रिया समझाता है
- हिन्दी शब्द की व्युत्पत्ति के बारे में समझता है
- हिन्दी भाषी प्रदेश की जानकारी प्राप्त होती है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

हिन्दी भाषा का इतिहास लगभग एक हज़ार वर्ष पुराना माना जाता है। हिन्दी भाषा विश्व की प्राचीन भाषाओँ में से एक है जो विश्व में तीसरी सर्वाधिक बोली जानेवाली भाषा है। भारत के आलावा हिन्दी और उसकी बोलियाँ विश्व के अन्य देशों में भी बोली पढ़ी व लिखी जाती है। इसी कारण हिन्दी को भारत की राजभाषा, राष्ट्रभाषा एवं संपर्कभाषा तथा विश्वभाषा भी मानी जाती है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

भाषा विकास की प्रक्रिया, हिन्दी शब्द की व्युत्पत्ति 'हिन्दी' शब्द का प्रयोग, हिन्दी प्रदेश

Discussion / चर्चा

2.1.1 भाषा की विभिन्न परिभाषाएँ

'मनुष्य और मनुष्य के बीच वस्तु या विषय में अपनी इच्छा और मति के आदान-प्रदान केलिए व्यक्त संकेतों का जो व्यवहार होता है, उसे भाषा कहते हैं।'

- डॉ. श्यामसुंदर दास।

'भाषा यादृच्छिक भाषा प्रतिकों का तन्त्र है जिसके द्वारा मानव प्राणि एक सामाजिक समूह के सदस्य और सांस्कृतिक साझीदार के रूप में संपर्क एवं सम्प्रेषण करते हैं।'

- इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटैनिका।

'ध्वन्यात्मक शब्दों द्वारा प्रकट करना ही भाषा है।'

- स्वीट

'भाषा एक तरह का संकेत है, संकेत से आशय उस प्रतीक चिन्हों से हैं जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचारों को प्रकट करता है।'

- बोन्द्रिय

मनुष्य अन्य प्राणियों से अधिक संवेदनशील और बुद्धिमान है। अपने आपको अभिव्यक्त करना उसकी प्रवृत्ति है। सामाजिक प्राणी होने के कारण वह निरंतर समाज के अन्य सदस्यों के साथ विचारों और भावों का आदान प्रदान करता है। प्रारम्भ में वह संकेतों या

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

अस्पष्ट ध्वनियों का प्रयोग करता था। ध्वनि समूह के संयोजन से वस्तु विशेष के प्रतीक बन गए, जिनसे धीरे धीरे भाषा का विकास हुआ। 'भाषा' विचारों के आदान-प्रदान का सबसे सुगम साधन है, जिसके द्वारा मनुष्य बोलकर, सुनकर, लिखकर व पढ़कर अपने मन के भावों या विचारों को प्रकट करता है। दूसरे शब्दों में मनुष्य अपने भावों एवं विचारों को लिखित अथवा कथित रूप से दूसरों के सम्मुख प्रस्तुत करना और दूसरों के भावों को स्वयं समझाने का माध्यम है - भाषा। सार्थक शब्दों के समूह या संकेत को भाषा कहते है।

2.1.2 भाषा विकास की प्रक्रिया

प्राचीनकाल में संसार के विभिन्न भागों में विभिन्न प्रकार की बोलियाँ बोली जाती होगी। कालांतर में सामाजिक परिवर्तनों के कारण इनमें से किसी एक बोली प्रमुख बन गयी होगी। इसका प्रमुख कारण यह रहा होगा कि यह एक शक्तिशाली समुदाय की बोली रही होगी जिसने अन्य कमज़ोर समुदायों पर आक्रमण करके उन्हें अपना गुलाम बना दिया होगा। यहीं से शासक और शासित सामजिक विभागों का उदय हुआ होगा। उनमें शासक समाज की बोली अधिक विस्तृत होता होगा। आगे चलकर शासक समाज की बोली अधिक व्यवह्मत और समझी जाने लगी होगी और भाषा रूप में बदली होगी। जब धर्म का उदय हुआ तब धर्म के प्रणेता अपने धर्म के प्रचार-प्रसार केलिए किसी बोली को माध्यम बनाया होगा इसप्रकार इन लोगों द्वारा व्यवहृद बोली अधिक उन्नत समृद्ध और भावाभिव्यक्ति में अधिक संपन्न बनी होगी। कालांतर में यही साहित्य सृजन का माध्यम बनाकर सशक्त एवं सुसंस्कृत हो गयी होगी। भाषा विकास की स्वाभाविक प्राक्रिया यही मानी जाती है। इसके अनुसार एक बोली विकास करते-करते साहित्यिक भाषा बन जाती है।

विकास प्रक्रिया के अनुसार भाषा के चार स्तर होते हैं -

1. बोली
2. विभाषा / प्रादेशिक भाषा
3. साहित्यिक भाषा
4. राष्ट्रभाषा या संपर्कभाषा

1. **बोली :** एक क्षेत्र विशेष में बोली जाने वाली भाषा का विशिष्ट रूप बोली कहलाता है। अर्थात् एक छोटे से कस्बे या क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषा बोली कहलाती है। बोली का साहित्य लिखित न होकर मौखिक ही रहती है। इसकी लिपि नहीं होती है। बोली में ही मुहावरे, लोकोक्तियाँ, लोकगीत, लोकथायें आदि का सौन्दर्य देखा जा सकता है। इसमें एक अंचल विशेष प्रभावित होता है।
2. **विभाषा / प्रादेशिक भाषा:** इसे उपभाषा या क्षेत्रीय भाषा भी कहा जाता है। विभाषा का क्षेत्र भाषा से कम व्यापक एवं एक बोली से अधिक विस्तृत होता है। एक प्रदेश में अथवा प्रदेश के भाग में सामान्य बोलचाल, साहित्य आदि के लिए प्रयुक्त होने वाली भाषा को विभाषा कहते हैं। विभाषा ही उन्नति प्राप्त करते परिनिष्ठित साहित्यिक भाषा बन जाती है। एक भाषा क्षेत्र में कई विभाषाएँ हो सकती हैं।
3. **साहित्यिक भाषा:** भाषा एक पारिभाषिक शब्द है इसे अंग्रेजी में Standard language तथा हिन्दी में परिनिष्ठित भाषा कहते हैं। नागरिक समाज का शिष्ट और शिक्षित समाज अपने व्यवहार केलिए इसी भाषा का प्रयोग करते हैं। यह साहित्यिक, धर्म, राजनीति, संस्कृति आदि का मध्यम होता है। यह भाषा का संस्कृत और शिष्ट रूप होता है। व्याकरण, शब्दशक्ति आदि की दृष्टि से भी यह भाषा अधिक उन्नत एवं परिमार्जित है। एक बोली उन्नति प्राप्त करते-करते विभाषा का पद प्राप्त करता है और फिर अधिक उन्नति कर भाषा के पद पर प्रतिष्ठित हो जाती है। परन्तु प्रत्येक विभाषा भाषा का पद प्राप्त करने में समर्थ नहीं होती।
4. **राष्ट्रभाषा या संपर्क भाषा:** वह भाषा जिसका प्रयोग देश के अधिकांश निवासियों द्वारा किया जाता है, उसे राष्ट्रभाषा कहते हैं। राष्ट्रभाषा

सम्पूर्ण राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करती है और बोली जाती है तथा देश के सरकार की आधिकारिक भाषा होती है। राष्ट्रभाषा शब्द का अर्थ है राष्ट्र में प्रयुक्त होनेवाली भाषा। डॉ भोलानाथ तिवारी के शब्दों में 'जब कोई आदर्श भाषा बनने के बाद भी उन्नत होकर और भी महत्त्वपूर्ण बन जाती है तथा पूरे राष्ट्र या देश में अन्य भाषा क्षेत्र तथा अन्य भाषा परिवार क्षेत्र में भी उसका प्रयोग सार्वजनिक कार्यो आदि में होने लगता है तो वह राष्ट्रभाषा का पद पा जाती है।'

संपर्क भाषा शब्द का प्रयोग अंग्रेजी के लिंग्वा फ्रेंका (ingua Franca) के प्रतिशब्द के रूप में किया जाता है। 'लिंग्वा फ्रेंका' से तात्पर्य है, लोक बोली अथवा सामान्य बोली। जिस भाषा के माध्यम से एक क्षेत्र के लोग देश के अन्य क्षेत्रों के निवासियों से अथवा एक भाषा के बोलने वाले लोग अन्य भाषा-भाषियों से अपने भावों एवं विचारों की आदान-प्रदान करता है, उसे संपर्कभाषा कहते हैं।

2.1.3 हिन्दी शब्द की व्युत्पत्ति

संसार की अनेक भाषाओं में से एक भाषा है - हिन्दी। 'हिन्दी' शब्द की व्युत्पत्ति के संबंध में भाषा वैज्ञानिकों का मत है, संस्कृत की 'स' ध्वनि फारसी में 'ह' हो जाती है। अतः जब फारसी भाषा -भाषियों का भारत के 'सिन्धु' प्रदेश से संपर्क स्थापित हुआ तो संस्कृत का 'सिन्धु' और 'सिन्धी' फारसी में 'हिन्द' और 'हिन्दी' हो गए। प्रयोग तथा रूप की दृष्टि से 'हिन्दवी' या 'हिन्दी' शब्द फारसी भाषा का ही है। संस्कृत, प्राकृत अथवा आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं के किसी भी प्राचीन ग्रंथ में इस शब्द का प्रयोग नहीं मिलता। 'हिन्दी' शब्द का अर्थ, 'हिन्द से संबंध रखनेवाला' किंतु उसका प्रयोग 'हिन्द के रहनेवाले' या 'हिन्द की भाषा' के अर्थ में भी होता है। डॉ. भोलानाथ तिवारी जी का कहना है कि - 'उस नदी का नाम 'सिंधु' संस्कृत भाषा का शब्द नहीं हो सकता। आर्यो के आगमन से पूर्व ही उस नदी के किनारे में संस्कृति का विकास हो चुका। अतः उस नदी का द्रविड़ नाम 'सिद' या 'सित्' रहा होगा, जिसका अर्थ है 'बहना' या 'सींचना'। आर्य लोग अन्य भाषाओँ के शब्दों का संस्कृतीकरण करते हैं। उस सिलसिले में 'सिन्धु' नाम विकसित हुआ होगा।' इन सारे तर्कों में फारसीवाला तर्क अधिक स्वीकृत है।

2.1.4 'हिन्दी' शब्द का प्रयोग तथा हिन्दी प्रदेश

भाषा के रूप में 'हिन्दी' शब्द का प्रयोग भी पहले पहल फारसी में हुआ था। छठी शताब्दी के पहले ही ईरान में भारत की भाषाओँ को 'जबान-ए-हिन्दी' कहा जाता था। हिन्दी भाषा केलिए हिन्दी शब्द का प्रयोग सबसे पहले किसने किया? निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता। अमीर खुसरो ने अपनी रचनाओं में 'हिन्दी' शब्द का कई बार प्रयोग किया है। इस आधार पर कुछ लोग मानते हैं कि खुसरो ने भी इस भाषा को यह नाम दिया था। लेकिन सच तो यह है कि खुसरो ने 'भारतीय मुसलमान' और 'भारत के रहनेवाले' के अर्थ में ही इस शब्द का प्रयोग किया है। खुसरो ने भाषा के अर्थ में 'हिन्दवी' अथवा 'हिन्दुई' शब्द का प्रयोग किया है। मध्यदेश की शौरसेनी अपभ्रंश से संबद्ध किसी भाषा को 'हिन्दवी' कहा जाता है। भारत के मुसलमानों ने इस भाषा को अपनाया और उसमें फारसी और तुर्की के शब्द भर दिए। इसी भाषा को 'हिन्दी' नाम से अभिहित किया गया। मुसलमानी शासन के प्रभाव से भारतीयों ने भी इस भाषा को अपना लिया। दक्खिनी मुसलमान कवियों ने 'हिन्दी' शब्द का सबसे अधिक प्रयोग किया और उसके बाद यह शब्द अविच्छिन्न रूप से चलता चला आता रहा है।

ऊपर बता चुके हैं कि 'हिन्दी' नाम से प्रचलित इस भाषा में अरबी-फारसी के शब्द भरते जा रहे थे। अर्थात् मूल रूप से यह भाषा 'हिन्दी' नहीं 'उर्दू' रही। फोर्ट विलियम कॉलेज के हिन्दी अध्यापक जॉन गिलक्राइस्ट की पुस्तक 'Rules of Hindi Grammar' में सारे नियम उर्दू के ही थे, हिन्दी के नहीं। उनके विचार में हिन्दी, हिन्दुस्तानी, उर्दू, रेख्ता आदि सब एक ही भाषा के विविध नाम हैं। अंग्रेज़ी शासकों ने ही हिन्दी और हिन्दुस्तानी (उर्दू) में अंतर किया और

1862 में शिक्षा संयोजक के सम्मुख हिन्दी-उर्दू का प्रश्न उपस्थित हुआ। इसप्रकार 'हिन्दी' आजकल के अर्थ में निश्चित रूप से स्वीकृत हो गयी।

शब्दार्थ की दृष्टि से 'हिन्दी' शब्द का प्रयोग हिन्द या भारत में बोली जानेवाली किसी भी आर्य या द्राविड अथवा अन्य कुल की भाषा केलिए हो सकता है, किंतु प्रचलित या साहित्यिक अर्थ में आजकल वास्तव में इसका व्यवहार उत्तर भारत के मध्यदेश के हिन्दुओं की वर्तमान साहित्यिक भाषा के अर्थ में मुख्यतया, तथा उस भू-भाग की बोलियों और उनसे संबंध रखनेवाले प्राचीन साहित्यिक रूपों के अर्थ में होता है। इस भू-भाग की सीमाएं पश्चिम में जैसलमेर, उत्तर-पश्चिम में अम्बाला, उत्तर में शिमला से लेकर नेपाल की पूर्वी छोर तक के पहाड़ी प्रदेश का दक्षिण भाग, पूर्व में भागलपुर, दक्षिण-पूर्व में रामपुर तथा दक्षिण-पश्चिम में खंडवा तक पहूँचती है। इस भू-भाग में हिन्दुओं के आधुनिक साहित्य, पत्र-पत्रिकाओं, शिष्ट बोल-चाल तथा स्कूली शिक्षा की भाषा एकमात्र खड़ीबोली हिन्दी ही है। साधारणतया 'हिन्दी' शब्द का प्रयोग जनता में इसी अर्थ से किया जाता है, किंतु साथ ही इस भू-भाग की ग्रामीण बोलियाँ- जैसे मारवाड़ी, ब्राज, छत्तीसगाढ़ी, मैथिली आदि को तथा प्राचीन ब्राज, अवधि आदि साहित्यिक भाषाओँ को भी हिन्दी भाषा के अंतर्गत माना जाता है।

एक भाषा का जन-समुदाय अपनी भाषा के विविध भेदों एवं रूपों के माध्यम से एक भाषिक इकाई का निर्माण करता है। विविध भाषिक भेदों के मध्य सम्भाषण की सम्भाव्यता से भाषिक एकता का निर्माण होता है। एक भाषा के समस्त भाषिक -रूप जिस क्षेत्र में प्रयुक्त होते हैं उसे उस भाषा का 'भाषा-क्षेत्र' कहते हैं। एक भाषा का जन-समुदाय अपनी भाषा के विविध भेदों एवं रूपों के माध्यम से एक भाषिक इकाई का निर्माण करता है। हिन्दी भारत के बहुसंख्यक लोगों की भाषा है और उत्तर भारत के दस राज्यों में बोली - समझी जाती है। इन राज्यों के नाम हैं -

1. हिमाचल प्रदेश, 2. हरियाणा, 3. दिल्ली 4. उत्तरांचल, 5. उत्तर प्रदेश, 6. राजस्थान, 7. मध्य प्रदेश, 8. छत्तीसगढ़, 9. बिहार, 10. झारखण्ड। इन दस राज्यों को हिन्दी क्षेत्र कहते हैं।

हिन्दी का विकास शौरसेनी, मगधी और अर्धमगधी अपभ्रंश से माना जाता है। इनसे पाँच उप भाषाओं का जन्म हुआ। पश्चिमी हिन्दी, राजस्थानी, पहाड़ी, बिहारी और पूर्वी हिन्दी। इन्हीं से विभिन्न बोलियाँ विकसित हुईं। आज हिन्दी बोलने और प्रयोग करनेवालों की संख्या पंद्रह करोड़ से अधिक है।

Critical Overview /अवलोकन

मनुष्य और मनुष्य के बीच भावों एवं विचारों की आदान-प्रदान केलिए प्रयुक्त शब्द-समूह को भाषा कहते हैं। मनुष्य केलिए अत्यंत आवश्यक सामग्री है - भाषा। बोली ही विकास होते-होते भाषा का पद पर आता है। हिन्दी भाषा विश्व की प्राचीन भाषाओँ में से एक है जो विश्व में तीसरी सर्वाधिक बोली जानेवाली भाषा है। भारत के आलावा हिन्दी और उसकी बोलियाँ विश्व के अन्य देशों में भी बोली पढ़ी व लिखी जाती है।

Recap / पुनरावृत्ति

- विचारों के आदान-प्रदान का सबसे सुगम साधन-'भाषा'
- छोटे से कस्बे या क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषा- बोली
- एक प्रदेश में अथवा प्रदेश के भाग में सामान्य बोलचाल, साहित्य आदि के लिए
- प्रयुक्त होनेवाली भाषा- विभाषा
- साहित्य, धर्म, राजनीति, संस्कृति आदि का मध्यम - साहित्यिक भाषा
- अमीर खुसरो ने अपनी रचनाओं में 'हिन्दी' शब्द का कई बार प्रयोग किया।
- सम्पूर्ण राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करता है- राष्ट्रभाषा
- हिन्दी भारत के बहुसंख्यक लोगों की भाषा है।
- उत्तर भारत के दस राज्यों में बोली-समझी जाती है।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. एक क्षेत्र विशेष में बोली जाने वाली भाषा के विशिष्ट रूप को क्या कहलाता है?
2. एक प्रदेश में अथवा प्रदेश के भाग में सामान्य बोलचाल, साहित्य आदि के लिए प्रयुक्त होने वाली भाषा को क्या कहते हैं?
3. परिनिष्ठित भाषा केलिए प्रयुक्त अंग्रेजी शब्द क्या है?
4. 'Rules of Hindi Grammar' किसकी रचना है?
5. 'हिन्दवी' या 'हिन्दी' शब्द किस भाषा का है?
6. हिन्दी बोली जानेवाली उत्तर भारत के किसी दो राज्यों के नाम बताइए।
7. जॉन गिलक्राइस्ट कौन थे?
8. विकास प्रक्रिया के अनुसार भाषा के कितने स्तर होते हैं?

Answers / उत्तर

1. बोली।
2. विभाषा।
3. Standard language
4. जॉन गिलक्राइस्ट
5. फारसी
6. हिमाचल प्रदेश, हरियाणा
7. फोर्ट विलियम कॉलेज के हिन्दी अध्यापक
8. चार

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. 'हिन्दी' शब्द की उत्पत्ति तथा हिन्दी प्रदेशों पर विचार कीजिए।
2. भाषा विकास की प्रक्रिया पर चर्चा कीजिए।
3. 'हिन्दी' शब्द की उत्पत्ति पर विद्वानों में मतभेद है, व्यक्त कीजिए।

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी भाषा का उदगम और विकासः उदयनारायण तिवारी
2. भाषा स्वरूप और संरचनाः हेमचन्द्र पांडे

इकाई 2 हिन्दी भाषा के विविध रूप एवं बोलियाँ

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- हिन्दी भाषा के विभिन्न रूपों के बारे में जानकारी प्राप्त होता है
- हिन्दी भाषा के विभिन्न बोलियों एवं उपबोलियों की जानकारी प्राप्त होती है
- हिन्दी भाषा के रचनात्मक स्वरूप के बारे में पता चलता है
- साहित्यिक हिन्दी के बारे में समझता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

भाषा समाज की आधारशिला होती है। यह मानसिक संकल्पना, सामाजिक यथार्थ और संप्रेषण की इकाई होने के साथ-साथ राष्ट्रीय प्रतीक भी है। किसी भी राष्ट्र की भाषा का राष्ट्र की सांस्कृतिक चेतना और साहित्यिक परम्परा का संवाहक होती है। आज हम जिसे हिन्दी भाषा कहते हैं, उसमें कोई एक भाषा नहीं है, बल्कि इसमें कई प्रदेशों की बोलियाँ सम्मिलित हैं। पश्चिमी हिन्दी तथा पूर्वी हिन्दी की बोलियों से हिन्दी की बोलियों का विकास हुआ। आज हिन्दी भारत की राजभाषा, राष्ट्रभाषा तथा संपर्कभाषा का कार्य करता है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

मातृभाषा, राजभाषा एवं संपर्कभाषा, विज्ञान, वाणिज्य और बाज़ार की भाषा, खड़ी बोली या कौरवी, ब्राजभाषा, हरियाणी, बुन्देली, कन्नौजी

Discussion / चर्चा

2.2.1 हिन्दी भाषा के विविध रूप एवं बोलियाँ

2.2.1.1 हिन्दी भाषा के विविध रूप

हिन्दी हमारी मातृभाषा, राजभाषा एवं संपर्कभाषा है। यह साहित्य की भाषा होने के साथ-साथ तकनीक, विज्ञान, वाणिज्य और बाजार की भाषा भी बन गई है। विदेशों में भी इसका प्रचार-प्रसार है। जनसंचार के माध्यमों का तीव्र गति से विकास होने के उपरांत यह सबसे लोकप्रिय भाषा बन गई है। यह एक जीवित और सशक्त भाषा है। इसने अन्य भाषाओं की ध्वनियों और शब्दों को अपने अंदर आत्मसात कर अपने शब्द-भंडार एवं अभिव्यक्ति को समृद्ध बनाया है तथा राष्ट्रभाषा होने का गौरव प्राप्त किया।

1. **मानक भाषा**

भाषा के स्थिर तथा सुनिश्चित रूप को मानक

या परिनिष्ठित भाषा कहते हैं। भाषाविज्ञान कोश के अनुसार 'किसी भाषा की उस विभाषा को परिनिष्ठित भाषा कहते हैं जो अन्य विभाषाओं पर अपनी साहित्यिक एवं सांस्कृतिक श्रेष्ठता स्थापित कर लेती है तथा उन विभाषाओं को बोलने वाले भी उसे सर्वाधिक उपयुक्त समझने लगते हैं।

मानक भाषा शिक्षित वर्ग की शिक्षा, पत्राचार एवं व्यवहार की भाषा होती है। इसके व्याकरण तथा उच्चारण की प्रक्रिया लगभग निश्चित होती है। मानक भाषा को टकसाली भाषा भी कहते हैं। इसी भाषा में पाठ्य-पुस्तकों का प्रकाशन होता है। हिन्दी, अंग्रेजी, फ्रेंच, संस्कृत तथा ग्रीक इत्यादि मानक भाषाएँ हैं।

2. **बोलचाल की भाषा**

'बोलेचाल की भाषा' को समझने के लिए 'बोली (Dialect) को समझना जरूरी है। 'बोली' उन सभी लोगों की बोलचाल की भाषा का वह मिश्रित रूप है जिनकी भाषा में पारस्परिक भेद को अनुभव नहीं किया जाता है। विश्व में जब किसी जन-समूह का महत्त्व किसी भी कारण से बढ़ जाता है तो उसकी बोलचाल की बोली 'भाषा' कही जाने लगती है, अन्यथा वह 'बोली' ही रहती है। स्पष्ट है कि 'भाषा' की अपेक्षा 'बोली' का क्षेत्र, उसके बोलने वालों की संख्या और उसका महत्त्व कम होता है। एक भाषा की कई बोलियाँ होती हैं क्योंकि भाषा का क्षेत्र विस्तृत होता है।

जब कई व्यक्ति-बोलियों में पारस्परिक सम्पर्क होता है, तब बालेचाल की भाषा का प्रसार होता है। आपस में मिलती-जुलती बोली या उपभाषाओं में हुए आपसी व्यवहार से बोलचाल की भाषा को विस्तार मिलता है। इसे 'सामान्य भाषा' के नाम से भी जाना जाता है। यह भाषा बड़े पैमाने पर विस्तृत क्षेत्र में प्रयुक्त होती है।

3. **सम्पर्क भाषा**

अनेक भाषाओं के अस्तित्व के बावजूद जिस विशिष्ट भाषा के माध्यम से व्यक्ति-व्यक्ति, राज्य-राज्य तथा देश-विदेश के बीच सम्पर्क स्थापित किया जाता है उसे सम्पर्क भाषा कहते हैं। एक ही भाषा परिपूरक भाषा और सम्पर्क भाषा दोनों ही हो सकती है। आज भारत में सम्पर्क भाषा के तौर पर हिन्दी प्रतिष्ठित होती जा रही है जबकि अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर अंग्रेजी सम्पर्क भाषा के रूप में प्रतिष्ठित हो गई है। सम्पर्क भाषा के रूप में जब भी किसी भाषा को देश की राष्ट्रभाषा अथवा राजभाषा के पद पर आसीन किया जाता है तब उस भाषा से कुछ अपेक्षाएँ भी रखी जाती है।

4. **राजभाषा**

जिस भाषा में सरकार के कार्यों का निष्पादन होता है उसे राजभाषा कहते हैं। कुछ लोग राष्ट्रभाषा और राजभाषा में अन्तर नहीं करते और दोनों को समानार्थी मानते हैं। लेकिन दोनों के अर्थ भिन्न-भिन्न हैं। राष्ट्रभाषा सारे राष्ट्र के लोगों की सम्पर्क भाषा होती है जबकि राजभाषा केवल सरकार के कामकाज की भाषा है। भारत के संविधान के अनुसार हिन्दी संघ सरकार की राजभाषा है। राज्य सरकार की अपनी-अपनी राज्य भाषाएँ हैं। राजभाषा जनता और सरकार के बीच एक सेतु का कार्य करती है। किसी भी स्वतंत्र राष्ट्र की उसकी अपनी स्थानीय राजभाषा उसके लिए राष्ट्रीय गौरव और स्वाभिमान का प्रतीक होती है। विश्व के अधिकांश राष्ट्रों की अपनी स्थानीय भाषाएँ हैं और राजभाषा भी। आज हिन्दी हमारी राजभाषा है।

5. **राष्ट्रभाषा**

देश के विभिन्न भाषा-भाषियों में पारस्परिक विचार-विनिमय की भाषा को राष्ट्रभाषा कहते हैं। राष्ट्रभाषा को देश के अधिकतर नागरिक समझते हैं, पढ़ते हैं या बोलते हैं। हैं। किसी भी देश की राष्ट्रभाषा उस देश के नागरिकों के लिए गौरव, एकता, अखंडता और अस्मिता का प्रतीक होती है। महात्मा गांधी ने राष्ट्रभाषा को राष्ट्र की आत्मा की संज्ञा दी है। एक भाषा कई देशों की राष्ट्रभाषा भी हो सकती है; जैसे अंग्रेजी आज अमेरिका, इंग्लैण्ड तथा कानडा इत्यादि कई देशों की राष्ट्रभाषा है। संविधान में हिन्दी को राष्ट्रभाषा का दर्जा तो नहीं दिया गया है लेकिन इसकी व्यापकता को देखते हुए इसे राष्ट्रभाषा कह सकते हैं। दूसरे शब्दों में राजभाषा के रूप में हिन्दी, अंग्रेजी

की तरह न केवल प्रशासनिक प्रयोजनों की भाषा है, भाषा है, बल्कि उसकी भूमिका राष्ट्रभाषा के रूप में भी है। वह हमारी सामाजिक-सांस्कृतिक अस्मिता की भाषा है। महात्मा गांधी जी के अनुसार किसी देश की राष्ट्रभाषा वही हो सकती है जो सरकारी कर्मचारियों के लिए सहज और सुगम हो; जिसको बोलने वाले बहुसंख्यक हों और जो पूरे देश के लिए सहज रूप में उपलब्ध हो। उनके अनुसार भारत जैसे बहुभाषी देश में हिन्दी ही राष्ट्रभाषा के निर्धारित अभिलक्षणों से युक्त कार्यालयी हिन्दी : दैनिक कामकाज में कार्यालयों में प्रयुक्त होने वाली हिन्दी कार्यालयी हिन्दी कही जाती है। प्रशासनिक कार्य आम जनता से संबंधित होता है, इसलिए यह आवश्यक है कि इसमें ऐसी भाषा का प्रयोग किया जाए, जो प्रयुक्ति एवं बोधगम्यता की दृष्टि से सरल, स्पष्ट, सुबोध और औपचारिक हो।

6. **साहित्यिक हिन्दी**

यह संवेदना, सौंदर्य और चमत्कार की भाषा है और भावनाओं तथा संवेदना को जगाती है। इसके अंतर्गत कविता, कहानी, कला तथा साहित्य की विभिन्न विधाओं की भाषा आती है। हिन्दी की अनेक साहित्यिक कृतियाँ साहित्यिक हिन्दी का उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

7. **संसदीय हिन्दी**

संसदीय हिन्दी, हिन्दी भाषा की वह शैली है जो भारत की संसद में उपयोग होती है। यह हिन्दी भाषा का एक औपचारिक और मानक रूप है, जिसमें संसदीय कार्यवाही, भाषण, और अन्य दस्तावेजों के लिए उपयोग किया जाता है।

8. **कार्यालयी हिन्दी**

'कार्यालयी हिन्दी' का अभिप्राय है उस हिन्दी से जिसका प्रयोग किसी सरकारी कार्यालय के प्रशासनिक काम-काज के दौरान किया जाता है और इसके अंतर्गत प्रशासन के विभिन्न विभागों से संबंधित शब्दावली का अधिक प्रयोग होता है। यह सामान्य हिन्दी, साहित्यिक हिन्दी या व्यावसायिक हिन्दी से बिल्कुल भिन्न होती है। इसे कामकाजी हिन्दी भी कहा जाता है। वह हिन्दी का रूप है जो सरकारी कार्यालयों, व्यापारिक संस्थानों और अन्य व्यावसायिक क्षेत्रों में उपयोग किया जाता है। यह हिन्दी भाषा का वह रूप है जिसका प्रयोग प्रशासन, कानून, वाणिज्य, व्यापार, विज्ञान और प्रौद्योगिकी जैसे विभिन्न क्षेत्रों में होता है.

9. **शास्त्रीय हिन्दी**

'शास्त्रीय'(shaastreeya) का अर्थ है 'classical' या 'traditional' या 'established'. यह शब्द किसी चीज को शास्त्र या परंपरा के अनुसार, प्राचीन, या पारंपरिक मानने के लिए प्रयोग किया जाता है। उदाहरण के लिए, शास्त्रीय संगीत या शास्त्रीय नृत्य क्लासिकल संगीत या क्लासिकल डांस को कहते हैं।

10. **जनसंचार माध्यम की भाषा**

जनसंचार माध्यमों में हिन्दी भाषा का प्रयोग व्यापक और महत्वपूर्ण है। समाचार पत्र, रेडियो, टेलीविजन, इंटरनेट और अन्य माध्यमों के माध्यम से हिन्दी भाषा का उपयोग सूचना और विचारों को प्रसारित करने के लिए किया जाता है। हिन्दी भाषा को जनसंचार माध्यमों के रूप में अपनाने से हिन्दी बोलने वालों की संख्या में वृद्धि हुई है, और हिन्दी अब एक वैश्विक भाषा के रूप में भी उभरी है।

भारत में 1957 में 'रेडियो' को 'आकाशवाणी' का नाम दिया गया है। इसके हिन्दी प्रसारण पर ध्यान देने से विदित होता है कि इसमें भाषागत (व्याकरणिक) शुद्धता तथा उच्चारण शुद्धता पर विशेष ध्यान दिया जाता है। प्रसारण को प्रभावी बनाने केलिए उच्चारण में भाषा प्रवाह, बलाघात, अनुतान, मात्रा, विराम आदि के यथोचित प्रयोग पर भी ध्यान दिया जाता है।

मनोरंजन केलिए प्रसारित कार्यक्रमों तथा सामान्य सूचना के कार्यक्रमों में जन सधारण की भाषा प्रयुक्त होती है। किन्तु प्रशासन, विधि, बैंकिंग, वाणिज्य-व्यापार, शिक्षा, खेलकूद, विज्ञान, टेकनोलजी, कृषि, स्वास्थ्य आदि से संबन्धित प्रसारणों में इनमें से प्रत्येक क्षेत्र में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग होता है, जिसे हिन्दी भाषी प्रबुद्ध जनता ही आसानी से समझ सकती है। कार्यक्रम की समय सीमा के कारण लंबे लंबे पदबंध भी प्रयुक्त होता हैं। भिन्न-भिन्न साहित्य-

विधाओं के रेडियो प्रसारणों - कविता पाठ, कहानी पाठ, नाटक प्रसारण, लेख पाठ आदि में शैलीगत भिन्नता परिलक्षित होती है। परिचर्चा में बोलचालवाली सामान्य हिन्दी प्रयुक्त होती है, जिसमें आवश्यकतानुसार संस्कृत, अरबों, फारसी तथा देशज शब्दों का प्रयोग होता है। 'समचार वाचन' (news reading) में एक खास शैली प्रयुक्त होती है।

आकाशवाणी में विशिष्ट शब्द प्रयुक्त होते हैं। कुछ उदाहरण देखिए रेडियो फीचर (Radio feature), समाचार बुलेटिन (news bulletin), अदाकारी परीक्षण/ऑडीशन(Audition), अभिलेखन/ रिकॉडिंग (Recording), उद्घोषक (announcer), उद्घोषणा (announcement) आदि।

2.2.2 हिन्दी भाषा की विभिन्न बोलियाँ

हिन्दी भाषा का क्षेत्र हिमांचल प्रदेश, पंजाब का कुछ भाग, हरियाणा, राजस्थान, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश तथा बिहार में है, जिसे हिन्दी (भाषी) प्रदेश कहते हैं। इस पूरे क्षेत्र में हिन्दी की पाँच उपभाषाएँ हैं, जिनके अन्तर्गत मुख्यतः 17 बोलियाँ हैं:

1. **पश्चिमी हिन्दी:** खड़ी बोली या कौरवी, ब्राजभाषा, हरियाणी, बुन्देली, कन्नौजी
2. **पूर्वी हिन्दी:** अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी
3. **राजस्थानी:** पश्चिमी राजस्थानी (मारवाड़ी), पूर्वी राजस्थानी (जयपुरी), उत्तरी राजस्थानी (मेवाती), दक्षिणी राजस्थानी (मालवी)
4. **पहाड़ी:** पश्चिमी पहाड़ी, मध्यवर्ती पहाड़ी (कुमायूँनी-गढ़वाली)
5. **बिहारी:** भोजपुरी, मगही, मैथिली

2.2.2.1 बोलियाँ

खड़ीबोली: 'खड़ीबोली' शब्द का प्रयोग दो अर्थो में होता हैः एक तो साहित्यिक हिन्दी खड़ीबोली के अर्थ में और दूसरे दिल्ली-मेरठ के आसपास की लोक बोली के अर्थ में। यहाँ दूसरे अर्थ में ही इस शब्द का प्रयोग किया जा रहा है। इसी अर्थ में कुछ लोग 'कौरवी' का भी प्रयोग करते हैं। 'कुरु' जनपद की बोली होने के कारण राहुल सांकृत्यायन ने इसे यह नाम दिया था। 'खड़ीबोली' में खड़ी शब्द का अर्थ विवादास्पद है। कुछ लोगों ने 'खड़ी' का अर्थ 'खरी' (Pure) अर्थात् 'शुद्ध' माना है, तो दूसरों ने 'खड़ी' (Standing)। कुछ अन्य लोग इसका संबंध खड़ीबोली में अधिकता से प्रयुक्त खड़ी पाई (गया, बड़ा, का) तथा उसके ध्वन्यात्मक प्रभाव कर्कशता से जोड़ते हैं। यों अभी तक यह प्रश्न अनिश्चित है। खड़ीबोली या कौरवी का उद्भव शौरसेनी अपभ्रंश के उत्तरी रूप से हुआ है तथा इसका क्षेत्र देहरादून का मैदानी भाग, सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, मेरठ, दिल्ली नगर का कुछ भाग, बिजनौर, रामपुर तथा मुरादाबाद है। लोक साहित्य की दृष्टि से खड़ी बोली बहुत सम्पन्न है और इसमें पवाड़ा, नाटक, लोककथा, लोकगीत आदि पर्याप्त मात्रा में मिलते हैं। इनका काफ़ी अंश प्रकाशित भी हो चुका है। हिन्दी, उर्दू, हिन्दुस्तानी तथा दक्खिनी एक सीमा तक खड़ी बोली पर आधारित हैं।

ब्राजभाषा: 'ब्राज' का पुराना अर्थ 'पशुओं या गौओं का समूह' या 'चरागाह' आदि है। पशु-पालन के प्राधान्य के कारण यह क्षेत्र कदाचित ब्राज कहलाया, और इसी आधार पर इसकी बोली ब्राजभाषा अथवा ब्राजी कही जाती है। इसका विकास शौरसेनी अपभ्रंश के मध्यवर्ती रूप से हुआ है। ब्राजभाषा मथुरा, आगरा, अलीगढ़, धौलपुर, मैनपुरी, एटा, बदायूं, बरेली तथा आसपास के क्षेत्रों में बोली जाती है। साहित्य और लोक साहित्य दोनों ही दृष्टियों से ब्राजभाषा बहुत सम्पन्न है। हिन्दी प्रदेश के बाहर भी भारत के अनेक क्षेत्रों में ब्राजभाषा में साहित्य-रचना होती रही है। सूरदास, तुलसीदास, नंददास, रहीम, रसखान, बिहारी, देव, रत्नाकर आदि इसके प्रमुख कवि हैं।

हरियाणी: हरियाणी का विकास उत्तरी शौरसेनी अपभ्रंश के पश्चिमी रूप से हुआ है। खड़ीबोली, अहीरवाटी, मारवाड़ी, पंजाबी से घिरी इस बोली को कुछ लोग खड़ीबोली का पंजाबी से प्रभावित रूप मानते हैं। इसका क्षेत्र मोटे रूप से हरियाणा, पंजाब का कुछ भाग तथा दिल्ली का देहाती भाग है। हरियाणी में

केवल लोक साहित्य है, जिसका कुछ अंश प्रकाशित भी हो चुका है।

बुन्देलीः 'बुन्देले' राजपूतों के कारण मध्य प्रदेश तथा उत्तर प्रदेश की सीमा के पास के झाँसी, छतरपुर, सागर आदि तथा आस-पास के भाग को बुंदेलखंड कहते हैं। वहीं की बोली बुन्देली या बुन्देलखण्डी है। इसका क्षेत्र झाँसी, जालौन, हमीरपुर, ग्वालियर, भूपाल, ओरछा, सागर, नरसिंहपुर, सिवनी, होशंगाबाद तथा आस-पास का क्षेत्र है। बुन्देली का विकास शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ है। बुन्देली में लोक साहित्य काफ़ी है, जिनमें इसुरी के फाग बड़े प्रसिद्ध हैं। कहा जाता है कि हिन्दी प्रदेश की प्रसिद्ध लोकगाथा 'आल्हा' जिसे हिन्दी साहित्य में श्री स्थान मिला है मूलतः बुन्देली की एक उपबोली बनाफरी में लिखा गया था।

कन्नौजीः कन्नौज (संस्कृत कान्यकुब्ज) इस बोली का केन्द्र है, अतः इसका नाम कन्नौजी पड़ा है। यह इटावा, फरूखाबाद, शाहजहाँपूर, कानपुर, हरदोई, पीलीभीत आदि में बोली जाती है। कन्नौजी, शौरसेनी अपभ्रंश से निकली है। यह ब्राजभाषा से इतनी अधिक समान है, कि कुछ लोग इसे ब्राजभाषा की ही एक उपबोली मानते हैं। कन्नौजी में केवल लोक-साहित्य मिलता है, जिसमें से कुछ अंश प्रकाशित भी हो चुका है।

अवधीः इस बोली का केन्द्र अयोध्या है। 'अयोध्या' का ही विकसित रूप 'अवध' है, जिससे 'अवधी' शब्द बना है। इसके उद्‌भव के संबंध में विवाद है। अधिकांश विद्वान इसका सम्बन्ध अर्धमागधी अपभ्रंश से मानते है, किन्तु कुछ लोग पालि की इससे समानता के आधार पर इस मत को नहीं मानते। अवधी का क्षेत्र लखनऊ, इलाहाबाद, फतेहपुर, मिर्जापुर (अंशतः), उन्नाव, रायबरेली, सीतापुर फ़ैजाबाद, गोंडा, बस्ती, बहराइच, सुल्तानपुर, प्रतापगढ़, बाराबंकी आदि हैं। अवधी में साहित्य तथा लोकसाहित्य दोनों ही पर्याप्त मात्रा में हैं। इसके प्रसिद्ध कवि मुल्ला दाऊद, कुतुबन, जायसी, तुलसीदास, उसमान, सबलसिंह आदि है।

बघेलीः बघेले राजपूतों के आधार पर रीवां तथा आसपास का क्षेत्र बघेलखंड कहलाता है और वहाँ की बोली को बघेलखंडी या बघेली कहते हैं। बघेली का उद्‌भव अर्धमागधी अपभ्रंश के ही एक क्षेत्रीय रूप से हुआ है। यद्यपि जनमत इसे अलग बोली मानता है, किंतु भाषा- विज्ञानिक स्तर पर यह अवधी की ही एक उपबोली ज्ञात होती है, और इसे दक्षिणी अवधी कह सकते हैं। इसका क्षेत्र रीवाँ, नागौद, शहडोल, सतना, मैहर तथा आस-पास का क्षेत्र है। कुछ अपवादों को छोड़कर बघेली में केवल लोक साहित्य है।

छत्तीसगढ़ीः मुख्य क्षेत्र छत्तीसगढ़ होने के कारण इसका नाम छत्तीसगढ़ी पड़ा है। अर्धमागधी अपभ्रंश के दक्षिणी रूप से इसका विकास हुआ है। इसका क्षेत्र सरगुजा, कोरिया, बिलासपुर, रायगढ़, खैरागढ़, रायपुर, दुर्ग, राजनाँदगाँव, काँकेर आदि है। छत्तीसगढ़ी में केवल लोक साहित्य है।

पश्चिमी राजस्थानीः राजस्थानी का यह रूप पश्चिमी राजस्थान अर्थात् जोधपुर, अजमेर, किशनगढ़, मेवाड़, सिरोही, जैसलमेर, बीकानेर आदि में बोला जाता है। इसे मारवाड़ी भी कहते हैं। शौरसेनी अपभ्रंश के उपनागर रूप से इसका विकास हुआ है। मारवाड़ी में साहित्य तथा लोकसाहित्य दोनों ही पर्याप्त मात्रा में है। मीराबाई के पद इसी में लिखे गए हैं।

उत्तरी राजस्थानीः उत्तरी राजस्थान में इसका क्षेत्र अलवर, गुड़गाँव, भरतपुर तथा आसपास है। इसे मेवाती भी कहते हैं। मेवाती का नाम 'मेव' जाति के इलाके मेवात के नाम पर पड़ा है। इसकी एक मिश्रित बोली अहीरवाटी है जो गुड़गाँव, दिल्ली तथा करनाल के पश्चिमी क्षेत्रों में बोली जाती है। इस पर हरियानी का बहुत प्रभाव है। मेवाती में केवल लोक-साहित्य है। उत्तरी राजस्थानी का उद्‌भव शौरसेनी अपभ्रंश के उपनागर रूप से हुआ है।

पूर्वी राजस्थानीः राजस्थान के पूर्वी भाग में जयपुर, अजमेर, किशनगढ़ आदि में यह बोली जाती है। इसकी प्रतिनिधि बोली जयपुरी है जिसका केन्द्र जयपुर है। जयपुरी को ढूंढाणी भी कहते हैं, क्योंकि इस क्षेत्र का पुराना नाम ढूंढाण है। शौरसेनी अपभ्रंश के उपनागर रूप से विकसित इस बोली में केवल

लोक-साहित्य है।

दक्षिणी राजस्थानीः इन्दौर, उज्जैन, देवास, रतलाम, भोपाल, होशंगाबाद तथा आसपास इसका क्षेत्र है। इसकी प्रतिनिधि बोली मालवी है, जिसका मुख्य क्षेत्र मालवा है। शौरसेनी अपभ्रंश के उपनागर रूप से विकसित इस बोली में कुछ साहित्य तथा पर्याप्त लोक साहित्य है।

पश्चिमी पहाड़ीः जौनसार, सिरमौर, शिमला, मंडी, चंबा तथा आसपास इसका क्षेत्र है। इसे प्रायः खस नामक एक कल्पित अपभ्रंश से विकसित माना जाता है किंतु भोलानाथ तिवारी के विचार में यह शौरसेनी अपभ्रंश के उत्तरी रूप से विकसित है। पश्चिमी पहाड़ी में केवल लोक-साहित्य मिलता है।

मध्यवर्ती पहाड़ीः शौरसेनी अपभ्रंश (एक मत से खस अपभ्रंश) से विकसित इस बोली का क्षेत्र गढ़वाल, कुमायूँ, तथा आसपास का कुछ क्षेत्र है। वस्तुतः यह गढ़वालों और कुमायूंनी दो बोलियों का सामूहिक नाम है। इन बोलियों में लोक-साहित्य तो पर्याप्त मात्रा में है, साथ ही कुछ साहित्य भी है।

भोजपुरीः बिहार के शाहाबाद जिले के भोजपुर गाँव के नाम के आधार पर इस बोली का नाम भोजपुरी पड़ा है। मागधी अपभ्रंश के पश्चिमी रूप से विकसित इस बोली का क्षेत्र बनारस (अंशतः), जौनपुर (अंशतः), मिर्जापुर (अंशतः), गाजीपुर, बलिया, गोरखपुर, देवरिया, आजमगढ़, बस्ती, शाहाबाद, चंपारन, सारन तथा आसपास का कुछ क्षेत्र है। हिन्दी प्रदेश की बोलियों में भोजपुरी के बोलने वाले सबसे अधिक हैं। इसमें केवल लोक-साहित्य मिलता है। इधर कुछ वर्षो से साहित्य की रचना भी हुई है। ये दोनों ही पर्याप्त मात्रा में प्रकाशित हैं।

मगही - संस्कृत 'मगध' से विकसित शब्द 'मगह' पर इसका नाम आधारित है। मागधी अपभ्रंश से विकसित यह बोली पटना, गया, पलामू, हजारीबाग, मुंगेर, भागलपुर में तथा आसपास के क्षेत्रों में बोली जाती है। इसमें लोक-साहित्य काफी है। कुछ साहित्य भी है।

मैथिलीः मागधी अपभ्रंश के मध्यवर्ती रूप से विकसित यह बोली हिन्दी क्षेत्र और बंगाली क्षेत्र की सन्धि पर मिथिला में बोली जाती है। 'मिथिला' से ही इस बोली के नाम का संबंध है। दरभंगा, मुजफ्फरपुर, पुनिया, तथा मुंगेर आदि में इसका क्षेत्र है। लोक-साहित्य की दृष्टि से मैथिली बहुत सम्पन्न है, साथ ही इसमें साहित्य-रचना अत्यंत प्राचीन काल से होती चली आई है। हिन्दी साहित्य को विधापति जैसे रससिद्ध कवि देने का श्रेय मैथिली को ही है। इनके अतिरिक्त गोविन्ददास, रणजीतलाल, हरिमोहन झा आदि भी इसके अच्छे साहित्यकार हैं।

Critical Overview /अवलोकन

हिन्दी एक समृद्ध भाषा है। हिन्दी जैसी समृद्ध भाषाएँ अपना विरासत विभिन्न जनपदों व परिवेशों में कर लेती है। अतः उनका जनपद विस्तृत हो जाता है। हिन्दी भाषा के क्षेत्रीय प्रसार को 'हिन्दी भाषी क्षेत्र' कहा गया है। इसमें दिल्ली, उत्तरप्रदेश, बिहार, झारखण्ड, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, उत्तराखण्ड, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान इत्यादि प्रदेश आते हैं। इन प्रदेशों में बोली जानेवाली बोलियों को मिलाकर हिन्दी भाषी प्रदेश बनता है।

Recap / पुनरावृत्ति

- हिन्दी भाषा की उपभाषाएँ - पश्चिमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी, राजस्थानी, पहाड़ी, बिहारी
- बिहारी - भोजपुरी, मगही, मैथिली
- हिन्दी, उर्दू, हिन्दुस्तानी तथा दक्खिनी एक सीमा तक खड़ी बोली पर आधारित हैं
- हरियाणी का विकास उत्तरी शौरसेनी अपभ्रंश के पश्चिमी रूप से
- कन्नौजी, शौरसेनी अपभ्रंश से
- अवधी के प्रसिद्ध कवि मुल्ला दाऊद, कुतुबन, जायसी, तुलसीदास, उसमान, सबलसिंह आदि
- मुख्य क्षेत्र छत्तीसगढ़ होने के कारण नाम छत्तीसगढ़ी पड़ा
- पश्चिमी राजस्थानी को मारवाड़ी भी कहते हैं
- उत्तरी राजस्थानी को मेवाती भी कहते हैं

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. भाषा के स्थिर तथा सुनिश्चित रूप को क्या कहते हैं?
2. अपभ्रंश को "पुरानी हिन्दी' की संज्ञा किसने दी?
3. खड़ीबोली का दूसरा नाम क्या है?
4. पूर्वी हिन्दी के अंतर्गत कितनी बोलियाँ आती हैं? वे क्या-क्या हैं?
5. पश्चिमी हिन्दी के अंतर्गत कितनी बोलियाँ आती हैं? वे क्या-क्या हैं?
6. पूर्वी हिन्दी का विकास किस अपभ्रंश से हुआ है?
7. पश्चिमी हिन्दी का विकास किस अपभंश से हुआ है?

Answers / उत्तर

1. मानक या परिनिष्ठित भाषा।
2. चन्द्रधर शर्मा गुलेरी।
3. कौरवी।
4. तीन। अवधि, बघेली और छत्तीसगढ़ी।
5. पाँच। खड़ीबोली, ब्राज, कनौजी, बुन्देली, बंगारू।
6. मागधी अपभंश से।
7. शौरसेनी अपभ्रंश से।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. हिन्दी के विभिन्न बोलियों पर विचार कीजिए।
2. हिन्दी भाषा के विभिन्न रूपों के बारे में चर्चा कीजिये।
3. हिन्दी भाषा के रचनात्मक स्वरूप के बारे में टिप्पणी लिखिए।
4. साहित्यिक हिन्दी और कार्यालयीन हिन्दी में क्या अंतर हैं।
5. राजभाषा और राष्ट्रभाषा में क्या अंतर है?

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास : उदयनारायण तिवारी
2. भाषा स्वरूप और संरचना : डॉ. हेमचन्द्र पण्डे
3. हिन्दी भाषा का इतिहास : भोलानाथ तिवारी

SGOU

इकाई 3 आधुनिक हिन्दी भाषा के प्रकार एवं प्रयुक्तियाँ

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- हिन्दी के विविध रूपों को समझाती है
- हिन्दी के विविध प्रयोगों को जानती है
- हिन्दी शब्द समूह की जानकारी प्राप्त होती है
- देवनागरी लिपि की उत्पत्ति की जानकारी प्राप्त होती है
- देवनागरी लिपि की विशेषताएँ समझता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

देवनागरी लिपि में लिखित खड़ीबोली हिन्दी का प्रयोग विविध रूपों में भारत में किया जाता है। उर्दू, रेख्ता, हिन्दुस्तानी, दक्खिनी आदि हिन्दी के विविध रूप हैं। साथ ही साथ मानक भाषा, राष्ट्रभाषा, राजभाषा आदि रूपों में भी इसका प्रयोग किया जाता है। विश्वभाषा के रूप में भी आज हिन्दी की गणना की जाती है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

हिन्दी भाषा के विविध रूप, विविध प्रयोग, हिन्दी शब्द-समूह, देवनागरी लिपि, उत्पत्ति एवं विकास, देवनागरी लिपि की विशेषताएँ।

Discussion / चर्चा

2.3.1 हिन्दी भाषा के विविध रूप

हिन्दी-खड़ीबोली से आधुनिक मानक हिन्दी का विकास हुआ है। खड़ीबोली का विकास 19 वीं शताब्दी में हुआ। सबसे पहले अमीर खुसरो ने हिन्दी खडीबोली में रचना की जिसे निम्न दोहा दर्शाता है-

‘गोरी सोये सेज पर, मुख पर डाले केश। चल खुसरू घर अपने, रेन भई चहूँ देश।

मध्यकाल में ब्राजभाषा और अवधी साहित्यिक भाषाएँ थी। लेकिन जनसम्पर्क के लिए हिन्दी का प्रयोग होता था। बाद में भारतेंदु, द्विवेदी, प्रेमचंद, शुक्ल, त्रिपाठी निराला आदि ने इसके विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। ब्रिटिश काल में दयानंद सरस्वती, गाँधीजी, तिलक आदि ने हिन्दी के प्रयोग से इसे सशक्त किया। इस प्रकार हिन्दी का महत्त्व उत्तरोत्तर बढ़ता गया। स्वतंत्रता उपरांत यह राजभाषा के रूप में परिणित हो गई। हिन्दी में दूसरी विदेशी भाषाओँ का भी प्रभाव दिखाई देता है, जैसे- अरबी,

फारसी, अंग्रेजी आदि। आज हिन्दी अन्तर्राष्ट्रीय रूप में स्वीकृत हो चुकी है। फिजी, मारीशस, कनाडा, गुआना आदि देशों में हिन्दी के विभिन्न रूप देखने को मिलते हैं।

उर्दू: यह फारसी लिपि में लिखी जाती है। इसका जन्म भी खड़ीबोली से ही हुआ है। इसीलिए विद्वान हिन्दी और उर्दू को खड़ीबोली की बेटियाँ मानते हैं। ब्रिटिशकाल से पहले यह हिन्दू-मुसलमान दोनों की भाषा थी परन्तु ब्रिटिशकाल के दौरान साम्प्रदायिकता के कारण भाषाओँ का वर्गीकरण हो गया। उर्दू की प्रारम्भिक पुस्तक 'बानो बहार' 18 वीं सदी में लिखित मानी जाती है। उर्दू के प्रारम्भिक कवियों में इब्राहिम आदिलशाह, मुहम्मद कुली कुतुबशाह आदि प्रमुख हैं। रामधारी सिंह दिनकर उर्दू का जन्म दक्षिण भारत से मानते हैं। धीरे-धीरे अरबी, फारसी और हिन्दी के मेल से उर्दू का जन्म हुआ। उर्दू में अरबी फारसी और तुर्की शब्दावली की बहुलता है। उर्दू पाकिस्तान की राष्ट्रभाषा है। साहित्यिक दृष्टि से उर्दू का एक विशेष स्थान है। भारतीय संविधान में उर्दू एक स्वतंत्र भाषा के रूप में दर्ज है।

रेख्ता: इसका शाब्दिक अर्थ है - गिरी हुई। फ़ारसी शब्दों को सरल करके बोलचाल की जो भाषा बनी उसे रेख्ता कहा गया है।

दक्खिनी: इसे हिंदवी भी कहा जाता है। तुग़लक़ द्वारा राजधानी बदलकर दक्षिण में जाने पर उत्तरी हिन्दी भाषी लोगों का दक्षिण भाषी लोगों से सम्पर्क पर नई भाषा बनी जो दक्खिनी कहलाई। दक्खिनी शब्द का पहला प्रयोग 17 वीं शताब्दी में दिखाई देता है। दक्खिनी शब्द का प्रयोग दक्षिण की भाषा के रूप में किया जाता है। भारत में मुसलमानों के आने के बाद यह दक्षिण पथ दक्खिन कहलाया। इसका प्रयोग बीजापुर, गोलकुंडा, अहमदपुर, बरार, मुंबई और मध्य प्रदेश तक होता है। यह कोई स्वतंत्र भाषा नहीं बल्कि खड़ीबोली का ही एक रूप है। गार्सा द तासी इसे हिन्दी का एक रूप मानते हैं। उनका मानना है कि दक्षिण में हिन्दू -मुसलमानों द्वारा प्रयोग के कारण यह दक्खिनी कहलाई। गियर्सन इसे हिन्दुस्तानी का एक रूप मानते हैं। इस पर दूसरी भारतीय भाषाओँ का भी प्रभाव दिखाई देता है। इसमें पर्याप्त साहित्य मिलता है। इसकी लिपि उर्दू के समान फारसी है इसे गूजरी भी कहा जाता है। 15 वीं से 18 वीं में इसे बहमनी वंश तथा अन्य राजाओं का भी आश्रय मिला। इसके प्रारम्भिक साहित्यकार है - ख्वाजा बंदानवाज गेसूदराज (रचना-मिराजुल आशिकीन)। अन्य साहित्यकार-शाह मीराजी, गुलाम अली, सैयद मुहम्मद हुसैनी, शाह बुरहानुद्दीन, अब्दुल्ला बेलूरी, शेख असरफ, निजामी आदि।

हिंदुस्तानी: हिन्दुस्तानी शब्द का प्रयोग एक शैली के लिए होता है। ईसाई पादरी, यूरोपीय यात्री और अंग्रेजकालीन कर्मचारी हिन्दी से अधिक हिन्दुस्तानी शैली का प्रयोग करते थे। सन् 1800 में फोर्ट विलयम कॉलेज की स्थापना के बाद वहाँ हिन्दुस्तानी विभाग की स्थापना की गई। फोर्ट विलियम कॉलेज के प्राचार्य जॉन गिलक्राईस्ट ने इसे ग्रामीण हिन्दी और उर्दू दो रूपों में ग्रहण किया है। यहाँ हिन्दुस्तानी के नाम पर उर्दू की पढाई होती थी। डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी ने इसका प्रयोग काल 17 वीं शताब्दी स्वीकार किया है। डॉ. भोला नाथ तिवारी ने 15 वीं शताब्दी से पहले माना है। बाबर की आत्मकथा 'तुजुके बाबरी' में हिन्दुस्तानी शब्द का प्रयोग किया गया है। हिन्दुस्तानी के प्रबल समर्थक और प्रचारक गाँधी जी के मत में हिन्दुस्तानी वह भाषा है जिसको उत्तर में हिन्दू और मुसलमान बोलते हैं, जो नागरी अथवा फारसी लिपि में लिखी जाती है। लेकिन उन्होंने 1935 के अधिवेशन में हिन्दी को राष्ट्रीय भाषा घोषित कर दिया। सैय्यद महमूद, ताराचंद, भगवान दास, जाकिर हुसैन आदि ने हिन्दुस्तानी आन्दोलन को आगे बढाया। कांग्रेस का समस्त कार्य हिन्दुस्तानी में ही होता था।

2.3.2 हिन्दी भाषा के विविध प्रयोग

स्वतंत्रता आन्दोलन के सिलसिले में हिन्दी भाषा उत्तर-दक्षिण पूरब-पश्चिम की संपूर्ण जनता को एक कड़ी में बांधने का साधन सिद्ध हुई थी, क्योंकि जाने-

अनजाने में यह भाषा संपूर्ण भारत की जनता के बीच विचारों के आदान-प्रदान के मध्यम के रूप में विकसित हो गयी थी। इसी अर्थ में गांधीजी ने इसे 'राष्ट्रभाषा' नाम से अभिहित किया था। फिर संविधान बन जाने पर इसे 'राजभाषा' का स्थान प्राप्त हुआ। देश की वैज्ञानिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक प्रगति के साथ सामान्य भाषा हिन्दी के अनेक रूप विकसित हुए जैसे :-

मानक भाषाः किसी विस्तृत प्रदेश में भाषा के अनेक रूप प्रचलित हैं, जिन्हें उस भाषा की बोलियाँ कहते हैं। उदाहरण केलिए मलयालम भाषा उत्तर केरल, मध्य केरल तथा दक्षिण केरल में अपनी विशिष्ट शैलियों में व्यवहृत होती है। शिष्ट जनों के बीच व्यवहार केलिए, साहित्य-रचना केलिए, सामाजिक-धार्मिक आवश्यकताओं केलिए भाषा का एक आदर्श रूप प्रचलित रहता है, इसी को भाषा का 'मानक रूप'(Standard Form) कहते हैं।

साहित्यिक भाषाः भाषा का मानक रूप ही सामान्य रूप से साहित्य में भी व्यवह्मत होता है। साथ ही, यह भी ध्यान रखने की बात है कि सामान्य व्यवहार की अपेक्षा यह साहित्य का ज़रा ऊँचा स्तर होता है। छंद, रस, अलंकार, ध्वनि, शैली-भेद आदि के कारण भाषा कुछ विशिष्ट रूप ग्रहण करती है, जिससे भाषा के सौन्दर्य में वृद्धि होती है, उसमें एक विशेष गरिमा आ जाती है, विशेष चमत्कार पैदा हो जाता है। भाषा के इस रूप को साहित्यिक भाषा कह सकते हैं।

राष्ट्रभाषाः सामान्य रूप से यह माना जाता है कि किसी राष्ट्र की अपनी भाषा राष्ट्रभाषा होती है। किसी देश की अपनी वह भाषा जो देश की सारी जनता के मन में एकता के भाव पैदा करें, जनता के मन में राष्ट्रीयता पैदा करें, वही भाषा 'राष्ट्रभाषा' (National language) नाम की अधिकारिणी होती है। बहुभाषी देशों में कोई एक भाषा अपने आप यह स्थान ग्रहण कर लेती है, अर्थात् जनता द्वारा अपने आप स्वीकृत कर ली जाती है। किसी भाषा के 'राष्ट ्भाषा' बनने केलिए सरकारी अथवा संसदीय मान्यता की कोई आवश्यकता नहीं होती। गाँधीजी ने हिन्दी को 'राष्ट्रभाषा' का स्थान इसीलिए दिया कि इस भाषा में भारत के भिन्न-भिन्न प्रदेशों में धार्मिक, सामाजिक व व्यवसायिक क्षेत्रों में अपना स्थान बना लिया था।

राज भाषाः किसी देश की सरकार द्वारा शासन की सुविधा केलिए प्रशासना के माध्यम के रूप में स्वीकृत तथा मान्यता प्राप्त भाषा ही 'राजभाषा' होती है। इसे अंग्रेजी में Official language कहते हैं। देश भर के विभिन्न भाषा-भाषी प्रदेशों के कार्यालयों में व्यवहार केलिए सरकार द्वारा नियम बनाकर के स्वीकृत भाषा राजभाषा होती है। सामान्य रूप से किसी भी देश की राष्ट्रभाषा ही उस देश की राजभाषा के रूप में स्वीकृत होती है। संविधान की धारा 343 के अनुसार भारतवर्ष की राजभाषा देवनागरी लिपि में लिखित हिन्दी होती है। इस तरह सरकारी कामकाज अथवा प्रशासन केलिए प्रयुक्त होनेवाली सामान्य भाषा ही राजभाषा अथवा प्रशासनिक भाषा होती है।

वैज्ञानिक तथा तकनीकी भाषाः भैतिक विज्ञान, रसायन शास्त्र, वनस्पति विज्ञान, प्राणी विज्ञान, गणित, आयुर्विज्ञान, अंतरिक्ष विज्ञान आदि विज्ञान संबंधी विषयों में कुछ निश्चित तकनीकी शब्दावली होती है। इन विषयों में सामान्य शबदावली से काम नहीं चला सकते। ज्यामिति(Geometry) के तकनीकी शब्दों के अर्थ उस विषय के अन्दर निश्चित और पारिभाषित होते हैं। इसी तरह हर विज्ञान शाखा के पारिभाषित शब्द होते हैं, उन विषयों संबंधी चर्चा में उन्हीं शब्दों का प्रयोग करना होता है। तकनीकी शब्दों की यह विशेषता होती है कि एक संकल्पना केलिए एक ही तकनीकी शब्द होता है और एक तकनीकी शब्द का एक ही अर्थ होता है।

कानूनी भाषाः विधि या कानून के क्षेत्र में भारत की आज़ादी से पहले हिन्दी का पदार्पण नहीं हुआ था। अंग्रेजी ही कानून की भाषा रही, कभी - कभी उर्दू भी रही। अतः हिन्दी में अब तक कानूनी भाषा का पूर्ण विकास नहीं हो पाया है। न्यायालय में प्रयुक्त भाषा बड़ी बारीक होती है, शब्दों के सूक्ष्म अर्थ होते हैं।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

कानून एक ऐसे क्षेत्र हैं, जिसमें बड़ी-से-बड़ी सावधानी की आवश्यकता होती है। यहाँ पर भाषा का प्रसाद गुण देखा नहीं जा सकता, शब्दों के अर्थ की सही व्याख्या ही यहाँ मुख्य होती है।

व्यावहारिक भाषा: हिन्दी साहित्यिक भाषा के रूप में जटिल, गहन और सूक्ष्म भावों को अभिव्यक्त करने में सक्षम हो गयी है। सामाजिक और राजनैतिक आवश्यकताओं के अनुरूप राष्ट्रभाषा, राजभाषा, संपर्कभाषा आदि रूपों में भी यह काफी विकास पा चुकी है। आज के नए युग में सामाजिक चिंतन, अनुसंनधान, आविष्कार तथा ज्ञान-विज्ञान का नवीकरण हो रहा है, तदनुरूप हिन्दी को भी अपने अभिव्यक्ति कौशल को समर्थ और सक्षम सिद्ध करने की आवश्यकता आ पड़ी है। हिन्दी के इस व्यावहारिक रूप को नज़र में रखते हुए बड़ी वेग के साथ नयी शब्दावलियों और अभिव्यक्तियों का निर्माण तथा विकास हो रहा है। तदनुसार सरकारी व गैर-सरकारी स्तर पर प्रशिक्षण योजनाएँ भी चालू हो गयी हैं। हिन्दी के इस नवविकसित रूपों को व्यावहारिक हिन्दी कहा जा सकता है।

2.3.3 हिन्दी के शब्द समूह

हर भाषा का अपना शब्द समूह है। हिन्दी भाषा में व्युत्पत्ति की दृष्टि से चार प्रकार के शब्द हैं - तत्सम, तद्‌भव, देशज, विदेशज तथा आर्योत्तर भाषाओं के शब्द।

1. **तत्सम शब्द** : हिन्दी भाषा समूह का मुख्य स्रोत संस्कृत है। संस्कृत के जिन शब्दों को बिना किसी रूप परिवर्तन के साथ हिन्दी का अपना लिया गया है, उन्हें तत्सम शब्द कहते हैं।

जैसे- माता, पिता, सूर्य, चन्द्र, मति, पुस्तक आदि।

2. **तद्‌भव** : हिन्दी शब्द समूह में सबसे अधिक संख्या तद्‌भव शब्दों की है संस्कृत के जो शब्द समूह हिन्दी की प्रकृति के अनुसार अनुकूल परिवर्तन करके स्वीकृत हुए हैं, उन्हें तद्‌भव शब्द कहते हैं।

जैसे : कृष्ण- कान्हा हस्त-हाथ अंगुली- ऊँगली अग्नि- आग ......।

3. **देशज शब्दः** हिन्दी भाषा प्रदेश के अपने शब्द जिनका स्रोत और कहीं खोजा नहीं जा सकता देशज शब्द कहलाते हैं।

जैसे- नाव, लोटा, पेड़, गाड़ी आदि।

4. **आर्योत्तर भाषाओं के शब्द :** भारत में जो आर्योत्तर भाषाएँ बोली जाती हैं, उससे भी कुछ शब्द हिन्दी में आ गए हैं। तमिल, तेलुगु, मलयालम, कन्नड़ आदि द्रविड भाषाओं तथा मुण्डा, कोला आदि आग्नेय परिवार की भाषाओं के शब्द हिन्दी में पाए जाते हैं।

जैसे : द्रविड़ शब्द - नीर, मीन, पल्ली, पिल्ला, चिल्लर ....।

5. **विदेशज शब्दः** विदेशी भाषाओं के संपर्क से हिन्दी में कई आगत शब्द प्रचलित हैं। उदाहरणार्थ एक संक्षिप्त सूची नीचे दी जाती है-

अंग्रेजी- डॉक्टर, टिकट, रसीद, बिल, चेक

पुर्तगाली- कमीज़, कप्तान, अलमारी, काजू

फ्रेंच - कूपन, अंग्रेज़, कारतूस

डच - तुरूप, चिड़ी

फारसी - आफ़त, आवाज़, पेशा.मुर्दा

तूर्की - कुली, चाकू, तोप

अरबी - किस्सा, कीमत, मुसाफिर, महल, मशहूर

हिन्दी के शब्द भंडार काफी विशाल और विस्तृत है। पारिभाषिक शब्दावली के सन्दर्भ में अंग्रेजी तथा अन्य विदेशी भाषाओं के शब्द सहज रूप से स्वीकृत हुए हैं। राजभाषा और संपर्क भाषा का स्तर प्राप्त होने के बाद हिन्दी ने अनेक भारतीय भाषाओं के शब्दों को उदारता से अपना लिया है।

2.3.4 देवनागरी लिपि

देवनागरी लिपि वर्तमान समय में प्रचलित समस्त लिपियों में सर्वाधिक व्यवस्थित, समर्थ एवं वैज्ञानिक लिपि है। हिन्दी भाषा की लिपि देवनागरी है। हिन्दी

के अतिरिक्त अनेक भारतीय भाषाएँ जैसे संस्कृत, मराठी, मैथिली, कोंकणी एवं कुछ विदेशी भाषाएँ भी देवनागरी में लिखी जाती हैं। उदाहरणार्थ नेपाली भाषा देवनागरी लिपि में ही लिखी जाती है। यह लिपि भारत की अनेक लिपियों के सन्निकट है।

2.3.4.1 देवनागरी लिपि की उत्पत्ति

संसार की सभी भाषाओं को लिखने के लिए किसी न किसी लिपि का प्रयोग किया जाता है। उसी प्रकार देवनागरी भी एक लिपि है जिसका प्रयोग मूलतः हिन्दी भाषा को लिखने के लिए किया जाता है। देवनागरी लिपि की उत्पत्ति मूलतः ब्राह्मी लिपि से हुई है। प्राचीन समय में आर्यों के द्वारा प्रयुक्त की गई ब्राह्मी लिपि, संभवतः दुनिया की सर्वाधिक परिपूर्ण प्राचीन लिपि है। समस्त भारतीय लिपियों का जन्म (उर्दू और सिंधी के अतिरिक्त) ब्राह्मी लिपि से हुआ है। तीसरी - चौथी शताब्दी से ही भारतवर्ष में ब्राह्मी लिपि का प्रचलन था। इसी ब्राह्मी लिपि से देवनागरी लिपि विकसित हुई और सातवीं शताब्दी के आसपास से व्यवह्मत होने लगी। कुछ विद्वान इसे ब्राह्मी लिपि ही मानते हैं जिसमें किंचित परिवर्तन के साथ उसका नाम देवनागरी हो गया। अर्थात् देवनागरी लिपि का विकास ब्राह्मी लिपि से हुआ है। फिर भी, यहाँ एक बात ध्यान रखनी आवश्यक है कि देवनागरी लिपि भले ही ब्राह्मी से उद्भूत हो, किन्तु अपने विकासक्रम में फारसी, गुजराती, रोमन आदि लिपियों से भी तत्वों को ग्रहण किया और एक परिपूर्ण लिपि के रूप में विकसित हुई। यथा- विराम चिह्नों का अधिकाधिक प्रयोग देवनागरी में, रोमन लिपि के प्रभाव से है। हिन्दी भाषा की अनेक विशेषताएँ देवनागरी लिपि के प्रयोग के कारण हैं।

2.3.4.2 देवनागरी लिपि का नामकरण

इस लिपि के नामकरण के विषय में विद्वानों में मतभेद हैं। देवनागरी के नामकरण से संबंधित निम्नलिखित विचारधाराएँ हैं जिनके आधार पर इस लिपि के नामकरण का निर्णय किया जा सकता है-

- देवनागरी लिपि के नामकरण के संबंध में पहला और प्रमुख सिद्धान्त यह है कि 'देवनगर' में प्रयोग के कारण इस लिपि का नाम देवनागरी पड़ा। प्राचीन काल में देवी-देवताओं की पूजा कुछ विशेष संकेतों और चिह्नों के द्वारा होती थी जो विभिन्न प्रकार की आकृतियों यथा- त्रिकोण, चतुर्भुज आदि के मध्य लिखे जाते थे। इन आकृतियों को 'देवनगर' कहा जाता था। देवनगर के मध्य लिखे जाने के कारण इस लिपि का नाम देवनागरी पड़ा।
- गुजरात के देवनगर नामक स्थान से संबंधित होने के कारण इस लिपि का नामकरण देवनागरी के रूप में हुआ, यह सिद्धान्त भी भाषाविदों के मध्य प्रचलित है। देवनागरी लिपि का सर्वाधिक प्राचीन प्रामाणिक लेख गुजरात में ही (706 ई0) प्राप्त हुआ जो इस सिद्धान्त की पुष्टि करता है।
- अपने प्रादुर्भाव के तुरंत बाद इस लिपि ने संस्कृत भाषा को सुशोभित किया। चूँकि संस्कृत को देवभाषा कहा जाता है, इसलिए इसका नाम देवनागरी लिपि हो गया।
- गुजरात के नागर विद्वानों के द्वारा प्रयोग किए जाने के कारण भी कुछ विद्वान इसका नाम देवनागरी होना मानते हैं।
- नगरों में प्रचलित होने के कारण इसका नाम देवनागरी पड़ा, कुछ विद्वान ऐसा भी मानते हैं।

2.3.4.3 देवनागरी लिपि की विशेषताएँ

1. देवनागरी लिपि ध्वन्यात्मक है। ध्वन्यात्मकता देवनागरी लिपि की सर्वप्रमुख विशेषता है। ध्वन्यात्मकता को सरल भाषा में समझें तो इसका अर्थ है - 'जैसा बोला जाए वैसा लिखा जाए और जैसा लिखा जाए वैसा ही बोला जाए।
2. देवनागरी में प्रत्येक लिपि चिह्न का एक

निश्चित ध्वन्यात्मक मूल्य है। इसके द्वारा उच्चरित ध्वनियों को व्यक्त करना बहुत सरल है।

3. दुनियाभर के भाषाविद भी मानते हैं कि देवनागरी एक वैज्ञानिक लिपि है। इस लिपि में वर्णों का संयोजन बहुत ही व्यवस्थित, सुसंगठित व क्रमबद्ध ढंग से किया गया है।
4. प्रत्येक वर्ण को उसकी विशेषता और प्रकार्य के आधार पर स्थान प्रदान किया गया है। स्वरों तथा व्यंजनों की सुनियोजित एवं क्रमबद्ध व्यवस्था है।
5. देवनागरी लिपि में हरेक ध्वनि के लिए एक लिपि चिह्न निश्चित है। जैसे- 'कला' शब्द में 'क' की ध्वनि के लिए एक लिपि चिह्न 'क' नियत है। इस ध्वनि के 'K' 'C' अथवा 'Q' आदि अनेक चिह्नों का भ्रामक प्रयोग नहीं होता।
6. लिपि चिह्नों की अधिकता देवनागरी की एक प्रमुख विशेषता है। देवनागरी लिपि में 52 से अधिक लिपि चिह्नों और कुछ अन्य आगत वर्णों (ऑ, फ़) का प्रयोग होता है, जो प्रायः हर प्रकार की ध्वनि को लिपिबद्ध करने में सक्षम हैं।
7. देवनागरी की वर्णमाला सर्वाधिक व्यवस्थित वर्णमाला है। इस वर्णमाला में सभी वर्णों को उनकी उच्चारणादि विशेषताओं के आधार पर वर्गीकृत किया गया है। उदाहरणः कंठ से उच्चरित वर्णों को एक वर्ग 'क वर्ग' में रखा गया है। इसी प्रकार अल्पप्राण-महाप्राण वर्णों को भी एक निश्चित क्रम में रखा गया है। निश्चित ही देवनागरी लिपि में वर्णों का सुनिश्चित वर्गीकरण किया गया है।
8. व्यंजन चिह्नों की आक्षरिकता - देवनागरी लिपि में प्रत्येक व्यंजन के साथ 'अ' वर्ण का संयोग रहता है। जैसे- क्+अ = क। लिपि का यह गुण आक्षरिकता कहलाता है। इससे लेखन में समय और स्थान की बचत होती है।

Critical Overview /अवलोकन

हिन्दी केवल एक भाषा नहीं है अनेक बोलियों का मिश्रित रूप है। स्वतंत्रता के बाद हिन्दी का प्रयोग विभिन्न रूपों में प्रयुक्त होने लगा। विकास के साथ हिन्दी भाषा अपने शब्द-भंडार का विकास भी अवश्य किया साथ ही साथ वह भारत की राजभाषा, राष्ट्रभाषा, संपर्कभाषा, मानकभाषा, कानूनी भाषा, तकनीकी भाषा आदि रूपों में भी विकसित हुई। देवनागरी लिपि की विशेषताएँ हिन्दी के महत्त्व को और भी बढ़ावा देता है।

Recap / पुनरावृत्ति

- हिन्दी आज भारत की राष्ट्रभाषा, राजभाषा, संपर्कभाषा आदि रूपों में कार्य करता है।
- मानक भाषा, व्यावहारिक भाषा, कानूनी भाषा, तकनीकी भाषा आदि रूपों में आज हिन्दी का प्रयोग होता है।
- हिन्दी का शब्द-भंडार अत्यंत विशाल है, इसमें तद्भव, तद्सम, देशज, विदेशज शब्दों का भरमार है।
- हिन्दी भाषा देवनागरी लिपि में लिखी जाती है।
- देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता हिन्दी भाषा के महत्त्व को बढ़ावा देता है।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. देवनागरी लिपि का विकास किस लिपि से हुआ है?
2. बिना किसी परिवर्तन के साथ हिन्दी में प्रयुक्त संस्कृत शब्दों को क्या कहते हैं?
3. राजभाषा को अंग्रेजी में क्या कहते हैं?
4. 'रेख्ता' का शाब्दिक अर्थ क्या है?
5. उर्दू किस लिपि में लिखी जाती है?
6. दुनिया की सर्वाधिक परिपूर्ण प्राचीन लिपि कौन-सा है?
7. सबसे पहले अमीर खुसरो ने कौन-सी भाषा में रचना की?

Answers / उत्तर

1. ब्राह्मी
2. तद्सम
3. Official language.
4. गिरी हुई
5. रोमन
6. देवनागरी लिपि
7. हिन्दी खडीबोली में

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. हिन्दी के विविध रूपों पर प्रकाश डालिए।
2. हिन्दी के भाब्द- भंडार पर विचार कीजिए।
3. देवनागरी लिपि की विशेषताओं पर चर्चा कीजिए।

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास : उदयनारायण तिवारी
2. भाषा स्वरूप और संरचना : डा.हेमचन्द्र पण्डे
3. हिन्दी भाषा का इतिहास : भोलानाथ तिवारी

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. हिन्दी के विभिन्न बोलियों पर विचार कीजिए।
2. हिन्दी भाषा के विभिन्न रूपों के बारे में चर्चा कीजिये।
3. हिन्दी भाषा के रचनात्मक स्वरूप के बारे में टिप्पणी लिखिए।
4. साहित्यिक हिन्दी और कार्यालयीन हिन्दी में क्या अंतर हैं।
5. राजभाषा और राष्ट्र भाषा में क्या अंतर है?

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी भाषा का उद्‌गम और विकास : उदयनारायण तिवारी
2. भाषा स्वरूप और संरचना : डा.हेमचन्द्र पण्डे
3. हिन्दी भाषा का इतिहास : भोलानाथ तिवारी

BLOCK 03

हिन्दी व्याकरण, वर्ण,ध्वनि एवं उसके प्रकार

SOU

इकाई 1 भाषा और व्याकरण

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- व्याकरण से परिचित होता है
- व्याकरण के विभिन्न विधाओं से परिचित होता है
- हिन्दी के अक्षरों और शब्दों से परिचय प्राप्त कर सकता है
- व्याकरण के प्रयोग समझ सकता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

व्याकरण को अच्छी तरह समझने के लिए कुछ जरूरी बातें जानना ज़रूरी है। सबसे पहले हमें यह समझना चाहिए कि भाषा किन चीज़ों से बनी होती है - जैसे ध्वनि, वर्ण, शब्द और वाक्य। फिर, हमें वर्णमाला के अक्षरों को पहचानना आना चाहिए, खासकर स्वर और व्यंजन को, ताकि हम ठीक से शब्द बना और बोल सकें। इसके बाद, हमें यह जानना ज़रूरी है कि शब्द और पद में क्या फर्क है, क्योंकि पद वही शब्द होता है जो वाक्य में सही तरीके से इस्तेमाल होता है। इसके अलावा, हमें शब्दों के अलग-अलग प्रकार जैसे एक ही अर्थ वाले, कई अर्थ वाले, समानार्थी और विपरीत अर्थ वाले शब्दों को पहचानना आना चाहिए। आखरि में, हमें वाक्य कैसे बनता है, उसके कितने प्रकार होते हैं और उसमें कौन-कौन से भाव होते हैं, यह सब जानना ज़रूरी है ताकि हम अच्छे और सही वाक्य बना सकें।

Keywords / मुख्य बिन्दु

भाषा विकास की प्रक्रिया, हिन्दी शब्द की व्युत्पत्ति "हिन्दी" शब्द का प्रयोग, हिन्दी प्रदेश

Discussion / चर्चा

3.1.1 भाषा और व्याकरण

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी होने के नाते हमेशा अपने विचारों का आदान प्रदान करते हैं। पहले वह अपने विचारों को विभिन्न संकेतों के माध्यम से प्रकट करते थे। फिर वह अपने विचारों को प्रकट करने के लिए विभिन्न माध्यमों को अपनाने लगा। चित्र खींचकर और प्रतीकों के माध्यम से वह अपने भावों को व्यक्त करने की कोशिश की। इसके बाद लिपि चिह्नों को इस के लिए माध्यम बनाया। लिपि और भाषा अलग अलग चीज़ें होती हैं। भाषा ध्वनियों के माध्यम से मुख से उच्चरित होती है। भाषा के दो रूप है। कथित और लिखित। लिखित रूप के लिए ही लिपि की आवश्यकता होती है। भाषा हमेशा एक जैसी नहीं रहती। उसमें निरंतर परिवर्तन होते रहते हैं।

3.1.2 भाषा में व्याकरण का महत्व (Importance of Grammar in Language)

भाषा के द्वारा मनुष्य अपने विचारों को प्रकट करते हैं। भाषा में जो शब्द होते हैं वे भिन्न-भिन्न विचारों को व्यक्त करते हैं। उनमें कुछ शब्द कम उपयोगी होते हैं और कुछ अधिक। इसके बिना एक ही विचार को प्रकट करने के लिए शब्दों के कई रूपांतर का प्रयोग भी करते हैं। वाक्य में शब्दों का प्रयोग किसी विशेष क्रम में होता है। उसमें अर्थ के अनुसार परस्पर संबंध भी होता है। इस तरह वाक्य लिखते समय उसमें पूर्णता और स्पष्टता होना चाहिए। इस के लिए हम व्याकरण का प्रयोग करते हैं। व्याकरण में शब्दों के शुद्ध रूपों और प्रयोग के नियमों का स्पष्टीकरण होते हैं। व्याकरण का अर्थ ही भली भाँति समझाना है। किस तरह भाषा का शुद्ध प्रयोग करना है यह व्याकरण के द्वारा हम समझ सकते हैं। व्याकरण की सहायता से हम भाषा संबंधी अपनी गलतियों को जान सकते हैं और आवश्यक सुधार कर सकते हैं।

व्याकरण एक ऐसा शास्त्र है जो हमें भाषा को सही ढंग से बोलने और लिखने के नियम सिखाता है। जब हम कोई बात कहते हैं, तो वह वाक्यों के रूप में होती है। हर वाक्य कई शब्दों से मिलकर बनता है और शब्द अक्षरों से। व्याकरण यह बताता है कि वाक्य कैसे बनते हैं, शब्दों के रूप कैसे बदलते हैं और उनका प्रयोग कैसे होता है। इसमें तीन मुख्य भाग होते हैं - वर्ण-विचार(अक्षरों और उनके उच्चारण का अध्ययन), पद-विचार (शब्दों के रूप और उनके प्रयोग का ज्ञान) और वाक्य-विचार (वाक्य की रचना और उसके अंगों का अध्ययन)। व्याकरण की मदद से हम शुद्ध, सुंदर और समझने योग्य भाषा बोलना सीखते हैं। व्याकरण भाषा से सम्बंधित शास्त्र है जिसका मुख्या अंग वाक्य है। वाक्य शब्दों से बनता है। वर्ण, रूप, शब्द और वाक्य व्याकरण के चार विभाग हैं। इन्हें वर्ण विचार, शब्द विचार, रूप विचार और वाक्य विचार के अंतर्गत देखा जा सकता है।

वर्ण विचार

वर्ण विचार में वर्णों के आकार, भेद, उच्चारण और उनके मेल से शब्द बनाने के नियमों को अच्छी तरह समझाते हैं। वर्ण उस मूल ध्वनि को कहते है जिसके खंड नहीं होते। उदा : अ, इ, उ, क्, ख्।

वर्णों के समूह को ही वर्णमाला कहते हैं। प्रत्येक भाषा में वर्णों को लिखने का क्रम भिन्न होता है। हिन्दी वर्णमाला में 44 वर्ण हैं। ये दो प्रकार के हैं - स्वर और व्यंजन।

रूप विचार

भाषा में रूप का विशेष महत्व है। वाक्य भाषा की छोटी इकाई है। भाषा कई वाक्यों से बनती हैं। उसी प्रकार वाक्य कई शब्दों से बने हैं। वाक्य के खंड़ करने पर कई शब्द मिलते हैं। शब्द ध्वनियों से बनता हैं। शब्द दो तरह के हैं। कोश में दिये गये शब्द और वाक्य में प्रयुक्त शब्द एक नहीं है। दोनों में अन्तर है। वाक्य में जो शब्द होता है वह अन्य शब्दों से अपना संबंध दिखाते हैं। इस प्रकार शब्द अपना संबंध दिखला नहीं सके तो वाक्य नहीं बन सकता। लेकिन कोश में जो शब्द होता है वह इस प्रकार नही है। वह शुद्ध या मूल रूप है। वाक्य में प्रयोग करने के योग्य शब्द 'पद' या 'रूप' कहलाता है। भाषा समझने के लिए पहले वाक्य समझना है। वाक्य पढ़ने के लिए पद या रूप को जानना ज़रूरी है।

संस्कृत में 'शब्द' या 'मूल रूप' को प्रकृति या प्रातिपदिक कहा गया है। संबंध स्थापित करने के लिए प्रत्यय का प्रयोग होता है। प्रकृति और प्रत्यय मिलकर पद बनता है। सभी भाषाओं के पदों में इतनी भिन्नता नहीं है। कई वाक्यों में संबंधतत्व गुप्त होते हैं। पद या रूप पढ़ते समय अर्थतत्व और संबंधतत्व जानना चाहिए।

'राम ने रावण को मारा' - इस वाक्य में राम, रावण, मार आदि अर्थतत्व हैं।

ने, को, मारा का 'आ' आदि संबंध तत्व हैं।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

जैसे- राम आम खाता है। इस वाक्य में संबंध तत्व 'ने' और 'को' गुप्त है।

शब्द विचार

एक या एक से अधिक वर्णों से बने शब्द भाषा की लघुतम इकाई है। सार्थक होने पर ही उसे शब्द कहलाता है। शब्द किसी निश्चित अर्थ का बोध कराता है। शब्द दो प्रकार के हैं। सार्थक और निरर्थक। पानी,कलम, कुर्सी आदि शब्दों को देखिए ये शब्द सार्थक हैं। इसलिए इसे सार्थक शब्द कहते हैं। निरर्थक शब्द तो केवल ध्वनियाँ है जो कहने के लिए मात्र शब्द है। सार्थक शब्द व्याकरण का एक विभाग है, जिसमें शब्दों की उत्पत्ति, प्रकार, रूपान्तर आदि के बारे में विस्तृत अध्ययन होते हैं।

परिभाषा

एक या एक से अधिक ध्वनियों के सार्थक योग को शब्द कहलाते हैं। शब्द भाषा की लघुतम इकाई है। अक्षरों से ही शब्द बनते हैं। जैसे- सीता, कुर्सी, पानी

3.1.3 शब्दों का वर्गीकरण (Classification of words)

मनुष्य को अपने भावों और विचारों को व्यक्त करने के लिए शब्दों का सहारा लेना पड़ता है। इस के लिए शब्दों के कई भेद मिलते हैं। इस प्रकार के भेदों और उसके रूपान्तर का प्रयोग वाक्यों में करते हैं। प्रयोग के अनुसार शब्द की कई जातियाँ होती हैं। इस प्रकार शब्दों की जातियाँ बताना ही उसका वर्गीकरण कहलाता है। शब्दों के वर्गीकरण पाँच प्रकार से किया गया है। अर्थ के आधार पर, व्युत्पत्ति या निर्मिति के आधार पर, उत्पत्ति के आधार पर, परिवर्तन और प्रयोग के आधार पर।

3.1.3.1 अर्थ के आधार पर शब्दों का वर्गीकरण

अर्थ के आधार पर शब्द पाँच प्रकार के हैं।

1. एकार्थक
2. अनेकार्थक
3. पर्यायवाची (समानार्थक)
4. विपरीतार्थक (विलोम शब्द)

1. **एकार्थक शब्दः** एकार्थक शब्द वह है जिसे एक ही अर्थ होता है और जो कोई दूसरा अर्थ प्रकट नहीं करता।

जैसे- रानी, राजू, सीना, सुरेश, दिल्ली, मुंबई

2. **अनेकार्थक शब्दः** शब्दों के एक से अधिक अर्थ होने पर उसे अनेकार्थक शब्द कहते हैं।

जैसे- अंत - समाप्ति, सीमा, मृत्यु

कनक - सोना, धतूरा

गुण - विशेषता, रस्सी

3. **पर्यायवाची (समानार्थक)**

शब्दों के अर्थ समान होने पर उसे पर्यायवाची या समानार्थक शब्द कहते हैं।

जैसे- फूल - पुष्प, कुसुम, प्रसून, सुमन

पानी - जल, नीर, अंबु

चाँद - शशि,चन्द्र, चन्द्रमा, राकेश

4. **विपरीतार्थक (विलोम शब्द)**

एक दूसरे के विपरीत अर्थों को प्रकट करने वाले शब्दों को विपरीतार्थक शब्द कहते हैं। विपरीतार्थक शब्द को विलोम शब्द भी कहता है।

जैसे- उन्नति x अवनति

उपयुक्त x अनुपयुक्त

3.1.3.2 व्युत्पत्ति या निर्मिति के आधार पर शब्दों का वर्गीकरण

व्युत्पत्ति के अनुसार शब्दों के तीन भेद हैं -

रूढ़, यौगिक, योगरूढ़

1. **रूढ़ शब्द** : रूढ़ शब्द से केवल एक ही निश्चित अर्थ का बोध होता है। इसके खंड करने पर कोई अर्थ नहीं निकलता। रूढ़ शब्द अपने आप में पूर्ण है। यह किसी अन्य शब्दों से नहीं बनता।

जैसे- आँख, नाला, किताब, कुत्ता

2. **यौगिक शब्दः** यौगिक शब्द दो शब्दों के मेल से बनते हैं। इनके खंड करने पर दोनों खंडों के अर्थ

सरलतापूर्वक किया जा सकता है।

जैसे- दिवाकर

इसमें दो अवयव है। 'दिवा' और 'कर'। 'दिवा' का अर्थ दिन है। 'कर' का अर्थ करने वाला है।

विद्यालय, रसोईघर आदि इस के लिए उदाहरण है।

3. **योगरूढ़ शब्दः** दो या दो से अधिक शब्दों से निर्मित शब्दों को योगरूढ़ शब्द कहते हैं। वे किसी सामान्य अर्थ को प्रकट नहीं करते बल्कि विशेष अर्थ को प्रकट करते हैं।

जैसे- पंक (कीचड़) से कई वस्तुओं की उत्पत्ति होती हैं लेकिन कमल केलिए पंकज शब्द विशेष अर्थ के रूप में योगरूढ़ हो गया है।

3.1.3.3 उत्पत्ति के आधार पर शब्दों का वर्गीकरण

उत्पत्ति के आधार पर शब्द चार प्रकार के हैं।

तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी, अन्य भारतीय भाषाओं के शब्द

1. **तत्समः** तत्सम शब्द का अर्थ है ज्यों का त्यों। ये शब्द संस्कृत से बिना किसी परिवर्तन के हिन्दी में आये हैं।

जैसे- गुरू, नदी, माता-पिता, बालक

2. **तद्भव शब्द :** तद्भव शब्द की उत्पत्ति संस्कृत से हुई है। ये शब्द पाली, प्राकृत, अपभ्रंश आदि भाषाओं में से परिवर्तित होकर ही हिन्दी में पहूँचे हैं।

जैसे- आग (अग्नि), हाथ (हस्त), कोयल (कोकिल)

3. **देशज शब्दः** लोकभाषा या ग्रामीण भाषा के शब्द है देशज शब्द। उसके स्रोत के बारे में किसी तरह की जानकारी प्राप्त नहीं है।

जैसे- झाडू, पेट, जूता

4. **विदेशी शब्दः** विदेशी भाषा से हिन्दी में कई शब्द आये हैं। उन्हें विदेशी शब्द कहते हैं। इसके अंतर्गत अरबी, फारसी, अंग्रेज़ी, तुर्की, पुर्तगली आदि कई भाषाएँ आती हैं।

जैसे- अरबी से - पैजामा, महल, अमीर

फारसी से- अलमारी, कागज़, अफसोस

अंग्रेज़ी से - स्टेशन, रेल, मोटर, रजिस्टर

तुर्की से - चाबुक, बेगम, मुगल,

पुर्तगली से - काजू, पादरी, कमीज़, बटन

5. **अन्य भारतीय भाषाओं के शब्द :** अन्य भारतीय भाषाओं से भी कई शब्द हिन्दी में आये है -

जैसे- प्यारा (पंजाबी), टका (बंगला)

6. **परिवर्तन और प्रयोग के आधार पर शब्दों का वर्गीकरणः** परिवर्तन और प्रयोग के आधार पर शब्दों के दो भेद हैं।

विकारी और अविकारी

विकारी शब्दः लिंग, कारक आदि से प्रभावित होने वाले शब्दों को विकारी शब्द कहते हैं। संज्ञा, सर्वनाम,विशेषण और क्रिया विकारी शब्द हैं।

जैसे- सीता, वह, सुन्दर, चलना

अविकारी शब्दः जो शब्द लिंग, वचन, कारक आदि से किसी भी तरह से परिवर्तित नहीं होते हैं उन शब्दों को अविकारी शब्द कहते हैं।

क्रिया विशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक, विस्मयादिबोधक, आदि अविकारी शब्द हैं।

जैसे- हाय, अरे, हे राम

3.1.4 वाक्य विचार

सार्थक शब्दों के समूह को वाक्य कहते हैं। वाक्य शब्दों का व्यवस्थित रूप है और विचारों को पूर्ण रूप से व्यक्त करते हैं। वाक्यों के शब्द समीप होता है और व्याकरणिक दृष्टि से एकरूप होते है। 'सीता गये' वाक्य ठीक नहीं है। क्यों कि यह व्याकरणिक दृष्टि

से एक रूप नहीं है। विभिन्न भाषाओं में वाक्य के रूप कई तरह के होते हैं। पदक्रम का वाक्य में महत्वपूर्ण स्थान है। जैसे हिन्दी में पहले कर्ता फिर कर्म और अंत में क्रिया आती है।

जैसे- राम ने रावण को मारा।

इस वाक्य में 'राम' कर्ता है, 'रावण' कर्म है और 'मारा' क्रिया।

इसके विपरीत अंग्रेज़ी में क्रिया बीच में होती है।

जैसे- Ram killed Ravana.

वाक्य दो प्रकार से वर्गीकृत किया गया है।

I अर्थ के आधार पर वाक्यों का वर्गीकरण

वाक्यों के वर्गीकरण अर्थ के आधार पर करने से बडी आसानी से पहचान सकता है। अर्थपूर्ण वाक्य आठ विभिन्न प्रकार के भावों को व्यक्त करते हैं। विधान, निषेध, प्रश्न, विस्मय, आज्ञा, इच्छा, संदेह और संकेत इन भावों के अंतर्गत आते हैं। इन भावों को दृष्टि में रखकर आठ भेद बताए गए हैं। वे हैं - विधान वाचक वाक्य, निषेधवाचक वाक्य, आज्ञावाचक वाक्य, प्रश्नवाचक वाक्य, विस्मयादिबोधक वाक्य, संदिग्ध वाक्य, संकेतवाचक वाक्य, इच्छावाचक वाक्य।

1. **विधान वाचक वाक्यः** विधान वाचक वाक्य से किसी क्रिया के होने या करने का बोध होता है।

जैसे- मैं कल चेन्नै गया था।

सूरज पूरब से निकलता है।

2. **निषेधवाचक वाक्यः** निषेधवाचक वाक्य से किसी विषय का अभाव या ना होने की सूचना होती है।

जैसे- षीला खाना नहीं खाएगी।

राजू आज नहीं पढेगा।

3. **आज्ञावाचक वाक्यः** आज्ञावाचक वाक्य से आज्ञा या अनुमति देने का बोध होता है।

जैसे- वहाँ मत जाओ।

चुप रहिए।

वहाँ मत जाओ।

4. **प्रश्नवाचक वाक्यः** प्रश्नवाचक वाक्य से प्रश्न का बोध होता है।

जैसे- तुम कहाँ जा रहे हो?

क्या तुम खेलने आओगे?

5. **विस्मयादिबोधक वाक्यः** विस्मयादिबोधक वाक्य से आश्चर्य, शोक, हर्ष और घृणा के भावों के बोध होते हैं।

जैसे- अरे कितनी सुन्दर गाडी !

ओह बडा ही अनर्थ हो गया!

6. **संदिग्ध वाक्यः** संदिग्ध वाचक वाक्य से किसी क्रिया के होने में संदेह का बोध होता है।

जैसे- शायद राम आए।

शायद मैं घर चली जाऊँगी।

7. **संकेतवाचक वाक्यः** संकेतवाचक वाक्य से एक क्रिया के दूसरी क्रिया पर निर्भर होने का बोध होता है।

जैसे- आप कहे तो मैं नहाने जाऊँ।

वह पढे तो राजू पढाएँ।

8. **इच्छावाचक वाक्यः** इच्छावाचक वाक्य से वक्ता की इच्छा व्यक्त होती है।

जैसे- इश्वर सबका भला करें।

भगवान करे आप का मंगल हो।

II रचना के आधार पर वाक्यों का वर्गीकरण

रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद हैं। सरल वाक्य या साधारण वाक्य, मिश्र वाक्य और संयुक्त वाक्य

1. **सरल वाक्यः** सरल वाक्य में एक क्रिया और एक कर्ता होता है। इसमें एक उद्देश्य और एक विधेय होते हैं।

जैसे- लड़का पुस्तक पढ़ता है।

बिजली चमकती है।

2. **मिश्र वाक्य:** मिश्र वाक्य में एक प्रधान वाक्य और साथ ही एक या एक से अधिक उपवाक्य होते हैं।

जैसे- वह कौन सा व्यक्ति है, जो महाप्रतापी सम्राट अशोक का नाम न सुना हो।

3. **संयुक्त वाक्य:** संयुक्त वाक्य में दो या उससे अधिक उपवाक्य मिलकर रहते हैं और वे दोनों प्रधान होते हैं।

जैसे- उसने बहुत अधिक परिश्रम किया फिर भी सफल नहीं हो सका।

सीना बहुत बीमार थी इसलिए वह स्कूल नहीं आयी।

व्याकरण किसी भाषा की नियमावली है, जो हमें शुद्ध और सुसंगत भाषा बोलने-लिखने की विधि सिखाता है। यह वर्ण, शब्द, पद और वाक्य के निर्माण और प्रयोग से जुड़ी सम्पूर्ण प्रक्रिया को स्पष्ट करता है।

Critical Overview /अवलोकन

व्याकरण भाषा की रीढ़ है, जो हमें शुद्ध और सही भाषा प्रयोग सिखाती है। इसके ज्ञान से हम शब्दों और वाक्यों को ठीक प्रकार से समझ और बना सकते हैं। वर्ण, शब्द, रूप और वाक्य - ये चारों विभाग भाषा की गहराई को समझने में सहायक होते हैं। व्याकरण हमें यह सिखाता है कि कब कौन-सा शब्द, किस रूप में और किस स्थान पर प्रयोग करना चाहिए। यह केवल भाषा सीखने का माध्यम नहीं, बल्कि विचारों को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करने का उपकरण भी है। शब्दों के प्रकार और उनके प्रयोग की जानकारी हमें भावों को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करने में मदद करती है। वाक्य रचना की समझ से हम अपने बोलचाल और लेखन को व्यवस्थित और अर्थपूर्ण बना सकते हैं। इसलिए, व्याकरण का ज्ञान किसी भी भाषा के अध्ययन के लिए आवश्यक और उपयोगी है।

Recap / पुनरावृत्ति

- भाषा के शुद्ध प्रयोग में सहायता करता है।
- विचारों को स्पष्ट और प्रभावशाली बनाने में सहायक होता है।
- रचनात्मक लेखन में सहायक।
- भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन संभव बनाता है।
- व्याकरण भाषा के सही उपयोग को सिखाता है।
- वर्णमाला में स्वर और व्यंजन होते हैं।
- शब्द और पद में अंतर समझना जरूरी है।
- शब्दों के प्रकार जैसे एकार्थक, अनेकार्थक, पर्यायवाची होते हैं।
- वाक्य के प्रकार में विधान, प्रश्न, आज्ञा, निषेध आदि होते हैं।
- व्याकरण से वाक्य रचना और सही शब्द प्रयोग सीखा जा सकता है।
- वाक्य का सही रूप और क्रम भाषा को स्पष्ट बनाता है।
- व्याकरण का ज्ञान भाषा को प्रभावी और सुंदर बनाता है।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. अर्थ के आधार पर शब्द के कितने भेद है?
2. शब्दों के अर्थ समान होने पर उसे बया कहते है?
3. खंड करने पर कोई अर्थ न निकलनेवाले शब्द को क्या कहते हैं?
4. उतपत्ति के आधार पर शब्द कितने प्रकार है?
5. लिंग,कारक आदि से प्रभावित शब्द को क्या कहते है?
6. तसम शब्द का उदाहरण लिखिए?
7. आज्ञा था अनुमति का बोध देनेवाले शब्द को क्या कहते हैं?
8. रचना के आधार पर वावय का कितने थेद है?

Answers / उत्तर

1. पाँच
2. पयथिवाची
3. रूप शब्द
4. चार
5. अतिकारी शब्द
6. गुरु / नदि / पिता
7. आज्ञावाचक शब्द
8. तीन

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. शब्द और पद के बीच अंतर को स्पष्ट करो।
2. शब्दों के विभिन्न प्रकारों को वर्गीकृत करो और प्रत्येक प्रकार का उदाहरण दो।
3. वाक्य के विभिन्न प्रकारों को बताओ और हर प्रकार का एक उदाहरण प्रस्तुत करो।
4. व्याकरण के महत्व पर एक छोटा अनुच्छेद लिखो।

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास : उदयनारायण तिवारी
2. भाषा स्वरूप और संरचना : डॉ. हेमचन्द्र पण्डे
3. हिन्दी भाषा का इतिहास : भोलानाथ तिवारी

इकाई 2 वर्ण, ध्वनि और अक्षर

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- भाषा और ध्वनि की अवधारणा समझी जाएगी
- स्वर और व्यंजन के बीच अंतर पहचाना जाएगा
- हिन्दी वर्णमाला के 44 वर्णों की पहचान की जाएगी
- उच्चारण के महत्व को समझा जाएगा

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

भाषा विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने का माध्यम है, जिसका आधार ध्वनि है। ध्वनि एक कंपन है जिसे हम सुन सकते हैं। जब ध्वनि को एक निश्चित रूप मिलता है, तो वह वर्ण बन जाती है। हिन्दी में कुल 44 वर्ण होते हैं, जिनमें स्वर और व्यंजन शामिल हैं। वर्णों का उच्चारण मुख के विभिन्न अंगों की सहायता से होता है। एक ही साँस में उच्चरित ध्वनियों को अक्षर कहा जाता है। इन सभी तत्वों की सही समझ भाषा और व्याकरण के अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

भाषा, ध्वनि, वर्ण, उच्चारण, व्याकरण

Discussion / चर्चा

3.2.1 वर्ण

प्रायः लोग ध्वनि, वर्ण और अक्षर का एक ही अर्थ लेते हैं; किन्तु व्याकरण-शास्त्र में इनके अर्थों में भेद कर लिया गया है। अ, आ, ई, ऊ आदि अथवा क, ख, ग आदि को जब हम मुँह से बोलते हैं, तो इन्हें ध्वनियाँ कहते हैं। इनके लिखित रूप को वर्ण कहते हैं। वर्ण को ध्वनि-चिह्न कह सकते हैं। अंग्रेजी Calm और हिन्दी 'काम' में हम ध्वनिगत अन्तर नहीं करते। दोनों में क (बड़ा) और म ध्वनि सुनायी देती है। किन्तु लिखने में दोनों भाषाओं के चिह्न बिलकुल अलग-अलग हैं। हम यह कह सकते हैं कि इनमें ध्वनि-भेद तो नहीं है, वर्ण-भेद है। ध्वनि बोलने और सुनने में आती है, वर्ण देखने और लिखने-पढ़ने में आते हैं। इन वर्णों के पूरे समूह को वर्णमाला कहते हैं। हिन्दी जिस वर्णमाला में लिखी जाती है, उसका नाम 'देवनागरी' है ।

वर्णों के समुदाय को वर्णमाला कहते हैं। हिन्दी में 44 वर्ण हैं। वे हैं - स्वर और व्यंजन।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

स्वर वर्ण

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ -11 (अं अः) विसर्ग

व्यंजन वर्ण

क ख ग घ ङ

च छ ज झ ञ

ट ठ ड ढ ण

त थ द ध न

प फ ब भ म

य र ल व श ष स ह - 33 (क्ष त्र ज्ञ) - संयुक्ताक्षर

3.2.2 ध्वनि

ध्वनियों के दो प्रकार होते हैं - स्वर और व्यंजन। स्वर वे ध्वनियाँ होती हैं जिनके उच्चारण में वायु फेफड़ों से निकलकर बिना किसी रुकावट के बाहर आ जाती है। इन ध्वनियों के उच्चारण में जीभ या होंठ किसी अंग से नहीं टकराते और वायु को कोई अवरोध नहीं होता। जैसे 'अ', 'आ', 'इ', 'ई', 'उ', 'ऊ', 'ए', 'ऐ', 'ओ', 'औ' - इनका उच्चारण करते समय मुँह खुला रहता है और हवा आसानी से बाहर निकलती है, इसलिए इन्हें स्वर कहते हैं। इसके विपरीत व्यंजन वे ध्वनियाँ होती हैं जिनके उच्चारण में वायु को मुँह के किसी भाग, जैसे होंठ, जीभ या तालु पर रोकना पड़ता है और फिर उसे छोड़कर ध्वनि निकाली जाती है। उदाहरण के लिए 'प', 'फ', 'ब', 'भ', 'म' बोलते समय होंठ आपस में मिलते हैं और वायु थोड़ी देर रुकती है। व्यंजन ध्वनियों में जीभ, होंठ आदि का किसी न किसी भाग से स्पर्श होता है। इस प्रकार स्वर सरल और अबाध उच्चारण वाले होते हैं, जबकि व्यंजन में वायु के मार्ग में रुकावट और किसी अंग का स्पर्श शामिल होता है।

3.2.3 अक्षर

जिस ध्वनि या ध्वनि-समूह का उच्चारण एक श्वासाघात में हो, उसे अक्षर कहते हैं, जैसे मा, मी, मू, उम्, मोम्, मेम्, स्नान अक्षर हैं।

किसी भी प्रकार की आवाज़ ध्वनि है। ध्वनि भाषा का आधार है।

जैसे- आगरा - आ + ग् + अ + र् + आ

जिन धनियों का उच्चारण एक ही सांस में होता है उन्हें अक्षर कहते हैं।

जैसे क, च, प

Critical Overview /अवलोकन

भाषा, ध्वनि, वर्ण और अक्षर एक-दूसरे से जुड़े हुए महत्वपूर्ण तत्व हैं। इनकी सही समझ से भाषा का उपयोग स्पष्ट, शुद्ध और प्रभावशाली ढंग से किया जा सकता है। वर्ण और अक्षर भाषा की नींव होते हैं, जबकि ध्वनि उसकी आत्मा है। जब इन सभी तत्वों का समुचित ज्ञान होता है, तभी भाषा का संपूर्ण रूप समझ में आता है और उसका सही प्रयोग संभव होता है।

Recap / पुनरावृत्ति

- वर्ण वह मूल ध्वनि है जिसे और अधिक विभाजित नहीं किया जा सकता।
- वर्णों के समूह को वर्णमाला कहते हैं।
- हिन्दी में कुल 44 वर्ण होते हैं - 11 स्वर और 33 व्यंजन।
- ध्वनि एक प्रकार की आवाज़ है जो कंपन से उत्पन्न होती है।
- ध्वनि ही भाषा का आधार होती है।
- अक्षर वह ध्वनि है जिसका उच्चारण एक ही साँस में किया जाता है।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. ध्वनियों के कितने प्रकार होते हैं?
2. हिन्दी में कुल कितने वर्ण होते हैं?
3. ध्वनियों का लिखित रूप क्या कहलाता है?
4. ध्वनि और वर्ण के समूह को क्या कहते हैं?
5. हिन्दी में कितने स्वर होते हैं?
6. 'क', 'ख', 'ग' आदि को एक साथ क्या कहा जाता है?
7. हिन्दी की वर्णमाला का नाम क्या है?
8. एक श्वास में उच्चरित ध्वनि-समूह क्या कहलाता है?

Answers / उत्तर

1. दो
2. 44
3. वर्ण
4. वर्णमाला
5. 11
6. व्यंजन
7. देवनागरी
8. अक्षर

SGOU

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. वर्णों के प्रकार और उनके उच्चारण के आधार पर वर्गीकरण पर विस्तृत विवरण लिखें।
2. हिन्दी वर्णमाला में स्वर और व्यंजन के बीच अंतर स्पष्ट करें।
3. ध्वनि, वर्ण और अक्षर के बीच संबंध पर एक सरल व्याख्या लिखें।

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी भाषा का उद्‌गम और विकास : उदयनारायण तिवारी
2. भाषा स्वरूप और संरचना : डा.हेमचन्द्र पण्डे
3. हिन्दी भाषा का इतिहास : भोलानाथ तिवारी

SGOU

इकाई 3 स्वर और व्यंजन एवं उसके प्रकार

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- स्वर और व्यंजन के उच्चारण के तरीके और उनके वर्गीकरण को समझता
- ध्वनिविज्ञान और उच्चारण अंगों की जानकारी प्राप्त करता है
- स्वर और व्यंजन के प्रकार और उनके अंतर को पहचानने में सक्षम होंगे
- ध्वनियों के उत्पादन, उनकी अवधि और स्वर की पहचान की जा सकेगी

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

स्वर और व्यंजन को समझने के लिए कुछ आवश्यक बुनियादी ज्ञान होना चाहिए। सबसे पहले, ध्वनिविज्ञान (Phonetics) का ज्ञान जरूरी है, ताकि हम यह समझ सकें कि ध्वनियाँ कैसे उत्पन्न होती हैं। इसके बाद, उच्चारण अंगों जैसे जीभ, ओष्ठ, तालू और स्वरयंत्र का ज्ञान आवश्यक है, क्योंकि इन अंगों से ही स्वरों और व्यंजनों का उच्चारण होता है। स्वर और व्यंजन के वर्गीकरण को समझने के लिए, उनके उच्चारण के स्थान और तरीके की जानकारी होना चाहिए। इसके अतिरिक्त, भाषाई शब्दावली जैसे ध्वन्यात्मक चिह्न (diacritic marks), स्वर (intonation) और अवधि (duration) की समझ भी जरूरी है, ताकि हम ध्वनियों के उत्पादन और उनके वर्गीकरण को सही ढंग से पहचान सकें।

Keywords / मुख्य बिन्दु

स्वर, व्यंजन, ध्वनिविज्ञान, उच्चारण, वर्गीकरण

Discussion / चर्चा

3.3.1 स्वर

स्वर, वर्ण का उच्चारण स्वतंत्रता से होता है और वे व्यंजनों के उच्चारण में सहायक होते हैं। इनके उच्चारण करते समय भीतर से (मुख एवं नासिका से) आती हुई वायु बिना किसी बाधा से बाहर निकलती है।

3.3.1.1 स्वर के प्रकार

मुख के जिन स्थानों से वर्णों का उच्चारण होते हैं उसके अनुसार उसका स्थान निर्धारित करते हैं। मुख से बाहर निकलने वाले स्वर मौखिक स्वर है और मुख और नासिका से बाहर निकलने वाले स्वर अनुनासिक स्वर होते हैं। उच्चारण के समय जीभ की स्थिति, जीभ के उत्थान, ओष्ठों की स्थिति आदि के अनुसार

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

स्वर का वर्गीकरण किया गया है।

1. **जीभ के भाग के अनुसार उच्चारणः** स्वर के उच्चारण में जीभ के भागों का महत्वपूर्ण स्थान है। जीभ के अग्र, मध्य, पश्च आदि तीन प्रकार के स्थान है। किसी स्वर के उच्चारण करते समय जीभ के अग्र भाग महत्वपूर्ण है तो किसी में मध्य और किसी में पश्च।

जीभ के अग्र भाग से उच्चरित वर्ण अथवा अग्र स्वर - इ, ई, ए,ऐ

जीभ के मध्य भाग से उच्चरित वर्ण अथवा मध्य स्वर - अ,आ

जीभ के पश्च भाग से उच्चरित वर्ण अथवा पश्च स्वर - उ, ऊ, ओ,औ

उच्चारण करते समय जीभ का व्यवह्मत भाग कभी ऊपर तालू के पास चला जाता है तो उसे संवृत कहता है कभी बिलकुल नीचे रहता है तो उसे विवृत कहता है। जब जीभ संवृत के पास रहती है तो अर्ध संवृत और विवृत के पास रहती है तो अर्ध विवृत कहता है।

संवृत स्वर - इ, ई, उ,ऊ

अर्ध संवृत स्वर - ए, ओ

अर्ध विवृत स्वर - ऐ, अ, औ

विवृत स्वर - आ

2. **ओष्ठों की स्थिति के अनुसार उच्चारणः** ओष्ठों को वृत्ताकार में करके जब स्वरों का उच्चारण करता है तो उसे वृत्तमुखी स्वर कहते हैं। - उ, ऊ, ओ, औ

बिना इस प्रकार करके उच्चारण होते है तो उसे अवृत्तमुखी स्वर कहते हैं।-

अ, आ, इ, ई, ए, ऐ

3. **अलिजिह्वे (कौवा) की स्थिति के अनुसार उच्चारणः** इस के आधार पर स्वरों के दो भेद है मौखिक स्वर और अनुनासिक स्वर

मौखिक स्वरः जिन वर्णो के उच्चारण के समय कौवा (अलिजिह्वा) ऊपर उठकर नासिका विवर को बंद करता है तो हवा मुँह से ही बाहर निकलती है। ऐसे निकलने वाले स्वर है - अ, आ, इ, ई

अनुनासिक स्वरः जिन वर्णों के उच्चारण मुँह और नासिका से होता है तो उस समय कौवा बीच में लट कता रहता है और हवा का कुछ अंश नाक से और कुछ अंश मुँह से निकलता है।

अनुनासिक स्वरः आँ, अं, इँ, उँ, ऊँ,एँ

अनुनासिक स्वर दो प्रकार है - पूर्ण अनुनासिक स्वर और अल्प अनुनासिक स्वर

पूर्ण अनुनासिक स्वर - हाँ, आँ

अल्प अनुनासिक स्वर - राम का 'आ'

4. **जीभ के चलने के आधार पर उच्चारणः** जीभ के चल और अचल के अनुसार स्वर दो प्रकार है - मूल स्वर और संयुक्त स्वर

मूल स्वर

जिन वर्णो के उच्चारण के समय जीभ अचल (गतिहीन) रहती है तो उस समय उच्चरित स्वरों को मूल स्वर कहते हैं। हिन्दी के प्रायः सभी स्वर मूल स्वर हैं।

संयुक्त स्वर

जिन वर्णो के उच्चारण के समय जीभ एक स्थिति से दूसरी स्थिति में जाती है तो संयुक्त स्वर बनती है।

उदाः - 'पैसा' शब्द के उच्चारण करते समय 'ऐ' के उच्चारण में

अअएउ ऐ होता है।

5. **मुँह की मांसपेशियों की शिथिलताः** दृढता के अनुसार उच्चारण - मुँह की मांसपेशियों की शिथिलता-दृढता के अनुसार स्वरों के दो भेद है। शिथिल और दृढ़। अ, इ, उ जैसे ह्रस्व स्वर शिथिल होते हैं और ई, ऊ आदि दीर्घ स्वर दृढ़।
6. **स्वर तंत्रियों की स्थिति के अनुसार उच्चारणः** स्वर तंत्रियों की स्थिति के अनुसार स्वरों के दो भेद है। वे हैं - घोष और अघोष ।

घोष स्वर: जिन वर्णों के उच्चारण करते समय गले के तंदुओं में नाद या घोष होता है, उसे घोष वर्ण कहते हैं।

समस्त स्वर घोष वर्ण है।

अघोष स्वर: जिन वर्णों के उच्चारण करते समय गले के तंदुओं से नाद या घोष नहीं होता उसे अघोष वर्ण कहते हैं। अपवादस्वरूप कुछ भाषाओं में अघोष स्वर उच्चरित होते हैं। इन्हें फुसफुसाहटवाला स्वर या जपित स्वर कहते हैं।

7. **मात्रा**

स्वर वर्ण के उच्चारण करते समय लगने वाले समय को मात्रा कहता है। इसके आधार पर स्वरों के चार भेद है।

ह्रस्व स्वर, दीर्घ स्वर, ह्रस्वार्ध स्वर और प्लुत स्वर

ह्रस्व स्वर: जिन वर्णों के उच्चारण में एक ही मात्रा लगती है, उसे ह्रस्व स्वर कहते है।

उदा - अ, इ, उ

दीर्घ स्वर: जिन वर्णों के उच्चारण में दोगुना समय लगती हो तो उसे दीर्घ स्वर कहते हैं।

उदा. - आ, ई, ऊ, ऐ, ओ, औ

ह्रस्वार्ध स्वर: ह्रस्व स्वर से भी कम समय में उच्चरित वर्ण ही ह्रस्वार्ध स्वर है।

उदा.: स्टेशन, स्त्री आदि शब्दों के उच्चारण करते समय प्रारंभ में सुनाई पड़ने वाला हल्की सी 'इ'।

प्लुत स्वर: जिन वर्णों के उच्चारण में दीर्घ से भी कुछ समय अधिक लगती है तो उसे प्लुत स्वर कहते है।

उदा. - ओऽम्

3.3.2 व्यंजन

व्यंजन वर्णों का उच्चारण स्वरों की सहायता से होते हैं। व्यंजन वर्णों के उच्चारण में भीतर से आती हुई वायु मुँह में कहीं न कहीं किसी न किसी रूप में बाधित होती है। हर एक व्यंजन वर्ण का उच्चारण 'अ' स्वर के बिना संभव नहीं है। जैसे- क् + अ = क, च् + अ = च

3.3.2.1 व्यंजन के प्रकार

व्यंजनों का उच्चारण एक विशेष प्रकार के प्रयत्न से ही संभव है। लेकिन यह प्रयत्न स्थान व अंग विशेष से होता है। स्थान व अंग वह है जहाँ भीतर से आती हुई हवा को रोककर उसमें विकार लाती है और इन विकारों से ध्वनि उत्पन्न हो जाती है। मुँह के अंदर ओष्ठ से लेकर स्वरयंत्र तक के सभी स्थान इसमें आते हैं। इन सभी स्थानों के प्रयत्न इस केलिए होते हैं। प्रमुख स्थान ओष्ठ, दंत, कठोर तालू, मूर्द्धा, कोमल तालू, अलिजिह्वा, उपालिजिह्वा और स्वरयंत्र आदि हैं।

I प्रयत्न के आधार पर व्यंजनों के वर्गीकरण

1. **स्पर्श व्यंजन**

इसमें उच्चारण अवयव एक-दूसरे का स्पर्श करते हैं और भीतर से आती हुई वायु के बाहर जाने में बाधा उत्पन्न करती हैं और हट जाते हैं। उस समय हवा बाहर निकल जाती है। इसमें आने वाले व्यंजन वर्ण निम्नलिखित है।

क वर्ग: क ख ग घ ङ - कण्ठ से स्पर्श करने के कारण कण्ठ्य व्यंजन कहते हैं।

च वर्ग: च छ ज झ ञ - तालू से स्पर्श करने के कारण तालव्य व्यंजन कहते हैं।

ट वर्ग: ट ठ ड ढ ण - मूर्द्धा से स्पर्श करने के कारण मूर्धन्य व्यंजन कहते हैं।

त वर्ग: त थ द ध न - दन्त से स्पर्श करने के कारण दन्त्य व्यंजन कहते हैं।

प वर्ग: प फ ब भ म - ओष्ठ से स्पर्श करने के कारण ओष्ठ्य व्यंजन कहते हैं।

2. **संघर्षी व्यंजन:** इन वर्णों के उच्चारण में उच्चारण अवयव एक दूसरे के इतने निकट आते है कि वे दोनों के बीच से निकलने वाली हवा घर्षण करती

हुई निकल जाती है।

जैसे- फ,व,स,ज,श,ह

3. **स्पर्श संघर्षी व्यंजनः** जिन व्यंजनों के उच्चारण में प्रारंभ में स्पर्श होता है और अंत में संघर्ष होता है तो वे स्पर्श संघर्षी कहलाते हैं।

जैसे- च, छ, ज, झ

4. **नासिक्य व्यंजनः** जिन व्यंजनों के उच्चारण में हवा नाक से निकलती है तो वे नासिक्य व्यंजन कहलाते हैं।

जैसे- ङ, ञ, ण, न, म

5. **पार्श्विक व्यंजनः** इन व्यंजनों के उच्चारण में जीभ तालू को छूती है और भीतर से आती हुई वायु को अवरूद्ध करते हैं। तब हवा दोनों पार्श्वों से निकलती है।

जैसे- ल

6. **उत्क्षिप्त व्यंजनः** इनके उच्चारण करते समय जीभ ऊपर उठकर झटके से नीचे गिरती है।

जैसे- ड़,ढ़

कंपनजात व्यंजनः इन व्यंजनों के उच्चारण करते समय उच्चारण अवयव के नोक में वायु प्रवाह के कारण कंपन उत्पन्न हो जाता है।

जैसे- र

7. **संघर्षहीन सप्रवाहः** इन वर्णों के उच्चारण में वायु बिना किसी किसी घर्षण अथवा बाधा के चलती रहती है। इस समय उच्चारण में किसी तरह के संघर्ष नहीं होता।

जैसे- य, व

ये व्यंजन स्वर तथा व्यंजन के बीच में होने के कारण इन्हें अर्द्ध स्वर (Semi Vowels) भी कहते हैं।

II स्थान के आधार पर व्यंजनों के वर्गीकरण

1. **स्वरयंत्रमुखी**

इन व्यंजनों के उच्चारण स्वरयंत्रमुख से होते हैं। इन्हें स्वरयंत्र स्थानीय, काकल्य या उरस्य भी कहते हैं।

जैसे- ह

2. **उपालिजिह्वीय**

इनके उच्चारण स्वरयंत्र और अलिजिह्वा के बीच में उपालिजिह्वा या गलबिल से होते हैं। अरबी भाषा के 'ऐन', 'बडी हे' आदि का उच्चारण इसी स्थान से होते हैं। आफ्रिका में या उसके आसपास ही ये व्यंजन मिलते हैं।

3. **अलिजिह्वीय**

इनके उच्चारण कौआ या अलिजिह्वा से किया जाता है। जिह्वा के मूल भाग या पश्च भाग का गले के ऊपरी भाग से स्पर्श होने पर इस वर्ण का उच्चारण होता है।

जैसे- ग़, क़

4. **कोमल तालव्य**

इन व्यंजनों को कण्ठ्य व्यंजन भी कहते हैं। जीभ के पश्च भाग की सहायता से इनका उच्चारण होता है।

जैसे- क,ख,ग,घ,ङ

5. **मूर्धन्य**

इनके उच्चारण मूर्द्धा की सहायता से होता है।

जैसे- ट,ठ,ड,ढ,ण

6. **कठोर तालव्य**

कठोर तालु से ही इन व्यंजनों का उच्चारण होता है। जीभ की नोक इसमें सहायता करती है। कठोर तालव्य को तालव्य भी कहते है।

जैसे- च,छ,ज,झ,ञ

7. **वर्त्स्य**

इन व्यंजनों का उच्चारण मसूडे या वर्त्स्य की सहायता से होता है।

जैसे- न, ल, र, स, ज

8. **दंत्य**

इन व्यंजनों का उच्चारण दाँत की सहायता से होता है। इसमें जीभ की नोक सहायता करती है।

जैसे- त, थ, द, ध

9. **दंतोष्ठ्य**

इन व्यंजनों का उच्चारण ऊपर के दाँत और नीचे के ओष्ठ की सहायता से होता है।

जैसे- व, फ

10. **ओष्ठ्य**

इन व्यंजनों का उच्चारण दोनों ओठों की सहायता से होता है।

जैसे- प, फ, ब, भ, म

III स्वर तंत्रियों के आधार पर व्यंजनों के वर्गीकरण

1. **घोष**

जिन व्यंजनों के उच्चारण में स्वर तंत्रियाँ झंकृत (कंपन)होते हैं वे घोष व्यंजन कहे जाते हैं।

जैसे - ग, घ, ङ

ज, झ, ञ

ड ढ ण

द ध न

ब भ म

य, र, ल, व

2. **अघोष**

जिन व्यंजनों के उच्चारण में स्वर तंत्रियाँ झंकृत(कंपन) नहीं होते वे अघोष व्यंजन कहे जाते हैं।

जैसे - क, ख

च, छ

ट, ठ

त, थ

प, फ

स, श

IV. प्राणत्व के आधार पर व्यंजनों के वर्गीकरण

1. **अल्पप्राण**

जिन व्यंजनों के उच्चारण में मुँह से कम हवा निकलती है तो उन्हें अल्पप्राण व्यंजन कहते हैं।

जैसे- क, ग, ङ, च, ज, ञ, ट, ड, ण, त, द, न, प, ब, म, य, र, ल

2. **महाप्राण**

जिन व्यंजनों के उच्चारण में हवा का आधिक्य है तो उन्हें महाप्राण व्यंजन कहते हैं।

जैसे- ख, घ, छ, झ, ठ, ढ, थ, ध, फ, भ, न्ह, ल्ह

Critical Overview /अवलोकन

स्वर और व्यंजन हिन्दी भाषा के अहम हिस्से हैं, जिनका उच्चारण अलग-अलग अंगों और स्थानों से होता है। स्वर वे ध्वनियाँ हैं जिनका उच्चारण बिना किसी रुकावट के वायु के बाहर निकलने से होता है, और ये व्यंजनों के उच्चारण में मदद करते हैं। व्यंजन स्वर के बिना नहीं बोला जा सकता, और उनका उच्चारण ओष्ठ, तालू या स्वरयंत्र से होता है। स्वर को मुख, नासिका या उनके गुण के आधार पर अलग-अलग प्रकारों में बांटा गया है, जैसे संवृत, विवृत, और अनुनासिक स्वर। व्यंजन भी कई प्रकार के होते हैं, जैसे स्पर्श व्यंजन, संघर्षी व्यंजन, और नासिक्य व्यंजन, जिनका उच्चारण हवा के प्रवाह और अंगों की विशेष स्थिति से होता है। व्यंजनों का वर्गीकरण उनके गुणों के आधार पर भी किया जाता है, जैसे घोष और अघोष (स्वर तंत्रियों की स्थिति के आधार पर), महाप्राण और अल्पप्राण (प्राणत्व के आधार पर)। इसे समझने से भाषा का सही उपयोग और सही उच्चारण संभव होता है।

Recap / पुनरावृत्ति

- स्वर और व्यंजन के उच्चारण में कई प्रकार के भेद होते हैं, जो उनके स्थान और अंगों पर निर्भर करते हैं।
- स्वर का वर्गीकरण जीभ, ओष्ठों और स्वर तंत्रियों की स्थिति के अनुसार किया जाता है।
- स्वर मौखिक और अनुनासिक होते हैं, जो मुँह और नासिका से निकलने वाली हवा के आधार पर होते हैं।
- व्यंजनों का उच्चारण स्पर्श, संघर्षी, नासिक्य और पार्श्विक प्रकार से होता है, जो विभिन्न अंगों के उपयोग से निर्धारित होते हैं।
- व्यंजनों को घोष और अघोष के रूप में भी बाँटा जाता है, जिनमें घोष व्यंजन में गले की तंत्रियों से कंपन होता है।
- व्यंजनों को प्राणत्व के आधार पर अल्पप्राण और महाप्राण में भी बाँटा जाता है, जो हवा की मात्रा पर निर्भर करते हैं।
- ये सभी वर्गीकरण हिन्दी के सही उच्चारण और शुद्धता को समझने में मदद करते हैं।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. बिना बाधा के निकलने वाली ध्वनि क्या कहलाती है?
2. व्यंजन के उच्चारण में कौन सहायता करता है?
3. ‘अ’ किस प्रकार का स्वर है?
4. ‘उ’, ‘ऊ’ किस प्रकार के स्वर हैं?
5. नाक से निकलने वाले स्वर क्या कहलाते हैं?
6. ‘क’, ‘ख’ किस प्रकार के व्यंजन हैं?
7. ‘य’, ‘व’ किस प्रकार के वर्ण हैं?
8. जिन स्वरों में एक मात्रा लगती है वे क्या कहलाते हैं?

Answers / उत्तर

1. स्वर
2. स्वर
3. मध्य
4. पश्च
5. अनुनासिक
6. कण्ठ्य
7. अर्द्धस्वर
8. ह्रस्व

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. स्वर और व्यंजन के भेद को उदाहरण सहित समझाइए।
2. उच्चारण के आधार पर स्वरों का वर्गीकरण करके तालिका बनाइए।
3. व्यंजनों के स्थान, प्रयत्न और घोष-अघोष के आधार पर वर्गीकरण प्रस्तुत कीजिए।
4. अनुनासिक और मौखिक स्वरों में अंतर स्पष्ट कीजिए।
5. ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत और ह्रस्वार्ध स्वर की परिभाषा लिखकर उदाहरण दीजिए।

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. भाषा विज्ञान - डॉ. भोलानाथ तिवारी, किताब महल, सरोजनी नायडू मार्ग, इलाहाबाद, 2014
2. हिन्दी व्याकरण - स्व. पं. कामताप्रसाद गुरु, लोकभारती प्रकाशन, पहली मंज़िल, दरबारी बिल्डिंग, महात्मागाँधी मार्ग, प्रयागराज - 211001, 2019

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

BLOCK 04

सन्धि और समास एवं उसके प्रकार

SGOU

इकाई 1 भाषा और व्याकरण

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- सन्धि से परिचय प्राप्त कर सकता है
- समास की जानकारी प्राप्त कर सकता है
- समास के भेद की जानकारी प्राप्त कर सकता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

किसी भाषा को जानने से पहले उस भाषा के व्याकरण को समझना चाहिए। सन्धि और समास व्याकरण में मुख्य भूमिका निभाते हैं। वाक्य विभिन्न शब्दों के योग से बनते हैं। कई शब्द मिलकर ही एक वाक्य बनते हैं। शब्द रचना में सन्धि और समास सहायक होते हैं। समास दो पदों के योग से और सन्धि दो वर्णों के मेल से बनते हैं।

Keywords / मुख्य बिन्दु

लघुतम इकाई, सामासिक शब्द,स्वरसन्धि, व्यंजनसन्धि, विसर्गसन्धि, अव्ययीभाव,तत्पुरुष, द्वन्द्व, बहुव्रीही

Discussion / चर्चा

एक या एक से अधिक वर्णों से बने शब्द भाषा की लघुतम इकाई है। सार्थक होने पर ही उसे शब्द कहलाता है। धरती के संपूर्ण जीव-जंतुओं, वस्तुओं और उनके संबंधों को व्यक्त करने केलिए शब्दों का उपयोग होता है। शब्द किसी निश्चित अर्थ का बोध कराता है। शब्दों के योग से समास और वर्णों के योग से सन्धि बनते हैं। व्याकरण पढ़ते समय सन्धि और समास की जानकारी प्राप्त करना आवश्यक है।

4.1.1 सन्धि

दो अक्षरों के पास आने पर उनके मेल से जो विकार होता है उसे सन्धि कहते हैं।

जैसे- अ + अ = आ, इ + इ = ई, अ + इ = ए

राम + अवतार = रामावतार

गिरि + इन्द्र = गिरीन्द्र

सन्धि तीन प्रकार के हैं।

- स्वर सन्धि
- व्यंजन सन्धि
- विसर्ग सन्धि

4.1.2 समास

दो या दो से अधिक शब्दों के मिलने पर जो नया और स्वतंत्र शब्द बनते हैं तो इस मेल को समास कहते हैं। इस प्रकार बने शब्दों को सामासिक शब्द कहते हैं।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

समास में पदों के प्रयोग होते हैं। इसे विग्रह कहते हैं।

जैसे- रसोईघर शब्द में रसोई और घर दो पद हैं। वे पूर्व पद और उत्तर पद हैं। पहले पद पूर्व पद और दूसरे पद उत्तर पद हैं।

रसोई के लिए घर = रसोईघर

राजकुमार, रसोईघर, नीलकमल आदि समास के लिए उदाहरण हैं।

समास के चार भेद हैं।

अव्ययीभाव

तत्पुरुष

द्वन्द्व

बहुव्रीहि

Recap / पुनरावृत्ति

- सन्धि और समास व्याकरण में मुख्य भूमिका निभाते हैं।
- एक या एक से अधिक वर्णों से बने शब्द भाषा की लघुतम इकाई है।
- दो अक्षरों के पास आने पर उनके मेल से जो विकार होता है उसे सन्धि कहते हैं।
- सन्धि तीन प्रकार के हैं। स्वर सन्धि, व्यंजन सन्धि, विसर्ग सन्धि
- दो या दो से अधिक शब्दों के मिलने पर जो नया और स्वतंत्र शब्द बनते हैं तो इस मेल को समास कहते हैं।
- समास में पदों के प्रयोग होते हैं।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. शब्द किसे कहते हैं?
2. दो वर्णों के मेल से बनने वाली रचना क्या कहलाती है?
3. रामावतार में किस प्रकार की सन्धि है?
4. समास में मिलने वाले दो पदों को क्या कहा जाता है?
5. 'राजकुमार' शब्द किस प्रक्रिया से बना है?
6. सन्धि के कितने प्रकार होते हैं?
7. नीलकमल शब्द किस प्रकार के समास का उदाहरण है?
8. समास में बनने वाले नए शब्द को क्या कहते हैं?

Answers / उत्तर

1. सार्थक लघुतम इकाई को
2. सन्धि
3. स्वर सन्धि
4. पूर्वपद और उत्तरपद
5. समास
6. 3
7. तत्पुरुष
8. सामासिक शब्द

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. सन्धि की परिभाषा लिखिए। उसके कितने भेद हैं?
2. स्वर सन्धि क्या है? उसके कितने भेद है?
3. व्यंजन सन्धि क्या है दो नियम लिखिए।
4. विसर्ग सन्धि क्या है? दो नियम लिखिए।
5. सन्धि और उसके भेदों का परिचय दीजिए।

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी व्याकरण - पं.कामताप्रसाद गुरु, लोकभारती प्रकाशन, महात्मागाँधी मार्ग, दरबारी बिल्डिंग, पहली मंज़िल,प्रयागराज, 211001, 2019.

इकाई 2 सन्धि एवं उसके प्रकार

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- सन्धि के बारे में समझता है
- सन्धि के प्रकार के बारे में समझता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

सन्धि का विषय संस्कृत व्याकरण से संबंध रखता है। संस्कृत भाषा में पदसिद्धि, समास और वाक्यों में सन्धि का प्रयोजन पड़ता है, परंतु हिन्दी में सन्धि के नियमों से मिले हुए संस्कृत के जो सामाजिक शब्द आते हैं, केवल उन्हीं के संबंध से इस विषय के निरूपण की आवश्यकता होती है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

दीर्घ सन्धि, गुण सन्धि, वृद्धि सन्धि, यण सन्धि, अयादि सन्धि

Discussion / चर्चा

4.2.1 सन्धि के प्रकार

I. स्वर सन्धिः दो स्वरें के परस्पर मेल हो जाने पर जो विकार उत्पन्न होता है उसे स्वर सन्धि कहते हैं।

स्वर सन्धि पाँच प्रकार की है।

दीर्घ सन्धि, गुण सन्धि, वृद्धि सन्धि, यण सन्धि, अयादि सन्धि

1. दीर्घ सन्धिः दो सजातीय स्वरों के मिलने पर दीर्घ सन्धि होता है।

अ + अ = आ	शब्द + अर्थ = शब्दार्थ
अ + आ = आ	शिव + आलय = शिवालय
आ + अ = आ	रेखा + अंश = रेखांश
आ + आ = आ	विद्या + आलय = विद्यालय
इ + ई = ई	हरि + ईश = हरीश
इ + इ = ई	गिरि + इन्द्र = गिरीन्द्र
ई + इ = ई	मही + इन्द्र = महीन्द्र
उ + उ = ऊ	गुरु + उपदेश = गुरूपदेश
उ + ऊ = ऊ	लघु + ऊर्मि = लघूर्मि
ऊ + उ = ऊ	भू + उद्धार = भूद्धार

2. गुण सन्धिः अ या आ के आगे इ या ई, उ, ऊ, ऋ के आने पर दोनों के मिलने से ए, ओ, और अर हो जाते हैं।

अ + इ = ए	शुभ + इच्छा = शुभेच्छा
अ + ई = ए	सूर + ईश = सुरेश
आ + ई = ए	रमा + ईश = रमेश
अ + उ = ओ	सूर्य + उदय = सूर्योदय

आ + उ = ओ   महा + उत्सव = महोत्सव

अ + ऋ = अर   महा + ऋषि = महर्षि

3. **वृद्धि सन्धिः** अ या आ के आगे ए या ऐ आए तो दोनों मिलकर ऐ, ओ और औ आए तो दोनों के स्थान पर औ हो जाता है।

अ + ए = ऐ   एक + एक = एकैक

अ + ऐ = ऐ   मत + ऐक्य = मतैक्य

आ + ए = ऐ   सदा + एव = सदैव

अ + औ = औ   महा + औषधि = महौषधि

4. **यण सन्धिः** इ ई उ ऊ और ऋ के बाद कोई और स्वर आये तो इ ई के य, उ ऊ के - व, ऋ का र होता है।

इ + अ = य   रीति + अनुसार = रीत्यनुसार

इ + आ = या   इति + आदि = इत्यादि

इ + उ = यु   प्रति + उपकार = प्रत्युपकार

इ + ऊ = यू   नि + ऊन = न्यून

उ + अ = व   मनु + अंतर = मन्वंतर

उ + आ = वा   मधु + आलय = मध्वालय

ऊ + ए = वे   अनु + एषण = अन्वेषण

ऋ + अ = र   पितृ + अनुमति = पित्रनुमति

ऋ + आ = रा   पितृ + आज्ञा = पित्राज्ञा

5. **अयादि सन्धिः** ए, ऐ, ओ और औ आदि स्वरों के बाद भिन्न स्वरों के आने पर उनके स्थान पर क्रमश अय्, आय्, अव्, आव् आदि होता है।

ने + अन = नयन

गै + यक = गायक

भो + अन = भवन

नौ + इक = नाविक

II. व्यंजन सन्धि

किसी व्यंजन वर्ण से स्वर या व्यंजन के मेल से व्यंजन सन्धि होती है।

व्यंजन सन्धि के नियम इस प्रकार है -

1. जब क्, च्, ट्, त्, प् के बाद कोई घोष वर्ण आये तो इन वर्णों (क्, च्, ट्, त्, प्) के स्थान पर अपने ही वर्ग का तृतीय वर्ण आते हैं।

जैसे- क् = ग्

च् = ज्

ट् = ड्

त् = द्

प् = ब्

सत् + वाणी = सद्वाणी

दिक्+ गज= दिग्गज

षट् +दर्शन= षड्दर्शन

2. क, च, ट, त, प का मेल हर एक वर्ग के पाँचवें वर्ण (ङ, ञ, ण, न, म) के साथ होता है तो ये पाँचवें वर्ण में बदल जाता है।

जैसे- क = ङ

च = ञ

ट = ण

त = न

प = म

वाक् + मय = वाङ्मय

जगत् + नाथ = जगन्नाथ

उत् + नति = उन्नति

3.'म्' के बाद किसी स्पर्श व्यंजन के आने पर 'म्' का अनुस्वार या उसके बाद के वर्ण के वर्ग का पंचम वर्ण में बदल जाता है।

जैसे- अहम् + कार = अहंकार

पम् + चम = पञ्चम

4. हर एक वर्ग के अंतिम वर्णों को छोड़कर शेष वर्णों के बाद 'ह' आये तो 'ह' पूर्व वर्ण के वर्ग का

चतुर्थ वर्ण बन जाता है और पूर्व वाला वर्ण अपने वर्ग का तृतीय वर्ण बन जाता है।

जैसे- उत् + हार = उद्धार

वाक् + हरि = वाग्घरि

5.पहले शब्द का अन्तिम वर्ण या दूसरे शब्द का पहला वर्ण मूर्धन्य हो तो दोनों मूर्धन्य हो जाते हैं।

जैसे- कृष् + न = कृष्ण

दुष् + त = दुष्ट

6. यदि म् के आगे अन्तस्थ या ऊष्म वर्ण आते हैं तो म् अनुस्वार में बदलता है।

जैसे- सम् + वाद = संवाद

सम + हार = संहार

7. सभी वर्गों में अन्तिम तीन व्यंजनों में से किसी भी व्यंजन के पहले 'स्' आने पर 'स्' बदलकर 'र्' होता है।

जैसे- निस् + मल = निर्मल

दुस + बल = दुर्बल

III. विसर्ग सन्धि

व्यंजन वर्ण से स्वर या व्यंजन के मेल होने पर उत्पन्न विकार को विसर्ग सन्धि कहते हैं।

विसर्ग सन्धि के नियम इस प्रकार है-

1. यदि विसर्ग के पहले और बाद में 'अः' आते है तो 'अः' के स्थान पर 'ओ' आ जाता है और फिर 'अ' का लोप हो जाता है।

   यशः + अभिलाषी = यशोभिलाषी

   प्रथमः + अध्याय = प्रथमोध्याय

2. विसर्ग के पहले 'इ' या 'उ' आते हैं और विसर्ग के बाद आने वाला वर्ण क, ख, ग, फ है तो विसर्ग के बदले 'ष् ' होता है।

   जैसे- निः + कपट = निष्कपट

   दुः + कर = दुष्कर

   निः + कारण = निष्कारण

   दुः + कर्म = दुष्कर्म

3. विसर्ग के बाद श, ष, स आदि आये तो विसर्ग जैसा है वैसा ही रहता है, अथवा उसके स्थान पर आगे का वर्ण हो जाता है।

   जैसे- रजः + कण = रजःकण

4. विसर्ग के पहले 'अ' आता है और उसके बाद में वर्ग का तृतीय, चतुर्थ या पंचम वर्ण (घोष वर्ण) आते हैं या य, र, ल, व, ह आदि रहते हैं तो विसर्ग 'उ' में बदल जाता है, और यह 'उ' पहले 'अ' से मिलकर गुणसन्धि के द्वारा 'ओ' हो जाता है।

   जैसे- सरः + ज = सरोज

   पयः + धर = पयोधर

   मनः + योग = मनोयोग

   यशः + दा = यशोदा

5. विसर्ग के आगे और पीछे 'अ' रहता है और पहला 'अ' और विसर्ग मिलकर 'ओ' बन जाता है और 'अ' का लोप हो जाता है।

   जैसे- यशः + अभिलाषी = यशोभिलाषी

   मनः + अभिलषित = मनोभिलषित

6. यदि विसर्ग के बाद 'र' आते है तो विसर्ग का लोप हो जाता है और पूर्व स्वर ह्रस्व हो तो वह दीर्घ हो जाता है।

   जैसे- निः + रस = नीरस

   निः + रव = नीरव

7. इ, उ आदि वर्णो के बाद विसर्ग हो और इसके बाद 'र्' आते है तो इ, उ आदि ई, ऊ हो जाते हैं और विसर्ग लुप्त हो जाता है।

   जैसे- निः + रस = नीरस

   निः + रोग = नीरोग

Recap / पुनरावृत्ति

- दो स्वरें के परस्पर मेल हो जाने पर जो विकार उत्पन्न होता है उसे स्वर सन्धि कहते हैं।
- सन्धि तीन प्रकार के हैं। स्वर सन्धि, व्यंजन सन्धि, विसर्ग सन्धि
- स्वर सन्धि पाँच प्रकार की है। दीर्घ सन्धि, गुण सन्धि, वृद्धि सन्धि, यण सन्धि, अयादि सन्धि
- किसी व्यंजन वर्ण से स्वर या व्यंजन के मेल से व्यंजन सन्धि होती है।
- व्यंजन वर्ण से स्वर या व्यंजन के मेल होने पर उत्पन्न विकार को विसर्ग सन्धि कहते हैं।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. दीर्घ सन्धि में 'अ + अ' का परिणाम क्या होता है?
2. गुण सन्धि में 'अ + इ' का परिणाम क्या होता है?
3. 'महा + औषधि' किस सन्धि का उदाहरण है?
4. 'प्रति + उपकार = प्रत्युपकार' किस सन्धि का उदाहरण है?
5. 'दुष्कर' शब्द में कौन-सी सन्धि है?
6. 'निस् + मल = निर्मल' किस सन्धि का उदाहरण है?
7. 'गै + यक = गायक' किस सन्धि का उदाहरण है?
8. 'मनु + अंतर = मन्वंतर' किस सन्धि का उदाहरण है?

Answers / उत्तर

1. आ
2. ए
3. वृद्धि सन्धि
4. यण सन्धि
5. विसर्ग सन्धि
6. व्यंजन सन्धि
7. अयादि सन्धि
8. यण सन्धि

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. सन्धि किसे कहते हैं? उदाहरण सहित समझाइए।
2. सन्धि के मुख्य प्रकार कौन-कौन से हैं?
3. स्वर सन्धि क्या है? उसके पाँच भेदों के नाम लिखिए।
4. व्यजंन सन्धि एवं इसके प्रकार को स्पष्ट कीजिए।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी व्याकरण - पं.कामताप्रसाद गुरु, लोकभारती प्रकाशन, महात्मागाँधी मार्ग, दरबारी बिल्डिंग, पहली मंज़िल, प्रयागराज, 211001, 2019.

SGOU

इकाई 3 समास एवं उसके प्रकार

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- समास से अवगत होता है
- समास के प्रकार के बारे में समझता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

समास को समझने से पहले विद्यार्थियों को शब्द, वाक्य, विभक्ति और कारक की बुनियादी जानकारी होना आवश्यक है। विशेष रूप से संज्ञा, विशेषण, अव्यय शब्दों और उनके प्रयोग की पहचान ज़रूरी है। साथ ही, विग्रह की प्रक्रिया और संख्यावाचक शब्दों की सामान्य समझ भी होनी चाहिए, जिससे समास के भेदों को सही ढंग से पहचाना जा सके। इन बुनियादी बातों की जानकारी से समास विषय को समझना अधिक आसान और रोचक हो जाता है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

पूर्वपद, व्यधिकरण तत्पुरुष,कर्मधारय तत्पुरुष

Discussion / चर्चा

4.3.1 समास

दो संबद्ध शब्दों को पास - पास ला बिठाने का नाम समास है। समास एक प्रक्रिया है। सम् = पास; आस = बिठाना। समास में दो शब्द पास - पास लाये जाते है।

उदाः दही बडा, चौराहा, रेल गाडी आदि।

पास पास लाकर बनाये हुए यौगिक शब्द को समास पद या समासयुक्त शब्द कहते हैं।

4.3.1.1 समास के प्रकार

1. **अव्ययीभाव समास**

जिस समास में पहला शब्द प्रधान होता है और वह अव्यय हो तो उसे अव्ययीभाव कहते हैं।

जैसे- प्रतिदिन, बेघर, यथाशक्ति

इन शब्दों में पूर्वपद प्रति, बे, यथा आदि अव्यय प्रधान हैं। इन अव्ययों के प्रयोग से ही उत्तर पद दिन, घर, शक्ति आदि के अर्थ में भिन्नता प्रकट हैं।

प्रतिदिन - हर दिन

बेघर - बिना घर के

यथाशक्ति - शक्ति के अनुसार

2. **तत्पुरुष समास**

जिस समास में दूसरा शब्द प्रधान होता है वह तत्पुरुष समास है। इसका पहला पद संज्ञा या विशेषण

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

होता है।

जैसे- अकाल पीडित - अकाल से पीडित

इसके दो भेद हैं। व्यधिकरण तत्पुरुष और समानाधिकरण तत्पुरुष अथवा कर्मधारेय तत्पुरुष।

1.व्यधिकरण तत्पुरुष समास

तत्पुरुष समास के विग्रह करते समय उसके अवयवों में भिन्न विभक्तियों का प्रयोग हो तो उसे व्यधिकरण तत्पुरुष समास कहते हैं। कर्ता कारक और संबोधन कारकों को छोड़कर शेष कारकों की विभक्तियों का प्रयोग इस के लिए होते हैं। व्यधिकरण तत्पुरुष समास के छः भेद हैं।

2. कर्म तत्पुरुष

कर्म तत्पुरुष समास में कर्म कारक की विभक्ति 'को' का लोप होता है।

जैसे- स्वर्गप्राप्त - स्वर्ग को प्राप्त

3. करण तत्पुरुष

करण तत्पुरुष समास में करण कारक की 'से' विभक्ति का लोप होता है।
जैसे- चिन्ताग्रस्त - चिन्ता से ग्रस्त

अकालपीड़ित - अकाल से पीडित

4. संप्रदान तत्पुरुष

संप्रदान तत्पुरुष समास में संप्रदान कारक की विभक्तियाँ 'को', 'के लिए' आदि का लोप हो जाते हैं।

जैसे- देशभक्ति - देश केलिए भक्ति

हवनसामग्री - हवन के लिए सामग्री

5. अपादान तत्पुरुष

अपादान तत्पुरुष समास में 'से' विभक्ति का लोप होता है।
जैसे- पदच्युत - पद से च्युत

धर्मभ्रष्ट - धर्म से भ्रष्ट

6. संबंध तत्पुरुष

संबंध तत्पुरुष समास में 'का', 'के', 'की' आदि विभक्तियों का लोप हो जाते हैं।
जैसे- देशोद्धार - देश का उद्धार

वायुपुत्र - वायु का पुत्र

7. अधिकरण तत्पुरुष

अधिकरण तत्पुरुष समास में विभक्तियाँ 'में' या 'पर' आदि का लोप हो जाते हैं।

जैसे- वनवास - वन में वास
चिन्तामग्न - चिन्ता में मग्न

घुड़सवार - घोडे पर सवार

2.समानाधिकरण तत्पुरुष अथवा कर्मधार तत्पुरुष

तत्परुष समास का विग्रह करते समय पूर्व पद और उत्तर पद के साथ कर्ता कारक की विभक्ति आती है तो उसे समानाधिकरण अथवा कर्मधारेय तत्पुरुष कहते हैं। इसमें विशेषण तथा उपमान - उपमेय होते हैं।

जैसे- नील कमल - नीला है जो कमल

गुरुदेव - गुरु रूपी देव

इसके तीन भेद हैं।

1. **विशेषण वाचक**

विशेष्य विशेषण का भाव समास में सूचित होने पर उसे विशेषण वाचक कर्मधारय तत्पुरुष समास कहते हैं।

जैसे- नील कमल - नीला कमल

2. **उपमावाचक**

उपमान और उपमेय का भाव किस समास से जाना जाता है उसे उपमावाचक कर्मधारय तत्पुरुष समास कहते हैं।

जैसे- भवसागर - भव रूपी सागर

3. **द्विगु**

द्विगु कर्मधारय तत्पुरुष समास में पहला पद

संख्यावाचक विशेषण होना है और उससे किसी समुदाय का बोध होता है।

जैसे- सप्तर्षि - सात ऋषियों का समूह।

3.द्वन्द्व समास

जिस समास में दोनों पद प्रधान होते हैं और जिसमें विग्रह करने पर या, अथवा आदि शब्द लगते हैं तो उसे द्वंद्व समास कहते हैं।

जैसे- राजा रानी - राजा और रानी

गायबैल - गाय और बैल

4.बहुव्रीहि समास

जिस समास में कोई भी पद प्रधान नहीं है तो समस्तपद अपने पदों में से भिन्न कोई अर्थ देता है या समस्त पद किसी का विशेषण है तो उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं।

जैसे- नीलकंठ - नीला है कंठ जिसका अर्थात् शिव

पीताम्बर - पीला है अम्बर जिसका अर्थात् श्रीकृष्ण

Recap / पुनरावृत्ति

- समास के चार भेद हैं। अव्ययीभाव, तत्पुरुष, द्वन्द्व, बहुव्रीहि
- तत्पुरुष समास के दो भेद हैं। व्यधिकरण तत्पुरुष और समानाधिकरण तत्पुरुष अथवा कर्मधारय तत्पुरुष।
- व्यधिकरण तत्पुरुष समास के छः भेद हैं।
- समानाधिकरण तत्पुरुष अथवा कर्मधारय तत्पुरुष के तीन भेद हैं।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'प्रतिदिन' शब्द किस समास का उदाहरण है?
2. जिस समास में दूसरा पद प्रधान होता है, वह कौन-सा समास है?
3. 'नीलकमल' किस प्रकार के समास का उदाहरण है?
4. 'पदच्युत' शब्द में कौन-सा तत्पुरुष समास है?
5. 'सप्तर्षि' शब्द में कौन-सा समास है?
6. 'राजा-रानी' शब्द किस समास का उदाहरण है?
7. जिस समास में कोई भी पद प्रधान नहीं होता है, वह कौन-सा समास है?
8. 'चिन्ताग्रस्त' शब्द में कौन-सा तत्पुरुष समास है?

Answers / उत्तर

1. अव्ययीभाव समास
2. तत्पुरुष
3. कर्मधारय तत्पुरुष
4. अपादान
5. द्विगु
6. द्वंद्व समास
7. बहुव्रीहि
8. करण

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. समास की परिभाषा लिखकर विवेचना कीजिए।
2. अव्ययीभाव समास क्या है सोदाहरण लिखिए?
3. तत्पुरुष समास क्या है सोदाहरण लिखिए?
4. द्वन्द्व समास क्या है सोदाहरण लिखिए?
5. बहुव्रीहि समास क्या है सोदाहरण लिखिए?

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी व्याकरण - पं.कामताप्रसाद गुरु, लोकभारती प्रकाशन, महात्मागाँधी मार्ग, दरबारी बिल्डिंग, पहली मंज़िल, प्रयागराज, 211001, 2019.

BLOCK 05

विकारी शब्द और प्रयोग

इकाई 1 विकारी शब्द, संज्ञा एवं उसके प्रकार

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- विकारी शब्द से परिचय प्राप्त करता है
- संज्ञा के बारे में समझता है
- संज्ञा के प्रकारों को समझता है
- संज्ञा के रूपांतरण समझता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

संसार में बहुत सारी भाषाएँ हैं और इन सारी भाषाओं में बहुत सारे शब्द है। विभिन्न भाषाओं में समान अर्थ में प्रयुक्त होने वाले विभिन्न शब्द है। और इन शब्दों को विभिन्न प्रकार से वर्गीकृत भी किया गया है। हिन्दी भाषा में मोटे तौर पर शब्दों को दो भागों में वर्गीकृत किया है और उसके अंतर्गत पुनः चार उपभेद दिया गया है। और हर एक उपभेद का भी अपनी विशेषता के तहत फिर से विभाजित किया है। उन भेदों एवं उपभेदों के बारे में इस अध्याय में चर्चा किया जा रहा है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

संज्ञा, व्यक्तिवाचक संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा, भाववाचक संज्ञा, समुदायवाचक संज्ञा, द्रव्यवाचक संज्ञा

Discussion / चर्चा

5.1.1 विकारी शब्द

लिंग, वचन, कारक आदि के अनुसार बदलने वाले शब्दों को विकारी शब्द कहते हैं। विकारी शब्दों के चार भेद हैं।

संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया।

5.1.2 संज्ञा एवं उसके प्रकार

किसी व्यक्ति, वस्तु, जाति, स्थान, भाव या गुण के नाम का बोध कराने वाले विकारी शब्दों को संज्ञा कहते हैं।

जैसे- मेज़, रेष्मा, दिल्ली, विद्यालय, खुशी

संज्ञा के मुख्यतः तीन भेद हैं।

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा
2. जातिवाचक संज्ञा
3. भाववाचक संज्ञा

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा

किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान का बोध जिस संज्ञा से होता है उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहती है।

जैसे- कोलकत्ता, रामू, गंगा

2. जातिवाचक संज्ञा

एक जाति के सभी प्राणियों का बोध कराने वाली संज्ञा जातिवाचक संज्ञा कहलाती है।

जैसे- मनुष्य, पुस्तक, नदी

3. भाववाचक संज्ञा

किसी पदार्थ के गुण, अवस्था या व्यापार का बोध कराने वाली संज्ञा भाववाचक संज्ञा कहलाती है।

जैसे- खुशी, सौन्दर्य, मनुष्यता, बुढापा

संज्ञाओं का रूपांतरण - लिंग, वचन, कारक के अनुसार

लिंग, वचन, कारक आदि के कारण संज्ञाओं में जो परिवर्तन या विकार होते हैं, उसे संज्ञाओं के रूपांतरण कहते हैं।

लिंग के अनुसार संज्ञा में परिवर्तन।

लड़का दौड़ता है - लड़की दौड़ती है।

इन वाक्यों में मूल शब्द लड़का (पुल्लिंग) का रूप बदलकर लड़की (स्त्रीलिंग) बन गयी।

वचन के अनुसार संज्ञा में परिवर्तन।

लड़का दौड़ता है - लड़के दौड़ते हैं

इन वाक्यों में लड़का (एक वचन) का रूप बदलकर लड़के (बहुवचन) बन गये है। इसमें लड़का शब्द से एक लड़के का बोध होता है और लड़के शब्द से एक से अधिक लड़कों का बोध होता हैं।

कारक के अनुसार संज्ञा में परिवर्तन।

लड़के को दौड़ने दो

इस वाक्य में लड़के को (कारक का चिह्न) शब्द कारक के अनुसार संज्ञा के रूपांतर के लिए उदाहरण है।

अंग्रेज़ी व्याकरण के आधार पर दो अन्य संज्ञाएँ भी मानी जाती हैं।

वे हैं - समुदायवाचक संज्ञा और द्रव्यवाचक संज्ञा।

समुदायवाचक संज्ञा

किसी व्यक्ति या वस्तु के समुदाय का बोध करानेवाली संज्ञा समुदायवाचक संज्ञा कहलाती है।

जैसे- सभा, कुंज, भीड़, संघ, गुच्छा

द्रव्यवाचक संज्ञा

जिस संज्ञा से किसी द्रव्य पदार्थ या नाप-तौल वाली वस्तु का बोध होता है वह द्रव्यवाचक संज्ञा कहलाती है।

जैसे- दूध, पानी, चाँदी, तेल, शहद

Critical Overview /अवलोकन

हर दिन हम विभिन्न प्रकार के शब्दों का उपयोग करते हैं। इसमें प्रमुखता से प्रयोग की जानेवाली शब्द प्रकार है संज्ञा। संज्ञा के मुख्यतः तीन प्रकार है - व्यक्तिवाचक संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा और भाववाचक संज्ञा। और अंग्रेज़ी व्याकरण के आधार पर दो अन्य संज्ञाएँ भी मानी जाती हैं - समुदायवाचक संज्ञा और द्रव्यवाचक संज्ञा।

Recap / पुनरावृत्ति

- लिंग, वचन, कारक आदि के अनुसार बदलने वाले शब्दों को विकारी शब्द कहते हैं।
- विकारी शब्द के चार भेद हैं - संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया।
- किसी व्यक्ति, वस्तु, जाति, स्थान, भाव या गुण के नाम का बोध कराने वाले विकारी शब्दों को संज्ञा कहते हैं।
- संज्ञा के तीन भेद हैं - व्यक्तिवाचक संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा, भाववाचक संज्ञा
- किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान का बोध जिस संज्ञा से होता है उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहती है।
- एक जाति के सभी प्राणियों का बोध कराने वाली संज्ञा जातिवाचक संज्ञा कहलाती है।
- किसी पदार्थ के गुण, अवस्था या व्यापार का बोध कराने वाली संज्ञा भाववाचक संज्ञा कहलाती है।
- लिंग, वचन, कारक आदि के कारण संज्ञाओं में जो परिवर्तन या विकार होते हैं, उसे संज्ञाओं के रूपांतरण कहते हैं।
- किसी व्यक्ति या वस्तु के समुदाय का बोध करानेवाली संज्ञा समुदायवाचक संज्ञा कहलाती है।
- जिस संज्ञा से किसी द्रव्य पदार्थ या नाप-तौल वाली वस्तु का बोध होता है वह द्रव्यवाचक संज्ञा कहलाती है।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. विकारी शब्द के कितने भेद है?
2. विकारी शब्द के भेद कौन कौन से हैं?
3. संज्ञा कौन सा शब्द है?
4. संज्ञा के मुख्यतः कितने भेद है?
5. व्यक्तिवाचक संज्ञा का एक उदाहरण दीजिए?
6. जातिवाचक संज्ञा का एक उदाहरण दीजिए?
7. भाववाचक संज्ञा का एक उदाहरण दीजिए?
8. समुदायवाचक संज्ञा का एक उदाहरण दीजिए?
9. द्रव्यवाचक संज्ञा का एक उदाहरण दीजिए?
10. किन किन के कारण संज्ञाओं में परिवर्तन होता है?

Answers / उत्तर

1. चार
2. संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया और विशेषण
3. विकारी
4. तीन

5. रामू
6. नदी
7. मनुष्यता
8. भीड़
9. पानी
10. लिंग, वचन, कारक आदि के कारण

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. विकारी शब्द माने क्या है? स्पष्ट कीजिए।
2. विकारी शब्द के प्रकारों पर प्रकाश डालिए।
3. संज्ञा से क्या तात्पर्य है?
4. संज्ञा के प्रकारों पर प्रकाश डालिए।
5. लिंग, वचन, कारक आदि के कारण संज्ञाओं में होनेवाला परिवर्तन का परिचय दीजिए।

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी व्याकरण - स्व.पं.कामताप्रसाद गुरु, लोकभारती प्रकाशन, महात्मागाँधी मार्ग, दरबारी बिल्डिंग, पहली मंज़िल, प्रयागराज, 211001, 2019.

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

इकाई 2 कारक, लिंग और वचन

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- कारक की परिभाषा समझता है
- कारक के प्रकार समझता है
- लिंग की परिकल्पना समझता है
- लिंग के भेद एवं प्रयोग समझता है
- वचन के बारे में जानकारी प्राप्त करता है
- वचन के प्रकारों से परिचित होता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

भाषा का चरम अवयव वाक्य है। कोई भी भाषा वाक्यों द्वारा ही अपना रूप लेती है। जब हम मातृभाषा सीखते हैं, तब वाक्यों से ही शुरू करते हैं। वाक्य में कई शब्द होते हैं और शब्द के कई रूप होते हैं। जब किसी शब्द का दूसरे शब्द से संबंध जोड़ना है तो उसके साथ कई विभक्ति चिह्न लगाना पड़ता है। और इसकी जानकारी कारक पढ़कर समझ सकता है।

इसी तरह संज्ञा की जाति को समझने केलिए भी शब्द के रूप में परिवर्तन किया जाता है। और शब्द की संख्या का बोध कराने केलिए भी शब्द के रूप में परिवर्तन किया जाता है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

कारक, विभक्ति चिह्न, कर्ता कारक, कर्म कारक, करण कारक, संप्रदान कारक, अपादान कारक, संबंध कारक, अधिकरण कारक, संबोधन कारक, लिंग, पुल्लिंग, स्त्रीलिंग, वचन, एकवचन, बहुवचन

Discussion / चर्चा

5.2.1 कारक

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य के किसी अन्य शब्द के साथ प्रकट होता है तो उसे कारक कहते हैं।

जैसे- सीता ने रामू को लाठी से मारा।

कारक को व्यक्त करने के लिए संज्ञा और सर्वनाम के साथ जो शब्दांश लगाते हैं उन्हें विभक्ति कहते हैं। जैसे- ने, को, से

कारक	विभक्ति चिह्न
कर्ता कारक	ने
कर्म कारक	को
करण	से
संप्रदान	को, केलिए, के वास्ते
अपादान	से
संबंध	का, के, की
अधिकरण	में, पर
संबोधन	हे, अरे

कर्ता कारक

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से किसी कार्य करने वाले का बोध होता है तो उसे कर्ता कारक कहते हैं। इसकी विभक्ति 'ने' है।

जैसे- राम ने रावण को मारा।

वाक्य में कर्ता के साथ ने प्रत्यय जोड़ते हैं तो कर्म के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार क्रिया बदलते हैं।

कर्म कारक

क्रिया के व्यापार का फल जिस पर पड़ता है उसका बोध कराने वाले कारक कर्म कारक कहलाते हैं। इसकी विभक्ति 'को' है।

जैसे- सीता ने बच्चे को बुलाया। यहाँ 'बच्चे को' कर्म कारक है।

रमेश ने दूध पिया। - इस वाक्य में 'को' विभक्ति का प्रयोग नहीं हुआ है। अप्राणिवाचक शब्दों के साथ 'को' विभक्ति नहीं जुड़ता।

करण कारक

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के साधन का पता चलता है तो उसे करण कारक कहते हैं। करण कारक की विभक्ति 'से' है।

रामू कलम से लिखता है।

संप्रदान कारक

जिस को कुछ दिया जाता है या जिस के लिए कुछ किया जाता है इसका बोध कराने वाले कारक को संप्रदान कारक कहते हैं। इसकी विभक्तियाँ - को, केलिए, के वास्ते आदि हैं।

जैसे- रमेश को एक किताब दो।

अनिता ने बच्चे केलिए एक किताब खरीदा।

अपादान कारक

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से किसी दूसरे वस्तु के पृथक होने का बोध होता है तो उसे अपादान कारक कहते है। इसकी विभक्ति 'से' है।

रामू स्कूल से आ रहा है।

क्रिया की शुरुआत होने की सूचना देने केलिए अपादान कारक का प्रयोग होता है।

जैसे- आज से मेला शुरू होगा।

दो वस्तुओं की तुलना करने केलिए भी इसका प्रयोग होता है।

जैसे- सीता गीता से बडी है।

संबंध कारक

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य के किसी अन्य शब्द से प्रकट होता है तो उसे संबंध कारक कहते हैं।

इसकी विभक्तियाँ का, के, की हैं।
जैसे- यह सीता का घर है।
ये सीता के बच्चे हैं।
यह सीता की पुस्तक है।

अधिकरण कारक

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया या संज्ञा का आधार मालूम होता है तो उसे अधिकरण कारक कहते हैं।

इसकी विभक्तियाँ - में, पर

जैसे- रामू के घर में कौन कौन हैं

जहाज़ सागर में तैरता है।

संबोधन कारक

संज्ञा के जिस रूप से किसी को पुकारने का बोध होता है तो उसे संबोधन कारक कहते हैं।

विभक्ति के बदले इसमें संज्ञा के पहले हे, अरे, अहो, अजी आदि अव्यय लगाये जाते हैं।

जैसे- अरे दुष्ट !

हे राम !

5.2.2 लिंग

लिंग शब्द संस्कृत भाषा का है। इस का अर्थ है- निशान या चिह्न। संज्ञा के जिस रूप से वस्तु की जाति मालूम होती है उसे लिंग कहते हैं।

5.2.2.1 लिंग निर्णय

हिन्दी में लिंग निर्णय का सामान्य नियम के अनुसार दो तरह से लिंग निर्णय करते हैं। शब्द के अनुसार और शब्द के अर्थ के अनुसार। प्राणिवाचक शब्दों का लिंग अर्थ के अनुसार और अप्राणिवाचक शब्दों का लिंग रूप के अनुसार निर्णय करते हैं।

स्त्री लिंग और पुल्लिंग

स्त्री जाति का बोध कराने वाला शब्द स्त्रीलिंग और पुरुष जाति का बोध कराने वाला शब्द पुल्लिंग है।

स्त्रीलिंग: लड़की, घोडी, मेज़, कुर्सी, कुत्ती, शेरनी, हथिनी

पुल्लिंग: लड़का, आदमी, कुत्ता, शेर, हाथी

पुल्लिंग और स्त्रीलिंग शब्दों को पहचानने केलिए कई नियम होते हैं।

5.2.3 वचन

संज्ञा के जिस रूप से किसी संख्या का बोध होता है तो उसे वचन कहते हैं।

वचन के दो भेद हैं।

एकवचन और बहुवचन

एकवचन: संज्ञा के जिस रूप से किसी एक वस्तु या पदार्थ का बोध हो तो उसे एकवचन कहते हैं।

लड़की, लड़का, पुस्तक

बहुवचन: संज्ञा के जिस रूप से एक से अधिक पदार्थों का बोध हो तो उसे बहुवचन कहते हैं।

जैसे- लड़कियाँ, लड़के, पुस्तकें

Critical Overview /अवलोकन

संज्ञा या सर्वनाम के वाक्य के दूसरे शब्दों से संबंध सूचित करने केलिए कारक का प्रयोग किया जाता है। कारक आठ प्रकार के होते हैं। कर्ता कारक, कर्म कारक, करण कारक, संप्रदान कारक, अपादान कारक, संबंध कारक, अधिकरण कारक और संबोधन कारक। प्रत्येक कारक केलिए विभक्ति चिह्न भी होता है।

उसी प्रकार इस अध्याय में लिंग एवं वचन का भी अध्ययन हुआ है। इससे संज्ञा की जाति और संख्या का बोध होता है। हिन्दी भाषा में लिंग एवं वचन दो-दो प्रकार के होते हैं। पुल्लिंग-स्त्रीलिंग और एकवचन-बहुवचन।

Recap / पुनरावृत्ति

- संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य के किसी अन्य शब्द के साथ प्रकट होता है तो उसे कारक कहते हैं।
- कारक को व्यक्त करने के लिए संज्ञा और सर्वनाम के साथ जो शब्दांश लगाते हैं उन्हें विभक्ति कहते हैं। जैसे- ने, को, से
- संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से किसी कार्य करने वाले का बोध होता है तो उसे कर्ता कारक कहते हैं। इसकी विभक्ति 'ने' है।
- वाक्य में कर्ता के साथ ने प्रत्यय जोड़ते हैं तो कर्म के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार क्रिया बदलते हैं।
- क्रिया के व्यापार का फल जिस पर पड़ता है उसका बोध कराने वाले कारक कर्म कारक कहलाते हैं।
- अप्राणिवाचक शब्दों के साथ 'को' विभक्ति नहीं जुड़ता।
- संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के साधन का पता चलता है तो उसे करण कारक कहते हैं।
- जिस को कुछ दिया जाता है या जिस के लिए कुछ किया जाता है इसका बोध कराने वाले कारक को संप्रदान कारक कहते हैं।
- संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से किसी दूसरे वस्तु के पृथक होने का बोध होता है तो उसे अपादान कारक कहते है।
- क्रिया की शुरुआत होने की सूचना देने केलिए अपादान कारक का प्रयोग होता है।
- संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध या लगाव वाक्य के किसी अन्य शब्दों से प्रकट होता है तो उसे संबंध कारक कहते हैं।
- संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया या संज्ञा के आधार मालूम होता है तो उसे अधिकरण कारक कहते हैं।
- संज्ञा के जिस रूप से किसी को पुकारने का बोध होता है तो उसे संबोधन कारक कहते हैं।
- संज्ञा के जिस रूप से वस्तु की जाति मालूम होती है उसे लिंग कहते हैं।
- हिन्दी में लिंग निर्णय का सामान्य नियम के अनुसार दो तरह से लिंग निर्णय करते हैं। शब्द के अनुसार और शब्द के अर्थ के अनुसार।
- प्राणिवाचक शब्दों का लिंग अर्थ के अनुसार और अप्राणिवाचक शब्दों का लिंग रूप के अनुसार निर्णय करते हैं।
- स्त्री जाति का बोध कराने वाला शब्द स्त्रीलिंग और पुरुष जाति का बोध कराने वाला शब्द पुल्लिंग है।
- संज्ञा के जिस रूप से किसी संख्या का बोध होता है तो उसे वचन कहते हैं।
- संज्ञा के जिस रूप से किसी एक वस्तु या पदार्थ का बोध हो तो उसे एकवचन कहते हैं।
- संज्ञा के जिस रूप से एक से अधिक पदार्थों का बोध हो तो उसे बहुवचन कहते हैं।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. कारक के कितने भेद हैं?
2. विभक्ति क्या है?
3. कर्ता कारक की विभक्ति क्या है?
4. कर्म कारक की विभक्ति क्या है?
5. करण कारक की विभक्ति क्या है?
6. संप्रदान कारक की विभक्ति क्या है?
7. अपादान कारक की विभक्ति क्या है?
8. संबंध कारक की विभक्ति क्या है?
9. अधिकरण कारक की विभक्ति क्या है?
10. संबोधन कारक की विभक्ति क्या है?
11. दो वस्तुओं की तुलना करने केलिए किस कारक का प्रयोग करता है?
12. लिंग शब्द किस भाषा का है?
13. लिंग के कितने भेद हैं?
14. लिंग के भेद कौन कौन से हैं?
15. स्त्रीलिंग का एक उदाहरण लिखिए?
16. पुल्लिंग का एक उदाहरण लिखिए?
17. वचन के कितने भेद हैं?
18. वचन के प्रकार कौन कौन से हैं?
19. एकवचन का एक उदाहरण लिखिए?
20. बहुवचन का एक उदाहरण लिखिए?

Answers / उत्तर

1. आठ
2. कारक को व्यक्त करने के लिए संज्ञा और सर्वनाम के साथ जो शब्दांश लगाते हैं उन्हें विभक्ति कहते हैं।
3. ने
4. को
5. से
6. को, केलिए
7. से
8. का, के, की
9. में, पर
10. हे, अरे

11. अपादान कारक
12. संस्कृत
13. दो
14. पुल्लिंग और स्त्रीलिंग
15. लड़की
16. लड़का
17. दो
18. एकवचन और बहुवचन
19. पुस्तक
20. पुस्तकें

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. कारक का विस्तार से परिचय दीजिए। कारक के प्रकारों पर प्रकाश डालिए।
2. प्रत्येक कारक एवं उसके विभक्ति चिह्नों का उल्लेख कीजिए।
3. कर्म कारक एवं संप्रदान कारक में क्या अंतर हैं?
4. करण कारक एवं अपादान कारक में क्या अंतर हैं?
5. लिंग एवं उसके भेदों का उदाहरण सहित परिचय दीजिए।
6. वचन एवं उसके भेदों पर उदाहरण सहित चर्चा चलाईए।

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी व्याकरण - पं.कामताप्रसाद गुरु, लोकभारती प्रकाशन, महात्मागाँधी मार्ग, दरबारी बिल्डिंग, पहली मंज़िल, प्रयागराज, 211001, 2019.

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

इकाई 3 सर्वनाम और विशेषण एवं उसके प्रकार

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- सर्वनाम के बारे में जानकारी प्राप्त होती है
- सर्वनाम के भेद और प्रयोग समझता है
- विशेषण के बारे में समझता है
- विशेषण के प्रकार समझता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

जब हम बात करते हैं तो किसी वस्तु या व्यक्ति को उल्लिखित करते हुए बार बार उस व्यक्ति या वस्तु का नाम लिया जाए तो नीरस लगने लगेगा। ऐसे में हम उस नाम के बदले कुछ अन्य शब्दों का प्रयोग करते हैं। उन शब्दों को हम सर्वनाम कहेंगे। सर्वनाम कई प्रकार के होते हैं। उसका अध्ययन इस अध्याय में किया जाएगा।

साथ ही शब्दों को अधिक प्रभावपूर्ण बनानेवाली विशेषण शब्दों के बारे में भी इस अध्याय में अध्ययन किया जाएगा।

Keywords / मुख्य बिन्दु

सर्वनाम, पुरुषवाचक, उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष, अन्य पुरुष, निजवाचक, निश्चयवाचक, अनिश्चयवाचक, संबंधवाचक, प्रश्नवाचक, विशेषण, गुणवाचक, संख्यावाचक, परिमाण वाचक, सार्वनामिक

Discussion / चर्चा

5.3.1 सर्वनाम - परिभाषा और विभिन्न प्रकार के सर्वनाम

संज्ञा की पुनरुक्ति (Repetition) दूर करने के लिए उसके अर्थ में प्रयुक्त विकारी शब्द सर्वनाम कहलाता है।

जैसे- यह, वह, ये, वे, तू, तुम, आप

सर्वनाम छः प्रकार के हैं।

1. पुरुषवाचक
2. निजवाचक
3. निश्चयवाचक
4. अनिश्चयवाचक
5. संबंधवाचक
6. प्रश्नवाचक

5.3.1.1 पुरुषवाचक सर्वनाम

जिस सर्वनाम द्वारा बोलनेवाले, सुननेवाले और जिस व्यक्ति के संबंध में बोला जाता है उसका बोध होता है तो वह पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाता है। इसकी कुछ विशेषताएँ हैं-

1. 'हम' सर्वनाम बहुवचन है। लेकिन एकवचन के लिए भी यह प्रयुक्त होता है। बडे-बडे व्यक्तियाँ अपने बडप्पन सूचित करने के लिए 'मैं' के स्थान पर 'हम' का प्रयोग करते हैं।
2. बडे और आदरणीय व्यक्तियों के लिए 'यह', 'वह' के बदले 'ये' और 'वे' का प्रयोग होता है। यह आदर दिखाने के लिए है।

   जैसे- वे (प्रधानमंत्री) आज केरल आ रहे हैं।
3. 'तू' सर्वनाम का प्रयोग दो तरह से होता है। एक तो अपने से बहुत छोटों के लिए और दूसरा - लोगों को निरादर करने के लिए।

   जैसे- बहन तू इधर आओ।

   तू कहीं जाते हो कि नहीं?
4. 'तुम' सर्वनाम एकवचन और बहुवचन दोनों में प्रयुक्त होता है।

   जैसे- रमेश क्या तुम मेरी बात मानोगे?

   बच्चों आओ, मैं तुम को एक कहानी सुनाती हूँ।
5. 'आप' शब्द जो बहुवचन है, आदर दिखाने के लिए एक वचन में प्रयुक्त होता है।

   जैसे- माताजी आप इतने दिन कहाँ थी?

पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन भेद हैं।

- ▶ उत्तम पुरुष
- ▶ मध्यम पुरुष
- ▶ अन्य पुरुष

उत्तम पुरुषः बोलने वाले और लिखने वाले व्यक्तियों के स्थान पर प्रयुक्त सर्वनामों को उत्तम पुरुष सर्वनाम कहते हैं।

जैसे -मैं, हम

मध्यम पुरुषः सुनने वाले के लिए जिन सर्वनामों का प्रयोग होता है, वह मध्यम पुरुष सर्वनाम कहलाते हैं।

जैसे- तू, तुम, आप

अन्य पुरुषः जिसके विषय में कुछ कहा जाय या लिखा जाय उस केलिए प्रयुक्त सर्वनाम अन्यपुरुष सर्वनाम कहलाते हैं।

जैसे- यह, वह, ये, वे

5.3.1.2 निजवाचक सर्वनाम

अपने आप के लिए प्रयुक्त सर्वनाम निजवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। यहाँ 'आप' स्वयं, खुद आदि अर्थो में होते हैं।

जैसे- मैं आप यह काम करूँगी।

राजू अपने आप चला गया।

ऊपर लिखित वाक्यों में प्रयुक्त 'आप' पुरुषवाचक सर्वनाम 'आप' से भिन्न है। पुरुषवाचक सर्वनाम 'आप' का प्रयोग सम्मानार्थ होता है। कभी कभी निजवाचक 'आप' के स्थान पर 'अपना' का भी प्रयोग होता है।

5.3.1.3 निश्चयवाचक सर्वनाम

किसी वस्तु, व्यक्ति या स्थान का निश्चय का बोध जिस सर्वनाम से होता है उन्हें निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।

जैसे- यह, वह, ये, वे

5.3.1.4 अनिश्चयवाचक सर्वनाम

किसी ऐसे व्यक्ति या वस्तु का बोध कराने केलिए, जिसके बारे में हम निश्चित रूप से कुछ जानते नहीं हैं, अनिश्चयवाचक सर्वनाम का प्रयोग होता है।

जैसे- कोई, कुछ

देखो मेरे घर में कोई आया है।

कुछ खाने को दे दो।

5.3.1.5 संबंधवाचक सर्वनाम

दो व्यक्तियों, वस्तुओं और बातों का संबंध जिस सर्वनाम द्वारा व्यक्त होता है उन्हें संबंधवाचक सर्वनाम कहते हैं।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

जैसे- जो परिश्रम करेगा वह उत्तीर्ण होगा।

वह कौन है जो सो रहा है।

5.3.1.6 प्रश्नवाचक सर्वनाम

प्रश्न करने के लिए जिस सर्वनाम का प्रयोग होता है या जिस सर्वनाम से किसी प्रश्न का बोध होता है उन्हें प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं।

जैसे- तुम क्या लिख रहे हो?

रोटी किसने बनाया?

5.3.2 विशेषण - परिभाषा

संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता, धर्म, गुण आदि जिस विकारी शब्द द्वारा प्रकट होते हैं उसे विशेषण कहते हैं। जिस विशेषण द्वारा शब्द की विशेषता बताती है वे विशेष्य कहलाते हैं।

जैसे- सीता सुन्दर लड़की है

बगीचे में सुन्दर फूल खिले हैं।

राजू अच्छा लड़का है।

विशेषण के चार भेद हैं।

गुणवाचक, संख्यावाचक, परिमाण वाचक और सार्वनामिक

गुणवाचक विशेषण: जिस विशेषण से किसी संज्ञा या सर्वनाम के गुण, आकार, दशा और स्थान के बारे में मालूम हो जाता है तो उसे गुणवाचक विशेषण कहते हैं।

जैसे- भला, सीधा, गरीब, भीतरी

संख्यावाचक विशेषण: जिस विशेषण से किसी संज्ञा या सर्वनाम के संख्या का बोध होता है तो उसे संख्यावाचक विशेषण कहते हैं।

इसके दो भेद हैं -

निश्चित संख्यावाचक विशेषण: उदाहरण - एक, दो

अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण: उदाहरण - कुछ लड़कियाँ, अनेक स्त्रियाँ

परिमाणवाचक विशेषण: जिस विशेषण से किसी वस्तु की माप, तोल या परिमाण का बोध होता है तो उसे परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं। इसके दो भेद हैं-

निश्चित परिमाण वाचक: उदाहरण सवा सेर गेहूँ

अनिश्चित परिमाण वाचक उदाहरण: थोडा, ज़्यादा

सार्वनामिक विशेषण: सर्वनाम विशेषण के रूप में प्रयुक्त होता है तो उसे सार्वनामिक विशेषण कहते हैं।

जैसे- यह कलम मेरा है।

वह घर रामू का है।

Critical Overview /अवलोकन

संज्ञा के स्थान पर उसी अर्थ में प्रयुक्त शब्द है सर्वनाम। सर्वनाम कई प्रकार के होते हैं - पुरुषवाचक, निजवाचक, निश्चयवाचक, अनिश्चयवाचक, संबंधवाचक और प्रश्नवाचक। इसमें पुरुषवाचक सर्वनाम का पुनः तीन भेद हैं - उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष और अन्य पुरुष।

विशेषण चार प्रकार के होते हैं - गुणवाचक, संख्यावाचक, परिमाण वाचक और सार्वनामिक।

Recap / पुनरावृत्ति

- संज्ञा की पुनरुक्ति (Repetition) दूर करने के लिए उसके अर्थ में प्रयुक्त विकारी शब्द सर्वनाम कहलाता है।
- सर्वनाम छः प्रकार के हैं।
- जिस सर्वनाम द्वारा बोलनेवाले, सुननेवाले और जिस व्यक्ति के संबंध में बोला जाता है उसका बोध कराते हो वह पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।
- पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन भेद हैं। - उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष और अन्य पुरुष।
- बोलने वाले और लिखने वाले व्यक्तियों के स्थान पर प्रयुक्त सर्वनामों को उत्तम पुरुष सर्वनाम कहते हैं।
- सुनने वाले के लिए जिन सर्वनामों का प्रयोग होता है, वह मध्यम पुरुष सर्वनाम कहलाते हैं।
- जिसके विषय में कुछ कहा जाय या लिखा जाय उस केलिए प्रयुक्त सर्वनाम अन्यपुरुष सर्वनाम कहलाते हैं।
- अपने आप के लिए प्रयुक्त सर्वनाम निजवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।
- किसी वस्तु, व्यक्ति या स्थान का बोध जिस सर्वनाम से होता है उन्हें निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।
- वस्तु, व्यक्ति, स्थान आदि का निश्चय जिस सर्वनाम से नहीं होता, उन्हें अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।
- दो व्यक्तियों, वस्तुओं और बातों का संबंध जिस सर्वनाम द्वारा व्यक्त होता है उन्हें संबंधवाचक सर्वनाम कहते हैं।
- प्रश्न करने के लिए जिस सर्वनाम का प्रयोग होता है या जिस सर्वनाम से किसी प्रश्न का बोध होता है उन्हें प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं।
- संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता, धर्म, गुण आदि जिन विकारी शब्दों द्वारा प्रकट होते हैं उसे विशेषण कहते हैं।
- विशेषण जिस शब्द की विशेषता बताते है वे विशेष्य कहलाते हैं।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. सर्वनाम के कितने भेद हैं?
2. पुरुषवाचक सर्वनाम के कितने उपभेद हैं?
3. पुरुषवाचक सर्वनाम के उपभेद कौन कौन से हैं?
4. अपने आप के लिए प्रयुक्त सर्वनाम को क्या कहते हैं?
5. किसी वस्तु, व्यक्ति या स्थान का निश्चय का बोध किस सर्वनाम से होता है?
6. दो व्यक्तियों, वस्तुओं और बातों का संबंध सूचित करनेवाला सर्वनाम?
7. विशेषण के कितने भेद हैं?
8. संज्ञा या सर्वनाम के संख्या का बोध करानेवाली विशेषण?

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Answers / उत्तर

1. छह
2. तीन
3. उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष, अन्य पुरुष
4. निजवाचक सर्वनाम
5. निश्चयवाचक सर्वनाम
6. संबंधवाचक सर्वनाम
7. चार
8. संख्यावाचक विशेषण

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. सर्वनाम का परिचय दीजिए।
2. सर्वनाम के प्रकारों पर चर्चा कीजिए।
3. पुरुषवाचक सर्वनाम के उपभेदों पर चर्चा कीजिए।
4. निजवाचक 'आप' एवं पुरुषवाचक 'आप' में क्या अंतर है?
5. विशेषण का परिचय देते हुए उसके प्रकारों पर प्रकाश डालिए।

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी व्याकरण - पं. कामताप्रसाद गुरु, लोकभारती प्रकाशन, महात्मागाँधी मार्ग, दरबारी बिल्डिंग, पहली मंज़िल, प्रयागराज, 211001, 2019.

इकाई 4

क्रिया एवं उसके प्रकार

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- क्रिया के बारे में समझता है
- क्रिया के प्रकारों की जानकारी प्राप्त करता है
- क्रिया के विभिन्न उदाहरण समझता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

शब्द के दो भेदों में पहला भेद, यानि विकारी शब्द के अंतर्गत आनेवाली शब्द भेद है - क्रिया। क्रिया शब्द से ही हम उसकी परिकल्पना समझ सकते हैं। क्रिया, क्रिया को सूचित करता है। अर्थात् किसी कार्य के करने या होने के बारे में इसमें सूचित किया जाता है। क्रिया के विभिन्न रूप है। उन रूपों का इस अध्याय में अध्ययन किया जाता है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

क्रिया, धातु, सकर्मक क्रिया, अकर्मक क्रिया, द्विकर्मक क्रिया, नामधातु क्रिया

Discussion / चर्चा

5.4.1 क्रिया

जिस शब्द से किसी काम का करना या होना व्यक्त हो, उन्हें क्रिया कहते हैं।

जैसे- जाना, लिखना, तैरना, पढ़ना

क्रिया विकारी शब्द है। क्रिया के रूप लिंग, वचन, पुरुष आदि के अनुसार बदलते हैं। क्रियायें जिन मूल शब्दों से बनते हैं, उन्हें धातु कहते हैं। धातु के साथ 'न' जोड़कर क्रिया बनाती है।

जैसे- दौड़ + ना = दौड़ना

पढ़ + ना = पढ़ना

चढ़ + ना = चढ़ना

क्रिया के दो भेद हैं -

सकर्मक क्रिया और अकर्मक क्रिया

5.4.1.1 सकर्मक क्रिया

क्रिया के व्यापार का फल कर्ता पर न पड़कर कर्म पर पड़ते है तो उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं।

जैसे- राधा ने आम खाया।

रमेश हिन्दी सीखता है।

इन वाक्यों में खाना, सीखना आदि क्रियाओं का फल 'आम' और 'हिन्दी' पर पड़ता है। इसलिए ये

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

सकर्मक क्रियाएँ हैं।

5.4.1.2 अकर्मक क्रिया

क्रिया के व्यापार का फल कर्ता पर ही पड़ता है तो उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं। इन क्रियाओं में कर्म नहीं होता।

जैसे- राम पढ़ता है।

सीता गाती है।

राधा नाचती है।

क्रियाओं से क्या, किसे, किसको आदि प्रश्न करने पर उत्तर मिले तो क्रिया सकर्मक है और नहीं मिले तो अकर्मक।

जैसे- खाता है क्रिया से क्या खाता है पूछने से उत्तर मिलेगा - खाना खाता है या आम खाता है आदि। तो खाना सकर्मक क्रिया है। घबराना, लजाना, ललचाना आदि क्रियाएँ सकर्मक और अकर्मक दोनों रूपों में प्रयुक्त होते हैं।

5.4.1.3 द्विकर्मक क्रिया

जिन क्रियाओं में अर्थ की पूर्णता के लिए दो कर्मों की आवश्यकता पड़ती हैं, उन्हें द्विकर्मक क्रियाएँ कहती हैं।

जैसे- राधा ने बच्चे को खाना खिलाया।

इस वाक्य में दो कर्म हैं। बच्चे और खाना। द्विकर्मक क्रियाओं में मुख्य कर्म और गौण कर्म होते हैं।

क्रिया का फल जिस कर्म पर अधिक पड़ता है वह मुख्य कर्म है और जिस कर्म पर क्रिया का फल कम पड़ता है वह गौण कर्म। मुख्य कर्म क्रिया के अधिक निकट होता है।

जैसे- राम ने बच्चे को इनाम दिया। इस वाक्य में 'इनाम' मुख्य कर्म है और 'बच्चे को' गौण कर्म।

5.4.1.4 नामधातु क्रिया

क्रिया के अलावा अन्य शब्दों में प्रत्यय जोड़कर जब क्रिया बनाते हैं तो उसे नामधातु क्रिया कहते हैं।

जैसे- स्वीकार - स्वीकारना

शर्म - शर्माना

Critical Overview /अवलोकन

किसी कार्य का करने या होने का बोध करानेवाली शब्द को हम क्रिया कहेंगे। क्रिया के कई प्रकार है, जैसे- सकर्मक क्रिया, अकर्मक क्रिया, द्विकर्मक क्रिया और नामधातु क्रिया। यह विभाजन क्रिया का फल किसपर पड़ता है इसके आधार पर, क्रिया की अर्थ की पूर्णता के आधार पर और क्रिया पद के उद्भव के आधार पर किया गया है।

Recap / पुनरावृत्ति

- जिस शब्द से किसी काम का करना या होना व्यक्त हो, उन्हें क्रिया कहते हैं।
- क्रिया के दो भेद हैं - सकर्मक क्रिया और अकर्मक क्रिया
- क्रिया के व्यापार का फल कर्ता पर न पड़कर कर्म पर पड़ते है तो उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं।
- क्रिया के व्यापार का फल कर्ता पर ही पड़ता है तो उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं। इन क्रियाओं में कर्म नहीं होता।
- जिन क्रियाओं में अर्थ की पूर्णता के लिए दो कर्मों की आवश्यकता पड़ते हैं, उन्हें द्विकर्मक क्रियाएँ कहते हैं।
- क्रिया का फल जिस कर्म पर अधिक पड़ता है वह मुख्य कर्म है और जिस कर्म पर क्रिया का फल कम पड़ता है वह गौण कर्म। मुख्य कर्म क्रिया के अधिक निकट होता है।
- क्रिया के अलावा अन्य शब्दों में प्रत्यय जोड़कर जब क्रिया बनाते है तो उसे नामधातु क्रिया कहते हैं।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. क्रिया के कितने भेद हैं?
2. क्रिया कैसा शब्द है?
3. क्रिया के रूप किस के अनुसार बदलते हैं?
4. क्रियाएँ जिन मूल शब्दों से बनते हैं, उन्हें क्या कहते हैं?
5. क्रिया के व्यापार का फल कर्ता पर न पड़कर कर्म पर पड़ते है तो उसे क्या कहते हैं?
6. किन क्रियाओं में कर्म नहीं होता?
7. जिन क्रियाओं में अर्थ की पूर्णता के लिए दो कर्मों की आवश्यकता पड़ती हैं, उन्हें क्या कहती हैं?

Answers / उत्तर

1. दो
2. विकारी शब्द
3. लिंग, वचन, पुरुष
4. धातु
5. सकर्मक क्रिया
6. अकर्मक क्रिया
7. द्विकर्मक क्रियाएँ

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. क्रिया का विस्तार से परिचय दीजिए।
2. क्रिया के प्रकारों पर उदाहरण सहित प्रकाश डालिए।

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी व्याकरण - पं.कामताप्रसाद गुरु, लोकभारती प्रकाशन, महात्मागाँधी मार्ग, दरबारी बिल्डिंग, पहली मंज़िल, प्रयागराज, 211001, 2019.

SGOU

इकाई 5 काल एवं उसके विभिन्न रूप, वाच्य एवं उसके प्रयोग

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- काल के बारे में समझता है
- काल के विभिन्न भेदों को समझता है
- काल के उपभेदों को समझता है
- वाच्य के संबंध में जानकारी प्राप्त होती है
- वाच्य का प्रयोग समझता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

समय बहुत कीमती होता है। हर व्यक्ति को समान रूप से समय दिया गया है, चाहे वह अमीर हो या गरीब, अनपढ़ या पढे-लिखे, चाहे वह समाज के किसी भी स्तर में हो, हर व्यक्ति के पास समय समान रूप में विद्यमान रहता है।

इसलिए भी हमेशा हमारी बातों में समय का ज़िक्र होता है। लेकिन जाने अनजाने ही हमारे शब्द प्रयोगों के माध्यम से समय का बोध झलकने लगता है। उसका अध्ययन काल के अंतर्गत किया जाएगा।

Keywords / मुख्य बिन्दु

काल, वर्तमान काल, सामान्य वर्तमान काल, संदिग्ध वर्तमान काल, तात्कालिक वर्तमान काल/अपूर्ण वर्तमान काल, भूतकाल, सामान्य भूत काल, आसन्न भूत काल, पूर्ण भूतकाल, अपूर्ण भूतकाल, सन्दिग्ध भूत काल, हेतुहेतुमत भूतकाल, भविष्यत् काल, सामान्य भविष्यत् काल, संभाव्य भविष्यत् काल, वाच्य, कर्तृ वाच्य, कर्म वाच्य, भाव वाच्य

Discussion / चर्चा

5.5.1 काल

एक कार्य करने या होने के समय का ज्ञान, क्रिया के जिस रूप से होता है उसे काल कहते हैं। काल के तीन भेद हैं - वर्तमान काल, भूतकाल, भविष्यत् काल

1. **भूतकालः** कार्य की समाप्ति जिस क्रिया द्वारा होती है या जिस क्रिया से बीते हुए समय का बोध होता है, उसे भूतकाल कहते हैं। भूतकाल की लम्बी समयावधि का बोध कराने के लिए उसके कुछ विभाग किये गये हैं। वे हैं-

सामान्य भूत काल, आसन्न भूत काल, पूर्ण भूतकाल, अपूर्ण भूतकाल, सन्दिग्ध भूत काल और हेतुहेतुमत भूतकाल

1. सामान्य भूत काल

क्रिया के जिस रूप से भूतकाल के किसी विशेष समय का ज्ञान नहीं होता उसे सामान्य भूतकाल कहते हैं।

जैसे- राम गया।

राजू आया।

सीता गाया।

- अकारान्त धातु को आकारान्त करके सामान्य भूतकालिक क्रिया बना सकते हैं।

  जैसे- चढ़ - चढ़ा, पढ़ - पढ़ा, चल - चला
- आकारान्त या ओकारान्त धातु के अन्त में 'या' जोड़ने से सामान्य भूतकालिक क्रिया बना सकती हैं।

  जैसे- पा - पाया, सो - सोया, खो - खोया

2. आसन्न भूतकाल

क्रिया के जिस रूप से यह मालूम होता है कि क्रिया के व्यापार समाप्त होकर अधिक समय नहीं हुआ है, उसे आसन्न भूतकाल कहते हैं। सामान्य भूतकाल की क्रिया के साथ वर्तमान काल के चिह्न जोड़कर आसन्न भूतकाल बनाते हैं।

जैसे- अध्यापिका पढ़ाकर आई है।

तुम आए हो।

मैं ने फल खाया है।

3. पूर्ण भूतकाल

क्रिया के जिस रूप से इस बात का बोध होता है कि उसके व्यापार समाप्त होकर काफी समय बीत चुका है तो उसे पूर्ण भूतकाल कहते हैं। सामान्य भूतकाल की क्रिया के साथ लिंग और वचन के अनुसार था, थे, थी, थीं आदि जोड़कर पूर्ण भूतकाल बनाते हैं।

जैसे- उसने राजू को मारा था।

सीता ने उपन्यास लिखा था।

वह बाज़ार गया था।

4. अपूर्ण भूतकाल

क्रिया के जिस रूप से इस बात का पता चलता है कि क्रिया भूतकाल में हो रही थी, लेकिन उसका पता नही चला तो उसे अपूर्ण भूतकाल कहते हैं। अपूर्ण भूतकाल बनाने के लिए क्रिया धातु के साथ पुल्लिंग एकवचन है तो - ता था या रहा था, पुल्लिंग बहुवचन है तो- ते थे या रहे थे और स्त्रीलिंग एकवचन है तो - ती थी या रही थी, बहुवचन है तो - ती थीं या रही थीं जोड़ते हैं।

जैसे- सीता गीत गा रही थी।

रमेश सो रहा था।

5. संदिग्ध भूतकाल

क्रिया के जिस रूप से कार्य (व्यापार) भूतकाल में होने में संदेह प्रकट हो तो उसे संदिग्ध भूतकाल कहते हैं। संदिग्ध भूतकाल बनाने के लिए सामान्य भूतकाल की क्रिया के साथ लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार होगा, होगे, होगी, होंगा, होंगे, होंगी, हूँगा, हूँगी आदि जोड़ते हैं।

जैसे- रामू आया होगा।

तू गाया होगा।

6. हेतुहेतुमत भूतकाल

क्रिया के जिस रूप से इस बात का पता चले कि क्रिया भूतकाल में होने वाला था लेकिन किसी कारण से नहीं हो सके तो उसे हेतुहेतुमत भूतकाल कहते हैं। हेतुहेतुमत भूतकाल बनाने के लिए क्रिया धातु के साथ लिंग और वचन के अनुसार ता, ते, ती, तीं आदि जोड़ते हैं।

जैसे- अध्यापक कहते तो लड़के चुप रहते।

यदि रामू आते तो मैं जाता।

'ने' प्रत्यय का प्रयोग

सामान्य, आसन्न, संदिग्ध और पूर्ण भूतकालों में क्रिया सकर्मक होने पर कर्ता के साथ ने प्रत्यय का प्रयोग होता है।

जैसे- राम ने पुस्तक पढी। - सामान्य भूतकाल
राम ने पुस्तक पढी है। - आसन्न भूतकाल
राम ने पुस्तक पढी थी। - पूर्ण भूतकाल

राम ने पुस्तक पढी होगी। - संदिग्ध भूतकाल

कर्ता के साथ 'ने' जोड़ने पर क्रिया कर्म के लिंग,वचन के अनुसार बदलते हैं।

जैसे- राम ने पत्र लिखा।
राम ने दो फल खाये।
राम ने कपडा खरीदा।

सीता ने कपड़ा खरीदा।

जब वाक्य में कर्म के न रहने पर या कर्म के साथ 'को' विभक्ति जोड़ने पर क्रिया पुल्लिंग एकवचन में होता है।

जैसे- राम ने बच्चों को पढाया।

ला, लग, बोल, भूल, सक, चुक इन क्रियाओं के प्रयोग करते समय कर्ता के साथ 'ने' का प्रयोग नहीं होता।

जैसे- राम सभा में बोला।

राम पाठ भूल गया।

वर्तमान काल

क्रिया के जिस रूप से इस बात का बोध होता है कि क्रिया वर्तमान समय में संपन्न हो रहा है तो उसे वर्तमान काल कहते हैं। वर्तमान काल के तीन भेद हैं।

सामान्य वर्तमान काल, संदिग्ध वर्तमान काल और तात्कालिक वर्तमान काल या अपूर्ण वर्तमान काल

जैसे- रामू स्कूल जाता है।

अध्यापक विद्यार्थी को पढाता है।

1. सामान्य वर्तमान काल

क्रिया के जिस रूप से इस बात को जाना जाय कि क्रिया वर्तमान काल में हो रहा है तो उसे सामान्य वर्तमान काल कहलाता है। सामान्य वर्तमान काल बनाने के लिए क्रिया धातु के साथ ता है, ती है, ते है, ती हूँ, ता हूँ आदि जोड़ते हैं।

जैसे- सीता पुस्तक पढ़ती है।

गीता पौधों को पानी देती है।

2. संदिग्ध वर्तमान काल

क्रिया के जिस रूप से उसका वर्तमान काल में होने में संदेह पाया जाता है तो उसे संदिग्ध वर्तमान काल कहते हैं। संदिग्ध वर्तमान काल बनाने के लिए धातु के साथ पुरुष, लिंग और वचन के अनुसार ता होगा, ती होगी, ता हूँगा, ती हूँगी आदि जोड़ते हैं।

जैसे- गीता पढ़ती होगी।

लड़के पढ़ते होंगे।

3. अपूर्ण वर्तमान काल या तात्कालिक वर्तमान काल

क्रिया के जिस रूप से यह मालूम होता है कि क्रिया अब भी जारी है तो उसे अपूर्ण या तात्कालिक वर्तमान काल कहते हैं। अपूर्ण वर्तमान काल बनाने के लिए क्रिया धातु के साथ पुरुष, लिंग और वचन के अनुसार रहा है, रही है, रहे है, रहा हूँ, रही हूँ आदि जोड़ते हैं।

जैसे- लड़का पढ़ रहा है।

लड़कियाँ पढ़ रही हैं।

भविष्यत् काल

क्रिया के जिस रूप से यह बोध होता है कि क्रिया आने वाले समय में होगा तो उसे भविष्यत् काल की क्रिया कहते हैं।

जैसे- राजू नए विद्यालय में प्रवेश लेगा।

रीना दिल्ली जाएगी।

भविष्यत् काल के दो भेद हैं।

सामान्य भविष्यत् काल और संभाव्य भविष्यत् काल

1. सामान्य भविष्यत् काल

क्रिया के जिस रूप से उसके भविष्यत् में होने का बोध होता है तो उसे सामान्य भविष्यत् काल कहलाता है। सामान्य भविष्यत् काल बनाने के लिए धातु के साथ लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार ऊँगा, ऊँगी, एगा, एगी आदि जोड़ते हैं।

जैसे- मैं खाऊँगा

रामू आएगा

सीता खाएगी

लड़के खेलेंगे

2. संभाव्य भविष्यत् काल

क्रिया के जिस रूप से उसका भविष्य में होने की संभावना हो तो उसे संभाव्य भविष्यत् काल कहते हैं। सामान्य भविष्यत् काल के क्रियाओं के गा, गे, गी आदि को अलग कर देने पर संभाव्य भविष्यत् काल मिलते हैं।

जैसे- शायद आज वर्षा बंद हो जाए।

ईश्वर हमारी रक्षा करे।

5.5.2 वाच्य

क्रिया में जब परिवर्तन होते हैं, तब उस परिवर्तन द्वारा इस बात का बोध होता है कि वाक्य के अन्तर्गत कर्ता, कर्म, भाव इनमें से किस की प्रधानता होती है। उसे वाच्य कहते हैं। वाच्य तीन प्रकार के हैं।

कर्तृ वाच्य (Active Voice), कर्म वाच्य (Passive Voice), भाव वाच्य (Impersonal Voice)

कर्तृवाच्य

क्रिया द्वारा किये गये विधान का मुख्य विषय कर्ता है तो उसे कर्तृवाच्य कहते हैं।

जैसे- सीता पुस्तक पढ़ती है।

राम गीत गाता है।

कर्म वाच्य

क्रिया द्वारा किये गये विधान का मुख्य विषय कर्म है तो उसे कर्मवाच्य कहते हैं। इसमें क्रिया का संबंध कर्म से होता है।

जैसे- राजू से पुस्तक पढ़ी जाती है।

बच्चों द्वारा पानी पिया जाता है।

कर्म के साथ 'को' प्रत्यय जोड़ते समय क्रिया पुल्लिंग एकवचन और अन्य पुरुष में होती है।

भाववाच्य

इसमें भाव की प्रधानता होती है। अकर्मक क्रियाओं से ही भाववाच्य बनता है। क्रिया हमेशा पुल्लिंग एकवचन और अन्य पुरुष में होती है।

जैसे- लड़कों से चला नहीं जाता।

सीता से चुप नहीं रहा जाता।

वाच्य रूपांतरण

कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य बनाने की रीति

क्रिया कर्तृवाच्य में है तो उसे पहले सामान्य भूतकाल में लाता है। फिर उसके साथ काल, पुरुष, वचन और लिंग के अनुसार 'जाना' क्रिया का रूप जोडता है। तब सकर्मक कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य और अकर्मक कर्तृवाच्य से भाववाच्य बनती है।

सकर्मक

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
राजू ने पुस्तक पढी।	राजू से पुस्तक पढी गयी।
गीता फल खाती है।	गीता से फल खाया जाता है।

अकर्मक

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
सीता चुप नहीं रहती।	सीता से चुप नहीं रहा जाता।
मैं पढ़ नहीं सकती।	मुझसे पढा नहीं जाता।

Critical Overview /अवलोकन

क्रिया के जिस रूप से किसी कार्य का होने का समय या काल का बोध होता है, उसे हम काल कहेंगे। काल तीन प्रकार के होते हैं - वर्तमान काल, भूतकाल और भविष्यत् काल। वर्तमान काल का पुनः विभाजन हुआ है। यथा - सामान्य वर्तमान काल, संदिग्ध वर्तमान काल, तात्कालिक वर्तमान काल/अपूर्ण वर्तमान काल। इसी प्रकार भूतकाल का भी विभाजन हुआ है, यथा - सामान्य भूत काल, आसन्न भूत काल, पूर्ण भूतकाल, अपूर्ण भूतकाल, सन्दिग्ध भूत काल, हेतुहेतुमत भूतकाल। भविष्यत् काल का भी दो भेद हैं - सामान्य भविष्यत् काल, संभाव्य भविष्यत् काल।

इस अध्याय में हम वाच्य का भी अध्ययन करते हैं। वाक्य के अन्तर्गत कर्ता, कर्म, भाव की प्रधानता को सूचित करनेवाले रूप को हम वाच्य कहते हैं। वाच्य के तीन भेद है, यथा - कर्तृ वाच्य, कर्म वाच्य और भाव वाच्य।

Recap / पुनरावृत्ति

- एक कार्य करने या होने के समय का ज्ञान, क्रिया के जिस रूप से होता है उसे काल कहते हैं।
- काल के तीन भेद हैं। भूतकाल, वर्तमान काल और भविष्यत काल
- कार्य की समाप्ति जिस क्रिया द्वारा होती है या जिस क्रिया से बीते हुए समय का बोध होता है, उसे भूतकाल कहते हैं।
- क्रिया के जिस रूप से भूतकाल के किसी विशेष समय का ज्ञान नहीं होता उसे सामान्य भूतकाल कहते हैं।
- अकारान्त धातु को आकारान्त करके सामान्य भूतकालिक क्रिया बना सकते हैं।
- क्रिया के जिस रूप से यह मालूम होते है कि क्रिया के व्यापार समाप्त होकर अधिक समय नहीं हुआ है, उसे आसन्न भूतकाल कहते हैं।
- क्रिया के जिस रूप से इस बात का बोध होता है कि उसके व्यापार समाप्त होकर काफी समय बीत चुका है तो उसे पूर्ण भूतकाल कहते हैं।
- क्रिया के जिस रूप से इस बात का पता चलता है कि क्रिया भूतकाल में हो रही थी, लेकिन उसका पता नही चला तो उसे अपूर्ण भूतकाल कहते हैं।
- क्रिया के जिस रूप से कार्य (व्यापार) भूतकाल में होने में संदेह प्रकट हो तो उसे संदिग्ध भूतकाल कहते हैं।
- क्रिया के जिस रूप से इस बात का पता चले कि क्रिया भूतकाल में होने वाला था लेकिन किसी कारण से नहीं हो सका तो उसे हेतुहेतुमत भूतकाल कहते हैं।
- सामान्य, आसन्न, संदिग्ध और पूर्ण भूतकालों में क्रिया सकर्मक होने पर कर्ता के साथ 'ने' प्रत्यय का प्रयोग होता है।
- कर्ता के साथ 'ने' जोड़ने पर क्रिया कर्म के लिंग, वचन के अनुसार बदलते हैं।
- जब वाक्य में कर्म के न रहने पर या कर्म के साथ 'को' विभक्ति जोड़ने पर क्रिया पुल्लिंग एकवचन में होती है।
- क्रिया के जिस रूप से इस बात का बोध होता है कि क्रिया वर्तमान समय में संपन्न हो रही है तो उसे वर्तमान काल कहते हैं।
- वर्तमान काल के तीन भेद हैं। सामान्य वर्तमान काल, संदिग्ध वर्तमान काल और तात्कालिक

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

वर्तमान काल या अपूर्ण वर्तमान काल।

- क्रिया के जिस रूप से इस बात को जाना जाय कि क्रिया वर्तमान काल में हो रही है तो उसे सामान्य वर्तमान काल कहलाता है।
- क्रिया के जिस रूप से उसका वर्तमान काल में होने में संदेह पाया जाता है तो उसे संदिग्ध वर्तमान काल कहते हैं।
- क्रिया के जिस रूप से यह मालूम होती है कि क्रिया अब भी जारी है तो उसे अपूर्ण या तात्कालिक वर्तमान काल कहते हैं।
- क्रिया के जिस रूप से यह बोध होता है कि क्रिया आने वाले समय में होगा तो उसे भविष्यत काल की क्रिया कहते हैं।
- भविष्यत काल के दो भेद हैं। सामान्य भविष्यत काल और संभाव्य भविष्यत काल।
- क्रिया के जिस रूप से उसके भविष्य में होने का बोध हो तो उसे सामान्य भविष्यत काल कहलाता है।
- क्रिया के जिस रूप से उसका भविष्य में होने की संभावना हो तो उसे संभाव्य भविष्यत काल कहते हैं।
- क्रिया में जब परिवर्तन होते है, तब उस परिवर्तन द्वारा इस बात का बोध होता है कि वाक्य के अन्तर्गत कर्ता, कर्म, भाव इनमें से किस की प्रधानता होती है। उसे वाच्य कहते हैं।
- वाच्य तीन प्रकार के हैं। कर्तृ वाच्य (Active Voice), कर्म वाच्य (Passive Voice), भाव वाच्य (Impersonal Voice)
- क्रिया द्वारा किये गये विधान का मुख्य विषय कर्ता है तो उसे कर्तृवाच्य कहते हैं।
- क्रिया द्वारा किये गये विधान का मुख्य विषय कर्म है तो उसे कर्मवाच्य कहते हैं।
- भाववाच्य में भाव की प्रधानता होती है। अकर्मक क्रियाओं से ही भाववाच्य बनता है। क्रिया हमेशा पुल्लिंग एकवचन और अन्य पुरुष में होती है।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. काल के कितने भेद हैं?
2. काल के भेद कौन-कौन से हैं?
3. किस काल में क्रिया से बीते हुए समय का बोध होता है?
4. भूतकाल के कितने उपभेद हैं?
5. वर्तमान काल के कितने भेद होते हैं?
6. वर्तमान काल के भेद कौन-कौन से हैं?
7. भविष्यत् काल के कितने भेद हैं?
8. भविष्यत् काल के भेद कौन-कौन से हैं?
9. वाच्य के कितने प्रकार हैं?
10. वाच्य के प्रकार कौन-कौन से हैं?

Answers / उत्तर

1. तीन
2. वर्तमान काल, भूतकाल, भविष्यत काल
3. भूतकाल
4. छह
5. तीन
6. सामान्य, संदिग्ध और तात्कालिक या अपूर्ण
7. दो
8. सामान्य और संभाव्य
9. तीन
10. कर्तृ वाच्य, कर्म वाच्य, भाव वाच्य

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. काल का परिचय दीजिए।
2. भूतकाल एवं उसके भेदों पर चर्चा कीजिए।
3. वर्तमान काल का परिचय उदाहरण सहित दीजिए।
4. भविष्यत् काल का परिचय देते हुए उसके भेदों का उदाहरण सहित परिचय दीजिए।
5. वाच्य का परिचय दीजिए और उसके प्रकारों पर प्रकाश डालिए।

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी व्याकरण - पं. कामताप्रसाद गुरु, लोकभारती प्रकाशन, महात्मागाँधी मार्ग, दरबारी बिल्डिंग, पहली मंज़िल, प्रयागराज, 211001, 2019.

BLOCK 06

अविकारी शब्द और प्रयोग

SGOU

इकाई 1

अविकारी शब्द, क्रियाविशेषण एवं उसके प्रकार

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- अविकारी शब्द या अव्यय से अवगत होता है
- क्रियाविशेषण के प्रयोग से परिचय प्राप्त कर सकता है
- क्रियाविशेषण के प्रकारों के बारे में समझता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

हिन्दी भाषा बोलने के लिए विकारी और अविकारी शब्दों की जानकारी प्राप्त करना आवश्यक है। विकारी शब्द जैसे- संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया और अविकारी शब्द जैसे- क्रिया विशेषण, संबंध बोधक (संबंध सूचक), समुच्चयबोधक, विस्मयादिबोधक आदि पढ़ने से हिन्दी भाषा आसानी से समझ सकती है और प्रयोग कर सकते हैं।

Keywords / मुख्य बिन्दु

क्रिया विशेषण, संबंध बोधक, स्थानवाचक, कालवाचक, परिमाणवाचक, रीतिवाचक

Discussion / चर्चा

6.1.1 अविकारी शब्द या अव्यय

लिंग, वचन, पुरुष, कारक आदि के कारण जिस शब्द में कोई विकार उत्पन्न नहीं होता उसे अविकारी शब्द या अव्यय कहते हैं। अव्यय हर स्थिति में अपने मूल रूप में ही बने रहते हैं। जब, तब, इधर, उधर, आज, कल, परंतु, यहाँ, वहाँ, अभी, तभी, अपितु, चूँकि आदि इसके लिए उदाहरण हैं। अव्यय चार प्रकार के हैं। वे हैं - क्रिया विशेषण, संबंध बोधक (संबंध सूचक), समुच्चयबोधक, विस्मयादिबोधक।

6.1.2 क्रिया विशेषण

क्रिया की विशेषता जिस अव्यय से जानी जाती है उसे क्रिया विशेषण अव्यय कहते हैं।

जैसे- अभी, धीरे, बहुत, कम

राम धीरे धीरे चलता है।

गीता अच्छा गाती है।

क्रिया विशेषण के वर्गीकरण तीन प्रकार के हैं।

1. प्रयोग के आधार पर
2. रूप के आधार पर
3. अर्थ के आधार पर

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

6.1.2.1 प्रयोग के आधार पर क्रिया विशेषण

प्रयोग के आधार पर क्रिया विशेषण के तीन भेद हैं-

साधारण, संयोजक और अनुबद्ध।

साधारण क्रिया विशेषण: किसी वाक्य में स्वतंत्र रूप में प्रयुक्त क्रिया विशेषणों को साधारण क्रिया विशेषण कहते हैं।

जैसे- अब मैं क्या करूँ, रामू जल्दी आओ

संयोजक क्रिया विशेषण: किसी उपवाक्य से संबंध रखने वाले क्रिया विशेषणों को संयोजक क्रिया विशेषण कहते हैं।

जैसे- जहाँ अभी हिमालय स्थित है, वहाँ किसी ज़माने में सागर था।

अनुबद्ध क्रिया विशेषण: किसी भी शब्द भेद के साथ उसकी अवधारणा के लिए प्रयोग होने वाले क्रिया विशेषण अनुबद्ध क्रिया विशेषण कहलाते हैं।

जैसे- मैं उनको जानता तक नहीं हूँ, उसके आने भर की देरी है।

6.1.2.2. रूप के आधार पर क्रिया विशेषण

रूप के आधार पर क्रिया विशेषण तीन प्रकार हैं। मूल, यौगिक और स्थानीय।

मूल क्रिया विशेषण: मूल क्रिया विशेषण वे हैं जो दूसरे शब्दों के मेल से नहीं बनते।

जैसे- दूर, यकायक, नहीं, अचानक

यौगिक क्रिया विशेषण: किसी दूसरे शब्दों में प्रत्यय या शब्द जोड़ने से जो क्रिया विशेषण बनते हैं, वे यौगिक क्रिया विशेषण कहलाते हैं। यौगिक क्रिया विशेषण कई प्रकार से बनते हैं।

संज्ञा से: दिनभर, सबेरे, रात को, आगे

सर्वनाम से: यहाँ, वहाँ, यों, यहीं, वहीं, अब, तब, इसलिए

विशेषण से: भूल से, चुपके, इतने में, पहले

क्रिया धातु से: करते, चाहे, लिये, मानो, उठते हुए

स्थानीय क्रिया विशेषण: किसी रूपांतर के बिना क्रियाविशेषण के समान प्रयुक्त होने वाले अव्यय स्थानीय क्रियाविशेषण कहलाते हैं।

संज्ञा - तुम दौड़कर चलते हो।

सर्वनाम - वह लड़का काफी ताकतवर है।

विशेषण - लड़की कैसे भागी?

पूर्वकालिक कृदंत - लड़की उठकर भागी।

6.1.2.3 अर्थ के आधार पर क्रियाविशेषण

अर्थ के आधार पर क्रियाविशेषण के चार भेद हैं।

स्थानवाचक, कालवाचक, परिमाणवाचक, रीतिवाचक

1. **स्थानवाचक क्रियाविशेषण:** इस अव्यय के द्वारा स्थान का बोध होता है।

जैसे- राजू यहाँ नहीं आया।

जहाँ तुम रहते हो, वहाँ मैं भी रहूँगी।

इसके दो भेद हैं - दिशावाचक क्रियाविशेषण, स्थितिवाचक क्रियाविशेषण

i. **दिशावाचक क्रियाविशेषण:** इस अव्यय से दिशा का बोध उत्पन्न होता है।

जैसे- तुम इधर आओ।

सीता उधर गयी है।

ii. **स्थितिवाचक क्रियाविशेषण:** इस अव्यय से स्थिति का बोध होता है।

जैसे- सामने, बाहर-भीतर, ऊपर-नीचे

रामू बाहर जाओ।

2. **कालवाचक क्रियाविशेषण:** इस अव्यय के द्वारा समय का बोध होता है।

जैसे- राम कब आया, मुझे मालूम नहीं है।

इसमें कब अव्यय है।

इसके दो भेद हैं- समयवाचक, अवधिवाचक

i. **समयवाचकः** तुरन्त, सबेरे, आज, परसों, अब, कब, तब, पीछे, पहले

ii. **अवधिवाचकः** नित्य, लगातार, दिन भर, इतनी देर, कभी-कभी

3. परिमाणवाचक क्रियाविशेषणः इस क्रियाविशेषण से अनिश्चित संख्या या परिमाण का बोध होता है।

इसके भेद हैं-

i. **अधिकताबोधकः** सर्वथा, अति, बहुत, अत्यंत, खूब, भारी, बडा

ii. **न्यूनताबोधकः** थोडा, ड़ुक, प्रायः, ज़रा, लगभग

iii. **पर्याप्तिबोधकः** काफी, यथेष्ट, केवल, चाहे, ठीक, इति

iv. **तुलनावाचकः** जितना, उतना, कितना, अधिक, कम

v. **श्रेणीवाचकः** बारी बारी से, थोडा-थोडा, क्रम-क्रम से

4. रीतिवाचक क्रियाविशेषणः रीतिवाचक क्रियाविशेषण कई प्रकार के हैं। वर्गीकरण में कठिनाई होने के कारण रीतिवाचक क्रियाविशेषण कुछ अलग अर्थों में आते हैं। वे हैं -

प्रकार - जैसे-तैसे, धीरे, अचानक, स्वयं, स्वतः, हँसकर, फटाफट, उलटा, संदेह।

i. **निश्चयः** दर असल, सचमुच, निःस्संदेह, वस्तुतः, यथार्थ में

ii. **अनिश्चयः** कदाचित् , शायद, यथासंभव

iii. **स्वीकारः** जी, सच, ठीक

iv. **कारणः** क्यों, काहे को, इसलिए

v. **निषेधः** मत, नहीं, न

vi. **अवधारणः** मात्र, भर, सा, तक, ही

Recap / पुनरावृत्ति

- लिंग, वचन, पुरुष, कारक आदि के कारण जिस शब्द में कोई विकार उत्पन्न नहीं होता उसे अविकारी शब्द या अव्यय कहते हैं।
- क्रिया की विशेषता जिस अव्यय से जानी जाती है उसे क्रिया विशेषण अव्यय कहते हैं।
- विशेषण और क्रिया विशेषण की विशेषता प्रकट करने वाले शब्दों को भी क्रिया विशेषण ही कहते हैं।
- प्रयोग के आधार पर क्रिया विशेषण के तीन भेद हैं- साधारण, संयोजक और अनुबद्ध।
- रूप के आधार पर क्रिया विशेषण तीन प्रकार हैं। मूल, यौगिक और स्थानीय।
- मूल क्रिया विशेषण दूसरे शब्दों के मेल से नहीं बनते।
- बिना किसी रूपांतर के क्रियाविशेषण के समान प्रयुक्त अव्यय स्थानीय क्रियाविशेषण कहलाते हैं।
- स्थानवाचक अव्यय के द्वारा स्थान का बोध होता है।
- कालवाचक अव्यय के द्वारा समय का बोध होता है।
- परिमाणवाचक क्रिया विशेषण से अनिश्चित संख्या या परिमाण का बोध होता है।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. जिस अव्यय से स्थान का बोध होता है, वह कौन-सा क्रिया विशेषण कहलाता है?
2. 'अब', 'तब', 'कब' जैसे शब्द किस श्रेणी के क्रियाविशेषण हैं?
3. 'इतना', 'ऐसा' जैसे शब्द किसके उदाहरण हैं?
4. 'काफी', 'ठीक', 'केवल' किस प्रकार के परिमाणवाचक क्रियाविशेषण के उदाहरण हैं?
5. 'जहाँ', 'वहाँ' जैसे शब्द कौन-से क्रियाविशेषण के अंतर्गत आते हैं?
6. 'दरअसल', 'सचमुच', 'वस्तुतः' जैसे शब्द किस प्रकार के रीतिवाचक क्रियाविशेषण हैं?
7. 'फटाफट', 'स्वयं', 'अचानक' जैसे शब्द किस प्रकार के क्रियाविशेषण हैं?
8. 'नही', 'मत', 'न' जैसे शब्द किस प्रकार के रीतिवाचक क्रियाविशेषण के अंतर्गत आते हैं?

Answers / उत्तर

1. स्थानवाचक
2. कालवाचक
3. क्रियाविशेषण
4. पर्याप्तिबोधक
5. संयोजक क्रियाविशेषण
6. निश्चय सूचक
7. रीतिवाचक
8. निषेध सूचक

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. अव्यय क्या है? विभिन्न प्रकार के अव्यय लिखिए।
2. अविकारी शब्द किसे कहते हैं? उदाहरण सहित समझाइए।
3. अविकारी शब्दों के कितने प्रकार होते हैं? नाम लिखिए।
4. क्रियाविशेषण अव्यय क्या होता है? दो उदाहरण दीजिए।
5. क्रियाविशेषण और विशेषण में क्या अंतर है?

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी व्याकरण - पं. कामताप्रसाद गुरु, लोकभारती प्रकाशन, महात्मागाँधी मार्ग, दरबारी बिल्डिंग, पहली मंज़िल, प्रयागराज, 211001, 2019.

इकाई 2 संबन्धबोधक, समुच्चयबोधक, विस्मयादि बोधक

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- संबंध बोधक (संबंध सूचक) अव्यय के प्रयोग से परिचय प्राप्त कर सकता है
- समुच्चयबोधक अव्यय के प्रयोग से अच्छी तरह परिचित हो सकता है
- विस्मयादिबोधक अव्यय से संबंधित जानकारी प्राप्त कर सकता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

इस विषय को समझने से पहले यह आवश्यक है कि विद्यार्थी को वाक्य के भेद, शब्द-भेद, और विकारी व अविकारी शब्दों की मूल जानकारी हो। विशेष रूप से, संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया जैसे विकारी शब्दों तथा अविकारी शब्दों के महत्त्व को समझना आवश्यक है। साथ ही, यह भी समझना जरूरी है कि वाक्य में अव्यय शब्द रूप नहीं बदलते और ये वाक्य में सम्बंध, समय, स्थान, भावना आदि प्रकट करने का कार्य करते हैं। यदि यह मूलभूत ज्ञान स्पष्ट हो, तो संबंधबोधक, समुच्चयबोधक व विस्मयादिबोधक अव्ययों को समझना और प्रयोग करना सरल हो जाता है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

कारणवाचक व्यधिकरण, मूल संबंधबोधक, उद्देश्यवाचक व्यधिकरण, विस्मयादिबोधक

Discussion / चर्चा

6.2.1 संबंधबोधक अव्यय

संज्ञा या सर्वनाम के साथ रहकर वाक्य के दूसरे शब्दों के साथ उसका संबंध प्रकट करते हैं तो उसे संबंधबोधक अव्यय कहते हैं।

जैसे- घर के पास नदी है, रात भर जागना अच्छा नहीं होता।

इन वाक्यों में 'के पास', 'भर' आदि संबंधबोधक अव्यय है।

I. प्रयोग के अनुसार संबंधबोधक अव्यय दो प्रकार के हैं- संबद्ध, अनुबद्ध

संबद्धः विभक्तियों के आगे प्रयुक्त होने वाले संबंधबोधक अव्यय संबद्ध संबन्धबोधक अव्यय कहलाते हैं।

जैसे- रहीम के पास किताब है, इस के सिवा तुम क्या कर सकते हो।

के ऊपर, के नीचे, के भीतर, के पीछे आदि संबद्ध संबन्धबोधक अव्यय के लिए उदाहरण है।

अनुबद्धः संज्ञा के बाद बिना विभक्ति के प्रयुक्त होने वाले अव्यय अनुबद्ध सम्बन्धबोधक अव्यय कहलाते हैं।

जैसे- बच्चों समेत, सखियों सहित, कटोरे भर, किनारे तक

इनमें कारकीय विभक्ति (का, के, की, से, पर, में) नहीं जोडा है।

II.अर्थ के अनुसार संबंध बोधक अव्यय

1. **स्थानवाचकः** बाहर, भीतर, पास, आसपास, सामने, नीचे, बीच
2. **कालवाचकः** बाद, पहले, लगभग, पीछे, अनन्तर, उपरान्त
3. **दिशावाचकः** आसपास, लगभग, तरफ, प्रति
4. **साधनवाचकः** हाथ, कर जबानी, मारफत, सहारे
5. **हेतुवाचकः** हेतु, खातिर, कारण, वास्ते
6. **विषयवाचकः** बावत, नाम, भरोसे, मद्धे
7. **व्यतिरेकवाचकः** बिना, सिवा, अलावा, बगैर
8. **विनिमयवाचकः** जगह, बदले, पलटे
9. **सादृश्यवाचकः** अनुकूल, अनुसार, समान, तरह, ऐसा, अनुकूल, अनुरूप
10. **विरोधवाचकः** उलटे, विपरीत, खिलाफ
11. **सहचारवाचकः** साथ, सहित, अधीन, पूर्वक
12. **तुलनावाचकः** आगे, सामने, अपेक्षा

व्युत्पत्ति के अनुसार संबंधबोधक दो प्रकार के हैं- **मूल और यौगिक**

मूल संबंधबोधकः स्वतंत्र रूप से होनेवाले अव्यय मूल संबंधबोधक कहलाते हैं।

जैसे- के बिना, भर, की ओर

यौगिक संबंधबोधकः दूसरे शब्द भेदों के लिए जो संबंधबोधक बनते हैं, वे यौगिक संबंधबोधक कहलाते हैं।

जैसे -

संज्ञा सेः के बदले, अपेक्षा, वास्ते

विशेषण सेः ऐसा, योग्य, के जैसा, के समान

क्रिया सेः के मारे, के लिए, के जाने

क्रिया विशेषण सेः के भीतर, के पास, के बाहर

6.2.2 समुच्चयबोधक

शब्दों, वाक्यों अथवा वाक्य खंडों को मिलाने वाले अव्यय समुच्चयबोधक अव्यय कहलाते हैं।

जैसे- अथवा, तथा, क्योंकि, अर्थात्, और समुच्चयबोधक के दो भेद हैं। समानाधिकरण और व्यधिकरण।

I. समानाधिकरण

जो वाक्य अथवा वाक्य खंड़ समान स्थिति में हैं उन्हें जोड़नेवाले समुच्चयबोधक समानाधिकरण समुच्चयबोधक कहते हैं। इनके चार उपभेद हैं।

संयोजक, विभाजक, विरोधदर्शक, परिणामदर्शक

1. **संयोजकः** दो या दो से अधिक बातों को जिस समानाधिकरण समुच्चयबोधक द्वारा जोडे जाते हैं, उसे संयोजक समानाधिकरण समुच्चयबोधक कहते हैं।

जैसे- और, तथा, एवं, व

2. **विभाजकः** इस अव्यय द्वारा इस बात का बोध होता है कि दो बातों में से एक की स्वीकृति अथवा दूसरे का निषेध होता है।

जैसे- अथवा, क्या-क्या, या-वा

3. **विरोधदर्शकः** दो बातों के बीच विरोध इस अव्यय के माध्यम से प्रकट होता है।

जैसे- बल्कि, वरन्, लेकिन, मगर

4. **परिणामदर्शकः** इस अव्यय से यह प्रकट होता है कि आगे के वाक्य का अर्थ पिछले वाक्य के अर्थ का फल है।

जैसे- इसलिए, इस कारण, इस वास्ते, क्योंकि, लिहाजा

II. व्यधिकरण

जिन समुच्चयबोधक अव्ययों के योग से एक वाक्य में एक या अधिक वाक्य जोड़े जाते हैं तो उन्हें व्यधिकरण कहते हैं। व्यधिकरण के चार भेद हैं।

1. **कारणवाचक :** जिस अव्यय से यह प्रकट होता है कि एक वाक्य का कारण दूसरे वाक्य के अंतर्गत है तो उसे कारणवाचक व्यधिकरण कहते हैं।

जैसे- इसलिए, क्योंकि

2. **उद्देश्यवाचकः** जिस अव्यय द्वारा एक उपवाक्य का फल दूसरे उपवाक्य से पता चलते है तो उसे उद्देश्यवाचक व्यधिकरण कहते हैं।

   जैसे- जो, ताकि, इसलिए, जिससे कि

3. **संकेतवाचकः** एक उपवाक्य में कोई संकेत या शर्त किसी अव्यय द्वारा प्रकट होता है तो उसे उद्देश्यवाचक व्यधिकरण कहते हैं।

   जैसे- अगर वे आते तो मैं खुश हो जाती।

   अगर-तो, यद्यपि- तो भी इस के लिए उदाहरण है।

4. **स्वरूपवाचकः** जिन अव्ययों से एक उपवाक्य का स्वरूप दूसरे उपवाक्य द्वारा व्यक्त होता है तो वे स्वरूपवाचक व्यधिकरण कहलाते हैं।

   जैसे- अर्थात्, मानो, जैसे, कि, जो

6.2.3 विस्मयादिबोधक

कुछ अव्ययों का संबंध वाक्य के अन्य शब्दों के साथ नहीं रहता और उनसे केवल मन का भाव व्यक्त होता है तो उन्हें विस्मयादिबोधक अव्यय कहते हैं।

जैसे- वाह! कितना सुरीला आवाज़ है।

हैं! यह तुम क्या कहते हो

हाय! अब मैं क्या करूँ?

इन वाक्यों में वाह, हैं, हाय आदि विस्मयादिबोधक अव्ययों के लिए उदाहरण हैं। तरह तरह के मनोविकारों को सूचित करने के लिए इस प्रकार के कई रूपों का प्रयोग होते हैं। विस्मयादिबोधक के भेद निम्नलिखित हैं-

1. **हर्षबोधकः** वाह वाह!, धन्य, शाबाश
2. **शोकबोधकः** बाप रे, हाय हाय, ऊह
3. **आश्चर्यबोधकः** ओहो, वाह-वा,
4. **अनुमोदनबोधकः** वाह, शबाश, अच्छा
5. **तिरस्कारबोधकः** हट, अरे, दूर, चुप
6. **स्वीकारबोधकः** बहुत अच्छा, ठीक
7. **संबोधनसूचकः** अजी, अहो, अरे

Recap / पुनरावृत्ति

- संज्ञा या सर्वनाम के साथ रहकर वाक्य के दूसरे शब्दों के साथ उसका संबंध प्रकट करते हैं तो उसे संबंधबोधक अव्यय कहते हैं।
- संज्ञा के बाद बिना विभक्ति के प्रयुक्त होने वाले अव्यय अनुबद्ध सम्बन्धबोधक अव्यय कहलाते हैं।
- व्युत्पत्ति के अनुसार संबंधबोधक दो प्रकार के हैं- मूल और यौगिक
- स्वतंत्र रूप से होनेवाले अव्यय मूल संबंधबोधक कहलाते हैं।
- शब्दों, वाक्यों अथवा वाक्य खंडों को मिलाने वाले अव्यय समुच्चयबोधक अव्यय कहलाते हैं।
- दो या दो से अधिक बातों को जिस समानाधिकरण समुच्चयबोधक द्वारा जोडे जाते हैं, उसे संयोजक समानाधिकरण समुच्चयबोधक कहते हैं।
- विभाजक अव्यय द्वारा इस बात का बोध होता है कि दो बातों में से एक की स्वीकृति अथवा दूसरे का निषेध होता है।
- जिस अव्यय से यह प्रकट होता है कि एक वाक्य का कारण दूसरे वाक्य के अंतर्गत है उसे कारणवाचक व्यधिकरण कहते हैं।
- जिस अव्यय के द्वारा एक उपवाक्य का फल दूसरे उपवाक्य से पता चलते है तो उसे उद्देश्यवाचक व्यधिकरण कहते हैं।
- कुछ अव्ययों का संबंध वाक्य के अन्य शब्दों के साथ नहीं रहता और उनसे केवल मन का भाव व्यक्त होता है तो उन्हें विस्मयादिबोधक अव्यय कहते हैं।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. ‘के पास’, ‘भर’, ‘के पीछे’ किस प्रकार के अव्यय हैं?
2. ‘बच्चों समेत’, ‘सखियों सहित’ जैसे शब्द किस प्रकार के संबंधबोधक अव्यय हैं?
3. ‘तथा’, ‘और’, ‘एवं’ कौन-सा समुच्चयबोधक अव्यय है?
4. ‘इसलिए’, ‘क्योंकि’, ‘इस कारण’ किस प्रकार के समुच्चयबोधक अव्यय हैं?
5. ‘ओह!’, ‘हाय!’, ‘वाह!’ किस प्रकार के अव्यय हैं?
6. ‘बगैर’, ‘बिना’, ‘अलावा’ ये किस प्रकार के संबंधबोधक अव्यय हैं?
7. ‘अगर-तो ’, ‘यद्यपि-तो’ इन अव्ययों का प्रयोग किस प्रकार के व्यधिकरण में होता है?
8. ‘धन्य’, ‘शबाश’, ‘अच्छा’ ये कौन-से विस्मयादिबोधक अव्ययों का प्रकार है?

Answers / उत्तर

1. संबंधबोधक अव्यय
2. अनुबद्ध
3. संयोजक
4. परिणामदर्शक
5. विस्मयादिबोधक
6. व्यतिरेकवाचक
7. संकेतवाचक
8. हर्षबोधक

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. अविकारी शब्द क्या है? सोदाहरण व्यक्त कीजिए।
2. क्रिया विशेषण किसे कहते हैं? सोदाहरण समझाइए।
3. स्थानवाचक अव्यय क्या है? इसके कितने भेद हैं? व्यक्त कीजिए।
4. व्युत्पत्ति के अनुसार संबंधबोधक के कितने प्रकार हैं?
5. समुच्चयबोधक अव्यय क्या है? इसके कितने भेद है? उदाहरण दीजिए?
6. विस्मयादिबोधक अव्यय क्या है? इस के कितने भेद हैं? विस्तार से लिखिए।

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी व्याकरण - पं. कामताप्रसाद गुरु, लोकभारती प्रकाशन, महात्मागाँधी मार्ग, दरबारी बिल्डिंग, पहली मंज़िल, प्रयागराज, 211001, 2019.

MODEL QUESTION PAPER SETS

SGOU

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

QP CODE: ………

Reg. No : ....
Name : ……..............

Model Question Paper- Set-I

SIXTH SEMESTER BA HINDI LANGUAGE AND LITERATURE EXAMINATION

Discipline Core Course

B21HD06DC- हिन्दी भाषा का इतिहास और व्याकरण

(CBCS - UG)

2022-23 - Admission Onwards

Maximum Time: 3 Hours   Maximum Mark: 70

SECTION A

किन्हीं दस प्रश्नों के उत्तर लिखिए। एक शब्द या वाक्य में उत्तर लिखिए। (1X10 = 10 Marks)

1. पश्चिमी हिन्दी का विकास किस अपभ्रंश से माना जाता है?
2. द्राविड़ भाषाएँ किस भाषा-परिवार की भाषाएँ हैं?
3. 'प्रेम सागर' किसकी रचना है?
4. उर्दू किस लिपि में लिखी जाती है?
5. राष्ट्रभाषा के लिए प्रयुक्त अंग्रेज़ी शब्द क्या है?
6. अपभ्रंश को 'पुरानी हिन्दी' की संज्ञा किसने दी थी?
7. उत्पत्ति के आधार पर शब्दों के कितने भेद होते हैं?
8. वर्णों के समूह को क्या कहते हैं?
9. अनुनासिक स्वर का एक उदाहरण लिखिए।
10. 'सप्तर्षि' शब्द में कौन-सा समास है?
11. संधि के कितने प्रकार होते हैं?
12. करण कारक में कौन-सी विभक्ति का प्रयोग होता है?
13. विकारी शब्दों के कितने भेद होते हैं?
14. निषेध सूचक अव्यय का एक उदाहरण दीजिए।
15. संज्ञा के बाद बिना विभक्ति के प्रयुक्त होनेवाले अव्यय को क्या कहते हैं?

SECTION - B

किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर लिखिए। दो या दो से अधिक वाक्यों में उत्तर लिखिए। (2X5 = 10 Marks)

16. आधुनिक काल में खड़ी बोली की प्रतिष्ठा में योगदान देने वाले प्रमुख दो संस्थानों के नाम लिखिए।
17. भारोपीय भाषा-परिवार को कितने वर्गों में विभाजित किया गया है?
18. तत्सम शब्द से क्या तात्पर्य है?

19. 'हिन्दी भाषा का इतिहास' नामक ग्रंथ किसकी रचना है?
20. राजभाषा से आप क्या समझते हैं?
21. अविकारी शब्द से क्या तात्पर्य है?
22. संधि क्या होती है?
23. बहुव्रीहि समास के दो उदाहरण लिखिए।
24. जातिवाचक संज्ञा किसे कहते हैं?
25. मूल क्रिया विशेषण से तात्पर्य क्या है?

SECTION - C

किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर लिखिए। दो या दो से अधिक वाक्यों में उत्तर लिखिए। (5X6 = 30 Marks)

26. संसार की भाषाओं के वर्गीकरण पर टिप्पणी लिखिए।
27. हिन्दी के विभिन्न रूपों का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
28. 'हिन्दी' शब्द की उत्पत्ति पर टिप्पणी कीजिए।
29. शब्दों का वर्गीकरण संक्षेप में लिखिए।
30. स्वरों का वर्गीकरण संक्षेप में लिखिए।
31. संधि के प्रकारों के नाम लिखिए।
32. समास और संधि में क्या अंतर होता है? स्पष्ट कीजिए।
33. सर्वनाम का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
34. संज्ञा का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
35. संबंध बोधक अव्यय से आप क्या समझते हैं?
36. प्रयोग के आधार पर क्रिया विशेषण के कितने भेद होते हैं?
37. 'काल' को संक्षेप में समझाइए।

SECTION - D

किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए। 200 शब्दों के अन्दर उत्तर लिखिए। (10X2 = 20 Marks)

38. आकृतिमूलक वर्गीकरण से आप क्या समझते हैं? स्पष्ट कीजिए।
39. हिन्दी भाषा के विविध रूपों और बोलियों पर टिप्पणी लिखिए।
40. व्यंजनों के प्रकारों पर संक्षिप्त आलेख प्रस्तुत कीजिए।
41. समास क्या होता है? इसके भेदों को स्पष्ट कीजिए।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

QP CODE: ……… Reg. No : ....
Name : ……..............

Model Question Paper- Set-II

SIXTH SEMESTER BA HINDI LANGUAGE AND LITERATURE EXAMINATION

Discipline Core Course

M21HD06DC- हिन्दी भाषा का इतिहास और व्याकरण

(CBCS - UG)

2022-23 - Admission Onwards

Maximum Time: 3 Hours Maximum Mark: 70

SECTION A

किन्हीं दस प्रश्नों के उत्तर लिखिए। एक शब्द या वाक्य में उत्तर लिखिए। (1X10 = 10 Marks)

1. भारत यूरोपीय परिवार का अन्य नाम लिखिए।
2. सरस्वती पत्रिका का प्रकाशन कब हुआ?
3. ध्वन्यात्मक शब्दों द्वारा प्रकट करना ही भाषा है। यह कथन किसका है?
4. पूर्वी हिन्दी के अन्तर्गत कितनी बालियाँ हैं?
5. अग्र स्वर का उदाहरण लिखिए।
6. ध्वनियों का लिखित रूप क्या कहलाते हैं?
7. एक ही अर्थ प्रकट करनेवाले शब्द को क्या कहते हैं ?
8. जिस समास में कोई भी पद प्रधान नहीं है, उसमें कौनसा समास है?
9. दुष्कर शब्द में कौन-सी सन्धि है?
10. दीर्घ सन्धी क्या है?
11. वाच्य के कितने प्रकार है?
12. क्रिया के रूप किसके अनुसार बदलते हैं?
13. विशेषण के कितने भेद हैं?
14. प्रयोग के आधार पर क्रिया विशेषण के कितने भेद हैं?
15. स्वतंत्र रूप से होने वाले अव्यय को क्या कहते है?

SECTION B

किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर लिखिए। दो या दो से अधिक वाक्यों में उत्तर लिखिए। (2X5 = 10 Marks)

16. आधुनिक हिन्दी की उपभाषाएँ कौन-कौन सी हैं?
17. द्रविड़ भाषा-परिवार को कितने वर्गों में विभाजित किया गया है?

18. मानक भाषा से क्या तात्पर्य है?
19. घोष स्वर किसे कहते हैं?
20. 'रूढ' शब्द से क्या तात्पर्य है?
21. समास से क्या अभिप्राय है?
22. कारक के कितने प्रकार होते हैं?
23. भूतकाल के कितने उपभेद होते हैं?
24. संबोधन सूचक शब्द का उदाहरण लिखिए?
25. अर्थ के आधार पर संबंध बोधक अव्ययों के उदाहरण दीजिए।

SECTION C

किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर लिखिए। दो या दो से अधिक वाक्यों में उत्तर लिखिए। (5X6 = 30 Marks)

26. चीनी भाषा-परिवार क्या है? इसका संक्षिप्त परिचय दीजिए।
27. देवनागरी लिपि क्या है? इसका महत्व स्पष्ट कीजिए।
28. पूर्वी हिन्दी किसे कहा जाता है? इसके अंतर्गत कौन-कौन सी बोलियाँ आती हैं?
29. स्वर से क्या तात्पर्य है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।
30. अर्थ के आधार पर वाक्यों का वर्गीकरण कीजिए।
31. समास क्या होता है? इसके प्रकारों का वर्णन कीजिए।
32. संधि पर टिप्पणी लिखिए एवं उसके प्रमुख भेद बताइए।
33. कारक किसे कहते हैं? इसके प्रकारों को उदाहरण सहित समझाइए।
34. सर्वनाम क्या है? इसके भेदों को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।
35. क्रिया विशेषण से क्या तात्पर्य है? उदाहरण सहित समझाइए।
36. अव्यय क्या होते हैं? इनके प्रकारों एवं विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।
37. आकृतिमूलक वर्गीकरण का संक्षिप्त विवरण दीजिए।

SECTION D

किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए। 200 शब्दों के अन्दर उत्तर लिखिए। (10X2 = 20 Marks)

38. वर्ण, ध्वनि और अक्षर की परिभाषा स्पष्ट कीजिए।
39. समास की परिभाषा दीजिए तथा उसके भेदों पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
40. 'काल' क्या है? इसके भेदों पर टिप्पणी कीजिए।
41. अविकारी शब्द किसे कहते हैं? इसके भेदों का परिचय दीजिए।

SGOU

NO TO DRUGS

തിരിച്ചിറങ്ങാൻ പ്രയാസമാണ്

SGOU

NO TO DRUGS

ആരോഗ്യ കുടുംബക്ഷേമ വകുപ്പ്, കേരള സർക്കാർ

സർവ്വകലാശാലാഗീതം

വിദ്യയാൽ സ്വതന്ത്രരാകണം
വിശ്വപൗരരായി മാറണം
ഗ്രഹപ്രസാദമായ് വിളങ്ങണം
ഗുരുപ്രകാശമേ നയിക്കണേ

കൂരിരുട്ടിൽ നിന്നു ഞങ്ങളെ
സൂര്യവീഥിയിൽ തെളിക്കണം
സ്നേഹദീപ്തിയായ് വിളങ്ങണം
നീതിവൈജയന്തി പാറണം

ശാസ്ത്രവ്യാപ്തിയെന്നുമേകണം
ജാതിഭേദമാകെ മാറണം
ബോധരശ്മിയിൽ തിളങ്ങുവാൻ
ജ്ഞാനകേന്ദ്രമേ ജ്വലിക്കണേ

കുരീപ്പുഴ ശ്രീകുമാർ

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Regional Centres

Kozhikode
Govt. Arts and Science College
Meenchantha, Kozhikode,
Kerala, Pin: 673002
Ph: 04952920228
email: rckdirector@sgou.ac.in

Thalassery
Govt. Brennen College
Dharmadam, Thalassery,
Kannur, Pin: 670106
Ph: 04902990494
email: rctdirector@sgou.ac.in

Tripunithura
Govt. College
Tripunithura, Ernakulam,
Kerala, Pin: 682301
Ph: 04842927436
email: rcedirector@sgou.ac.in

Pattambi
Sree Neelakanta Govt. Sanskrit College
Pattambi, Palakkad,
Kerala, Pin: 679303
Ph: 04662912009
email: rcpdirector@sgou.ac.in

हिन्दी भाषा का इतिहास और व्याकरण

COURSE CODE: B21HD06DC

SGOU

ISBN 978-81-986822-1-5

YouTube

Sreenarayanaguru Open University
Kollam, Kerala Pin- 691601, email: info@sgou.ac.in, www.sgou.ac.in Ph: +91 474 2966841